केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Kendriya Vidyalaya Sangathan

हिन्दी -अ (कोड सं. ००२)

Hindi -A (Code No. 002)

कक्षा/Class: X

2024-25

विद्‌यार्थी अध्ययन सामग्री

Student Support Material

संदेश

विद्यालयी शिक्षा में शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन की सर्वोच्च वरीयता है। हमारे विद्यार्थी, शिक्षक एवं शैक्षिक नेतृत्वकर्ता निरंतर उन्नति हेतु प्रयासरत रहते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में 2020 आधारित अधिगम एवं मूल्यांकन संबन्धित उद्देश्यों को प्राप्त करना तथा सीबीएसई के दिशा निर्देशों का योग्यता पालन, वर्तमान में इस प्रयास को और भी चुनौतीपूर्ण बनाता है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पांचों **आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान** द्वारा संकलित यह 'विद्यार्थी सहायक सामाग्री' इसी दिशा में एक आवश्यक कदम है । यह सहायक सामग्री कक्षा के विद्यार्थियों के लिए 12 से 9 सभी महत्वपूर्ण विषयों पर तैयार क ी गयी है । केन्द्रीय विद्यालय संगठन की 'विद्यार्थी सहायक सामग्री' अपनी गुणवत्ता एवं परीक्षा संबंधी सामाग्रीषज्ञता के लिए जानी जाती है और अन्य शिक्षण संस्थान भी संकलन की विशे- आशा एवं विश्वास है-इसका उपयोग परीक्षा संबंधी पठन सामग्री की तरह करते रहे हैं । शुभ कि यह सहायक सामग्री विद्यार्थियों की सहयोगी बनकर सतत मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सफलता के लक्ष्य तक पहुंचाएगी ।

शुभाकांक्षा सहित ।

निधि पांडे

आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

प्रभारी एवं संयोजक: श्री राकेश कुमार धर दूबे, प्राचार्य
पी.एम.श्री. के. वि. रानीखेत (देहरादून संभाग)

पुनरीक्षण: शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़
श्रीमती मीनाक्षी, टी.जी.टी. (हिंदी), के.वि. सेक्टर-29 ओ.सी.एफ. चंडीगढ़ (चंडीगढ़ संभाग)

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	पाठ्यक्रम विनिर्देशन	4-6
2.	अपठित गद्यांश और पद्यांश	7-12
3.	रचना के आधार पर वाक्य भेद, वाच्य	13-21
4.	पद-परिचय एवं अलंकार	22-28
5.	लेखन-भाग (पत्र, अनुच्छेद, संदेश, विज्ञापन)	29-41
6.	सूरदास के पद	42-47
7.	राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद - तुलसीदास	48-52
8.	आत्मकथ्य	53-56
9.	उत्साह तथा अट नहीं रही है	57-61
10.	यह दन्तुरित मुस्कान, फसल	62-65
11.	संगतकार	66-69
12.	नेताजी का चश्मा	70-74
13.	बालगोबिन भगत	75-86
14.	लखनवी अंदाज	87-89
15.	एक कहानी यह भी	90-93
16.	नौबतखाने में इबादत	94-99
17.	संस्कृति	100-103
18.	माता का अंचल	104-106
19.	साना-साना हाथ जोड़ि	107-110
20.	मैं क्यों लिखता हूँ	111-117
21.	वर्ष 2024 का बोर्ड-परीक्षा प्रश्न-पत्र आदर्श उत्तर सहित	118-135
22.	आदर्श प्रश्न-पत्र-1, उत्तर-कुंजी सहित	136-145
23.	आदर्श प्रश्न-पत्र-2, उत्तर-कुंजी सहित	146-153

3	खंड – ग (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)		

		संदेश लेखन लगभग 40 शब्दों में (शुभकामना, पर्व-त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर		

अपठित गद्यांश और अपठित पद्यांश

अपठित गद्यांश 1 (7)

शिक्षा के क्षेत्र में पुनर्विचार की आवश्यकता इतनी गहन है कि अब तक बजट, कक्षा, आकार, शिक्षक-वेतन और पाठ्यक्रम आदि के परंपरागत मतभेद आदि प्रश्नों से इतनी दूर निकल गई है कि इसको यहाँ पर विवेचित नहीं किया जा सकता। द्वितीय तरंग दूरदर्शन तंत्र की तरह (अथवा उदाहरण के लिए धूम्र भंडार उद्योग) हमारी जनशिक्षा प्रणालियाँ बड़े पैमाने पर प्रायः लुप्त हैं। बिलकुल मीडिया की तरह शिक्षा में भी कार्यक्रम विविधता के व्यापक विस्तार और नये मार्गों की बहुतायत की आवश्यकता है।

केवल आर्थिक रूप से उत्पादक भूमिकाओं के लिए ही निम्न विकल्प पद्धति की जगह उच्च विकल्प पद्धति को अपनाना होगा यदि नई थर्ड वेव सोसायटी में शिष्ट जीवन के लिए विद्यालयों में लोग तैयार किए जाते हैं। शिक्षा और नई संचार प्रणाली के छह सिद्धांतों-पारस्परिक क्रियाशीलता, गतिशीलता, परिवर्तनीयता, संयोजकता, सर्वव्यापकता और सार्वभौमिकरण के बीच बहुत ही कम संबंध खोजे गए हैं।

अब भी भविष्य की शिक्षा पद्धति और भविष्य की संचार प्रणाली के बीच संबंध की उपेक्षा करना उन शिक्षार्थियों को धोखा देना है जिनका निर्माण दोनों से होना है। सार्थक रूप से शिक्षा की प्राथमिकता अब मात्र माता-पिता, शिक्षकों एवं मुट्ठी भर शिक्षा सुधारकों के लिए ही नहीं है, बल्कि व्यापार के उस आधुनिक क्षेत्र के लिए भी प्राथमिकता में है जब से वहाँ सार्वभौम प्रतियोगिता और शिक्षा के बीच संबंध को स्वीकारने वाले नेताओं की संख्या बढ़ रही है। दूसरी प्राथमिकता कंप्यूटर वृद्धि, सूचना तकनीक और विकसित मीडिया के त्वरित सार्वभौमिकरण की है।

कोई भी राष्ट्र 21वीं सदी के इलेक्ट्रॉनिक आधारिक संरचना, एंब्रेसिंग कंप्यूटर्स, डाटा संचार और अन्य नवीन मीडिया के बिना 21वीं सदी की अर्थव्यवस्था का संचालन नहीं कर सकता। इसके लिए ऐसी जनसंख्या की आवश्यकता है जो इस सूचनात्मक आधारिक संरचना से परिचित हो, ठीक उसी प्रकार जैसे कि समय के परिवहन तंत्र और कारों, सड़कों, राजमार्गों, रेलों से सुपरिचित है।

वस्तुतः सभी के टेलीकॉम इंजीनियर अथवा कंप्यूटर विशेषज्ञ बनने की ज़रूरत नहीं है, जैसा कि सभी के कार मैकेनिक होने की आवश्यकता नहीं है, परंतु संचार प्रणाली का ज्ञान कंप्यूटर, फैक्स और विकसित दूर संचार को सम्मिलित करते हुए उसी प्रकार आसान और मुफ्त होना चाहिए जैसा कि आज परिवहन प्रणाली के साथ है। अत: विकसित अर्थव्यवस्था चाहने वाले लोगों का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए कि सर्वव्यापकता के नियम की क्रियाशीलता को बढ़ाया जाए-वह है, यह निश्चित करना कि गरीब अथवा अमीर सभी नागरिकों को मीडिया की व्यापक संभावित पहुँच से अवश्य परिचित कराया जाए।

अंततः यदि नई अर्थव्यवस्था का मूल ज्ञान है तब सतही बातों की अपेक्षा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का लोकतांत्रिक आदर्श सर्वोपरि राजनीतिक प्राथमिकता बन जाता है।

प्रश्न.1 इस गद्यांश का मूल विषय क्या है? (1)

(क) शिक्षा (ख) व्यापार (ग) अर्थव्यवस्था (घ) आधुनिक शिक्षा

प्रश्न.2 सर्वव्यापकता का अर्थ बताइए। (1)

(क) शिक्षित वर्ग (ख) मुलभूत शिक्षा (ग) सभी के लिए शिक्षा (घ) कोई भी नहीं

प्रश्न.3 शिक्षा की प्राथमिकता किन-किन के लिए है? (1)

(क) माता-पिता (ख) शिक्षकों (ग) शिक्षा सुधारकों (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न.4 आज कैसी संचार प्रणाली का ज्ञान होना चाहिए। (2)

प्रश्न.5 लेखक का मुख्य उद्देश्य क्या है? गद्यांश के आधार पर स्पष्ट करें | (2)

अपठित गद्यांश 2 (7)

मानव सभ्यता पर औद्योगिक क्रांति की धमक अभी थमी भी नहीं कि एक नई तकनीकी क्रांति ने अपने आने की घोषणा कर दी है। 'नैनो-तकनीक' के समर्थक दावा करते हैं कि जब यह अपने पूरे वजूद से आएगी तो धरती का नामोनिशान मिट जाएगा और नैनो रोबोट की स्वनिर्मित फौज पूरी तरह क्षत-विक्षत शव को पलक झपकते ही चुस्त-दुरुस्त इंसान में तबदील कर देगी |

दूसरी ओर नैनो-तकनीक की असीमित शक्ति से आशंकित इसके विरोधी इसे मिस्र के पिरामिडों में सोई ममियों से भी अधिक अभिशप्त समझते हैं। इन दोनों अतिवादी धारणाओं के बीच इतना अवश्य कहा जा सकता है कि हम तकनीकी क्रांति के एक सर्वथा नए मुहाने पर आ पहुँचे हैं, जिसके बाद उद्योग, चिकित्सा, दूरसंचार, परिवहन सहित हमारे जीवन में शामिल तमाम तकनीकी जटिलताएँ अपने पुराने अर्थ खो देंगी। इस अभूतपूर्व तकनीकी बदलाव के सामाजिक-सांस्कृतिक निहितार्थ क्या होंगे, यह देखना सचमुच दिलचस्प होगा। आदमी ने कभी सभ्यता की बुनियाद पत्थर के बेडौल हथियारों से डाली थी, अनगढ़ शिलाओं को छीलकर उन्हें कुल्हाड़ों और भालों की शक्ल में ढाला और इस उपलब्धि ने उत्पादकता की दृष्टि से उसे दूसरे जंतुओं की तुलना में लाभ की स्थिति में ला खड़ा किया। औज़ारों को बेहतर बनाने का यह सिलसिला आगे कई विस्मयकारी मसलों से गुज़रा और औद्योगिक क्रांति ने तो मनुष्य को मानो प्रकृति के नियंत्रक की भूमिका सौंप दी। तकनीकी कौशल की हतप्रभ कर देने वाली इस यात्रा में एक बात ऐसी है, जो पाषाण युग के बेढब हथियारों से लेकर चमत्कारी माइक्रोचिप निर्माण तक एक जैसी बनी रही। हम अपने औजार,

कच्चे माल को तराशकर बनाते हैं। यह सर्वविदित तथ्य है कि सारे पदार्थ परमाणुओं से मिलकर बने हैं, लेकिन पदार्थों के गुण इस बात पर निर्भर करते हैं कि उनमें परमाणुओं को किस तरह सजाया गया है। कार्बन के परमाणुओं की एक खास बनावट से कोयला तैयार होता है, तो दूसरी खास बनावट उन्हें हीरे का रूप दे देती है। परमाणु और अणुओं को इकाई मानकर मनचाहा उत्पाद तैयार करना ही 'नैनो-तकनीक' का सार है।

प्रश्न.1 नैनो तकनीक तकनीकी जटिलताओं को बिल्कुल समाप्त कर देगी, क्योंकि कथन पढ़कर नीचे दिए सही विकल्प का चयन कीजिए- (1)

1. इससे प्रकृति को कोई हानि नहीं होती है। 2. इससे प्रकृति को हानि होती है।

3. इससे तकनीकी कुशलता में अत्यंत वृद्धि होगी। 4 यह स्वनिर्मित फौज एकत्रित करती है।

कूट

(i) केवल 1 सही है

(ii) 1 और 2 सही है

(iii) 2 और 3 सही है

(iv) 3 और 4 सही हैं

प्रश्न.2 नैनो तकनीक के विरोधी द्वारा इसे मिस्र के पिरामिडों में सोई ममियों से भी अधिक अभिशप्त क्यों माना गया? (1)

(i). यह तकनीक संपूर्ण मानव जाति के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है

(ii). यह तकनीक विकास के नए प्रतिमान स्थापित करेगी

(iii). यह तकनीक कौशल को बढ़ाने के बजाय घटा देगी

(iv) .यह तकनीक नए युग में चार चाँद लगा देगी

प्रश्न.3 कथन और कारण पर आधारित प्रश्न का उत्तर दीजिए - (1)

कथन (A) नैनो तकनीक मनुष्य की सोच की सीमा बढ़ा देगी।

कारण (B) यह मनुष्य को केवल विनाश की ओर ले जाएगी।

कूट

(i) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (B) सही है।
(ii) कथन (A) और कारण (B) दोनों ही गलत हैं।
(iii) कथन (A) सही है और कारण (B) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(iv) कथन (A) सही है, किंतु कारण (B) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

प्रश्न.4 'नैनो-तकनीक' पर संक्षेप में लिखे - (2)
प्रश्न.5 'नैनो-तकनीक' आज की आवश्यकता क्यों बन रही हैं ? (2)

उत्तरमाला - अपठित गठ्यांश 1

1- (घ) आधुनिक शिक्षा
2- (ग) सभी के लिए शिक्षा
3- (घ) उपरोक्त सभी
4- हम तकनीकी क्रांति के एक सर्वथा नए मुहाने पर आ पहुँचे हैं, जिसके बाद उद्योग, चिकित्सा, दूरसंचार, परिवहन सहित हमारे जीवन में शामिल तमाम तकनीकी जटिलताएँ अपने पुराने अर्थ खो देंगी।
5- लेखक का मूल उद्देश्य हैं कि सतही बातों की अपेक्षा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का लोकतांत्रिक आदर्श सर्वोपरि होना चाहिए जिससे 21वीं सदी के इलेक्ट्रॉनिक आधारिक संरचना, एंब्रेसिंग कंप्यूटर्स, डाटा संचार और अन्य नवीन मीडिया से 21वीं सदी की अर्थव्यवस्था का संचालन किया जा सके |

अपठित गठ्यांश 2

1- (iii) 2 और 3 सही है
2- (i) यह तकनीक संपूर्ण मानव जाति के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है
3-(iv) कथन (A) सही है, किंतु कारण (B) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4-यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो अति सूक्ष्म मशीनें बना सकती है ऐसी मशीनें, जो इंसान के जिस्म में उतर कर, उसकी धमनियों में चल-फिर कर वहीं रोग का ऑपरेशन कर सकें। ऐसी मशीनें, जो मोबाइल को आपके नाखून से भी छोटा कर दें। जो ऐसी धातु बना दें, जो स्टील से दस गुना हल्की और सौ गुना मजबूत हो।
5- 'नैनो-तकनीक' की आज हर क्षेत्र में आवश्यकता है जैसे उद्योग, चिकित्सा, दूरसंचार, परिवहन सहित हमारे जीवन में शामिल तमाम पहलू जहाँ मनुष्य आधुनिक युग के साथ आगे जाएगा तब मनुष्य को अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए इस तकनीक की आवश्यकता होगी |

अपठित काव्यांश-1 **(7)**

जब बचपन तुम्हारी गोद में
आने से कतराने लगे,
जब माँ की कोख से झांकती ज़िंदगी
बाहर आने से घबराने लगे,
समझो कुछ ग़लत है।
जब तलवारें फूलों पर
ज़ोर आज़माने लगे,
जैन मासूम आँखों में
ख़ौफ़ नज़र आने लगे,
समझो कुछ ग़लत है।
जब किलकारियाँ सहम जाये

जब तोतली बोलियाँ ख़ामोश हो जाए,
समझो कुछ ग़लत है।
कुछ नहीं बहुत कुछ ग़लत है
क्योंकि ज़ोर से बारिश होनी चाहिए थी,
पूरी दुनिया में हर जगह टपकने चाहिए थे आंसू
रोना चाहिए था ऊपर वाले को, आसमाँ से फूट-फूट,
शर्म से झुकनी चाहिए थी, इंसानी सभ्यता की गर्दने
शोक का नहीं सोच का वक्त है,
मातम नहीं, सवालों का वक्त है
अगर इसके बाद भी सर उठाकर
खड़ा हो सकता है इंसान
समझो कि बहुत कुछ ग़लत है।

प्रश्न. 1 माँ की कोख से झाँकती ज़िंदगी को घबराहट क्यों हो सकती है- (1)

क) उसे बाहर की असुरक्षा का आभास हो रहा है
ख) उसे प्रदूषण का डर सता रहा है
ग) उसे माँ ने बाहर की वास्तविकता बता दी है
घ) बाहर का वातावरण अनुकूल नहीं है

प्रश्न .2 कविता में 'मासूम आँखे' किस का प्रतीक है- (1)

क) सुंदर आँखों का
ख) स्त्रियों का
ग) बच्चों का
घ) ग़रीबों का

प्रश्न.3 कवि के अनुसार बहुत ग़लत कब है- (1)

क) जब ओस तलवार की नोक पर गिरे
ख) जब मासूम सहम जाए
ग) जब बचपन समाप्ति के कगार पर हो
घ) जब किलकारियों की गूँज खामोश हो जाए

प्रश्न 4. कुछ ग़लत है से कवि क्या कहना चाहते हैं ? (2)

प्रश्न 5. कवि के अनुसार अभी किसका वक्त है- (2)

अपठित काव्यांश 2 **(7)**

वैराग्य छोड़ बाँहो की विभा सँभालो
चट्टानों की छाती से दूध निकालो
है रुकी जहाँ भी धार शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो
चढ़ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियो रे।
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे।
छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाए,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाए
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है.

मरता है जो, एक ही बार मरता है।

तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे।
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे।
स्वातंत्र्य जाति की लगन व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत् में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे।

प्रश्न.1 युवकों को आदर्श जीवन जीना चाहिए। इसके लिए कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए- (1)

(क) युवकों के मन में जोश भरा होना चाहिए।
(ख) युवकों में देशभक्ति की भावना जागृत होनी चाहिए।
(ग) युवकों को अपनी युवावस्था का सदुपयोग करना चाहिए।
(घ) युवाओं को पराक्रमी वीर के समान होना चाहिए।

कूट

(i) 1 और 2 सही हैं (ii) 2 और 3 सही है
(iii) 2,3 और 4 सही हैं (iv) 1, 2, 3 और 4 सही हैं

प्रश्न.2 काव्यांश के आधार पर बताइए कि कैसी परिस्थितियों में मनुष्य को मृत्यु की चिंता नहीं करनी चाहिए? (1)

(i) जब अपनी आन दाँव पर लगी हो (ii) जब युद्ध में भाग लेना हो
(iii) यदि शत्रु अधिक शक्तिशाली हो (iv) जब अचूक अस्त्रों से लड़ना पड़े

प्रश्न.3 कथन और कारण पर आधारित प्रश्न का उत्तर दीजिए - (1)

कथन (A) भारत के युवकों को साहस भरा और सम्मानपूर्वक जीवन जीना चाहिए।
कारण (B) युवाओं को हर संकट का सामना करना चाहिए।

कूट

(i) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (IR) सही है
(ii) कथन (A) और कारण (B) दोनों ही गलत है
(iii) कथन (A) सही है और कारण (B) कथन (A) की सही व्याख्या है
(iv) कथन (A) सही है, किंतु कारण (B) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है

प्रश्न.4 कवि के अनुसार कौन-सी जाति स्वाधीनतापूर्वक जीवित रह पाती है? (2)
प्रश्न.5 काव्यांश के माध्यम से कवि आज की युवा शक्ति को क्या सन्देश देना चाहते हैं ? (2)

उत्तरमाला - अपठित काव्यांश - 1

1- क) उसे बाहर की असुरक्षा का आभास हो रहा है
2- ग) बच्चों का
3- घ) जब किलकारियों की गूँज ख़ामोश हो जाए
4- यहाँ कवि का आशय है कि जब परिस्थितिया सामान्य न होकर विकट हो जाती हैं अर्थात एक नवजात शिशु तक इस संसार में आने से डरने लगता है तब बहुत कुछ गलत हो रहा होता हैं |

5- कवि के अनुसार अभी की चल रही विकट और विषम परिस्थिति के बारे में गहन चिंतन का समय है और उस चिंतन के पश्चात बहुत से सवाल करने का वक़्त है ताकि समय रहते इस समस्या को सुलझाया जा सके |

अपठित काव्यांश - 2

1- (iv) 1, 2, 3 और 4 सही हैं

2-(i) जब अपनी आन दाँव पर लगी हो

3- (iv) कथन (A) सही है, किंतु कारण (B) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है

4- कवि के अनुसार आज की युवा जाति जो अपने कार्य के लिए हमेशा तत्पर रहती है साथ ही वह अपने हक़ के लिए आवाज़ भी उठाती है, वह जाति स्वाधीनतापूर्वक जीवित रह पाती है|

5- काव्यांश के माध्यम से कवि आज की युवा शक्ति को यह सन्देश देना चाहते है कि परिस्थिति चाहे कैसी भी विकट क्यों न हो जाए आज के युवा को निडर रहते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए तथा अपने देश के हित में कार्य करते रहना चाहिए |

रचना के आधार पर वाक्य भेद

रचना का मतलब होता है बनावट। वाक्य की अलग अलग बनावट हो सकती है। और बनावट के आधार पर वाक्य के अलग अलग भेद हो सकते है।
रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं।

1. **सरल वाक्य**
2. **सयुक्त वाक्य**
3. **मिश्र वाक्य**

सरल वाक्य

परिभाषा : ऐसे वाक्य जिसमे एक क्रिया और एक ही कर्ता होता है उसे सरल वाक्य या साधारण वाक्य कहते हैं।

उदाहरण

- बारिश हो रही है।
- शीला गाना गा रही है।
- बिजली चमक रही है।
- पानी टपक रहा है।

सयुंक्त वाक्य

सयुंक्त को आसान भाषा में समझे तो संयुक्त का मतलब होता है जोड़ा हुआ।

परिभाषा : ऐसा वाक्य जिसमे दो वाक्य किसी सयोजक शब्द द्वारा जुड़े हुए हो ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते हैं।

संयोजक में और, लेकिन, अथवा, परन्तु जैसे शब्दों का समावेश होता है।

उदाहरण

- हरीश गाड़ी में बैठा था **और** नरेश गाड़ी चला रहा था।
- महेश बोल सकता है **लेकिन** उसे कोई बोलने का मौका नहीं देता।
- नैना गा सकती थी **लेकिन** उसे माइक नहीं मिला।
- श्रीवल्ली मंदिर जाती है **और** जी भर के भजन करती है।
- पायल बीमार है **इसलिए** स्कूल नहीं जा रही।
- विनोद पढाई कर रहा था **और** मानसी खेल रही थी।

मिश्र वाक्य

परिभाषा : जिन वाक्यों में एक मुख्य उपवाक्य हो और अन्य गौण उपवाक्य हों तथा जो आपस में **कि, जो, क्योंकि, जितना, उतना, जैसा, वैसा, जब, तब, जहाँ, वहाँ, जिधर, उधर, अगर/यदि, तो, यद्यपि, तथापि, आदि से** मिश्रित (मिले-जुले) हों उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं।

उदाहरण

- मुझे पक्का भरोसा है कि भारत जीतेगा।
- जब बारिश होगी तब फसल होगी।
- जैसा करेगा वैसा भरेगा।
- जहाँ ज्यादा पेड़ होते है वहाँ ज्यादा बारिश होती है।

उपवाक्य क्या है ? उपवाक्य के कितने भेद हैं

उपवाक्य वाक्य का ही अंश होता जिसमे उदेश्य और विधेय होते है | अत: पदो का ऐसा समूह जिसका अपना अर्थ हो,जो सामान्यत: एक वाक्य का भाग हो तथा जिसमे उदेश्य तथा विधेय शामिल हो,उपवाक्य कहलता है| जो उपवाक्य मूल वाक्य से अलग होकर भी पूर्ण अर्थ प्रकट करे उसे प्रधान उपवाक्य तथा जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के बिना पूर्ण अर्थ न दे उसे आश्रित उपवाक्य कहते है |

मिश्र वाक्य में आश्रित उपवाक्य मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं :
(क)संज्ञा उपवाक्य
(ख)विशेषण उपवाक्य
(ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य।

(क) संज्ञा उपवाक्य - जिस आश्रित उपवाक्य का प्रयोग प्रधान उपवाक्य की क्रिया के कर्म या पूरक के रूप में प्रयुक्त होता है, उसे 'संज्ञा उपवाक्य' कहते हैं; जैसे :
राजू ने कहा कि वह कल मुंबई जा रहा है।
इस वाक्य में 'वह कल मुंबई जा रहा है' वाक्य संज्ञा उपवाक्य है। संज्ञा उपवाक्य बहुधा प्रधान उपवाक्य से 'कि' योजक द्वारा जुड़े होते हैं।

(ख) विशेषण उपवाक्य - जो आश्रित उपवाक्य अपने प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे 'विशेषण उपवाक्य' कहते हैं; जैसे :
वही व्यक्ति उन्नति करता है जो परिश्रमी होता है।
इस वाक्य में जो परिश्रमी होता है' वाक्य, पहले उपवाक्य व्यक्ति का विशेषण होने के कारण, विशेषण उपवाक्य है। विशेषण उपवाक्य प्रायः संबंधवाचक सर्वनाम 'जो' और उसके विभिन्न रूपों (जिसके, जिन्होंने, जिससे, जिसने, जिन, जिसके लिए आदि) तथा संबंधवाचक क्रियाविशेषण (जहाँ, जितना, जैसे, अब आदि) के द्वारा प्रधान उपवाक्य से जुड़े होते हैं।

(ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य - जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया का विशेषण बनकर आता है, वह क्रियाविशेषण उपवाक्य कहलाता है। जैसे :
जब तुम मेरे घर आए तब मैं घर पर नहीं था।

वाक्य के अंग

वाक्य के दो अंग होते है- **उद्देश्य तथा विधेय** |
1) वाक्य में जिस वस्तु के विषय मे कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं |
2)वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं |

प्रश्नअभ्यास

1. रचना के आधार पर वाक्य के कितने प्रकार के होते हैं?
उत्तर: रचना के आधार पर वाक्य 3 प्रकार के होते हैं।
2. रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं उदाहरण सहित उत्तर दीजिए?
उत्तर: रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं - सरल, संयुक्त,मिश्र |
सरल वाक्य -गाय घास खाती है|
संयुक्त वाक्य- पाठ समाप्त हुआ और घंटी बज गयी|
मिश्र वाक्य- वह परिश्रमी था इसलिए सफल हुआ|
3. उपवाक्य कितने प्रकार के होते हैं ?
उत्तर: उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं - संज्ञा उपवाक्य ,विशेषण उपवाक्य तथा क्रियाविशेषण उपवाक्य |
4. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और रचना के आधार पर उनका भेद लिखिए
1. प्रातः जल्दी उठो और एक घंटे नियमित रूप से व्यायाम करो।
2. मरीज दवाएँ लेने अस्पताल गया।
3. अध्यापक आए और कक्षा में शोर बंद हो गया।
4. परिश्रमी मजदूरों को सभी काम पर बुलाते हैं।
5. जो लोग धनवान होते हैं, उन्हें गरीबों की मदद करनी चाहिए।

6. जैसे ही मोहन आया श्याम ने आगे बढ़कर उसका स्वागत किया।
7. उसने अपना आपा खोया और कटुवचन बोलने लगा।
8. सवेरा होते ही पक्षियों के कलरव से आसमान गूंज उठा।
9. आँधी आई और धूल उड़ने लगी।
10. अपने अथक परिश्रम से उसने असंभव को भी संभव बना दिया।
11. मज़दूरी पाते ही मज़दूर घर चला गया।
12. वर्षा समाप्त हुई और इंद्रधनुष निकल आया।
13. धनवान होने पर भी हमें दयालु बने रहना चाहिए।
14. जैसे ही नाटक समाप्त हुआ, वैसे ही दर्शक घर जाने लगे।
15. बाढ़ आई और फ़सलें पानी में डूब गईं।
16. जैसे ही महात्मा जी आए वैसे ही भीड़ उनके स्वागत में कड़ी हो गई
17. चुनाव निकट आते ही नेताओं को जनता के दुख दर्द याद आने लगे।
18. योगाचार्य ने कहा कि प्रतिदिन एक घंटा योग करना चाहिए।
19. जो परिश्रमी होते हैं, वे काम से नहीं डरते।
20. बत्ती हरी होते ही गाड़ियाँ चल पड़ी।

उत्तरः

1. संयुक्त वाक्य
2. सरल वाक्य
3. संयुक्त वाक्य
4. सरल वाक्य
5. मिश्र वाक्य
6. मिश्र वाक्य
7. संयुक्त वाक्य
8. सरल वाक्य
9. संयुक्त वाक्य
10. सरल वाक्य
11. सरल वाक्य
12. संयुक्त वाक्य
13. सरल वाक्य
14. मिश्र वाक्य
15. संयुक्त वाक्य
16. मिश्र वाक्य
17. सरल वाक्य
18. मिश्र वाक्य
19. मिश्र वाक्य
20. सरल वाक्य।

प्रश्नः 2 .निम्नलिखित वाक्यों को मिश्र वाक्य में बदलिए -

a. मेरे घर पहुँचते ही आंधी आ गई।
b. पुस्तकें खरीदने के लिए वह बाज़ार गई।
c. दुकान पर सजी मिठाइयाँ देखकर बच्चे के मुँह में पानी आ गया।

d. निराला जी द्वारा रचित कविता सभी को पसंद आई।
e. गार्ड द्वारा हरी झंडी हिलाते ही गाड़ी चल पड़ी।
f. पानी का टैंकर आते ही लोगों में हलचल मच गई।
g. महात्मा जी का प्रभावपूर्ण प्रवचन सुनकर लोग नतमस्तक हो गए।
h. रोहित शर्मा की अच्छी बल्लेबाजी के कारण भारत मैच जीत गया।
i. मेरे स्टेशन पर पहुँचते ही बस चल पड़ी।
j. लाल कपड़ा देखते ही साँड़ भड़ककर गोपू के पीछे भागने लगा।

उत्तरः

A. जैसे ही मैं घर पहुँचा वैसे ही आँधी आ गई।
B. क्योंकि उसे पुस्तकें खरीदनी थी इसलिए वह बाज़ार गई।
C. जैसे ही बच्चे ने दुकान पर सजी मिठाइयाँ देखीं वैसे ही उसके मुँह में पानी आ गया।
D. जो कविता निराला जी द्वारा रचित है, वह सभी को पसंद आई।

या

वह कविता जो निराला जी द्वारा रचित है, सभी को पसंद आई।

E. ज्यों ही गार्ड ने हरी झंडी हिलाई, त्यों ही गाड़ी चल पड़ी।।
F. जैसे ही पानी का टैंकर आया वैसे ही लोगों में हलचल मच गई।
G. महात्मा जी का प्रवचन इतना प्रभावपूर्ण था कि लोग नतमस्तक हो गए।
H. चूँकि रोहित शर्मा ने अच्छी बल्लेबाजी की इसलिए भारत मैच जीत गया।
I. जैसे ही मैं स्टेशन पर पहुँचा वैसे ही बस छूट गई।
J. ज्यों ही साँड़ ने लाल कपड़ा देखा त्यों ही वह गोपू के पीछे भागने लगा।

प्रश्न 3 निम्नलिखित वाक्यों को संयुक्त वाक्य में बदलिए

क. बच्चो के शोर मचाने पर पक्षी उड़ गए।
ख. आरक्षण समर्थकों द्वारा किए गए उत्पात से अनेक रेलगाड़ियाँ रद्द की गईं।
ग. जादूगर का खेल देखकर लोगों ने तालियाँ बजाईं।
घ. बाज़ार में धमाका होते ही लोग इधर-उधर भागने लगे।
ङ. अकबर के अत्याचार के सामने राणा प्रताप नहीं झुके।
च. आंधी आते ही रेगिस्तान में रेत उड़ने लगी।
छ. स्टेशन पर पहुँचकर भी वह गाड़ी न पकड़ सकी।
ज. वर्षा होने पर पेड़-पौधे नहाए-धोए से नज़र आने लगे।
झ. उदय ने बाज़ार जाकर पुस्तकें खरीदीं।

उत्तर क. बच्चों ने शोर मचाया और पंक्षी उड़ गए
ख. आरक्षण समर्थक ने उत्पात किया और अनेक रेलगाड़ियाँ रद्द करनी पड़ी।
ग. लोगों ने जादूगर का खेल देखा और तालियाँ बजाई।
घ. बाज़ार में धमाका हुआ और लोग इधर-उधर भागने लगे।
ङ. अकबर ने अत्याचार किया परंतु राणा प्रताप झुके नहीं।
च.आँधी आई और रेगिस्तान में धूल उड़ने लगी।
छ.वह स्टेशन पर पहुँची परंतु गाड़ी न पकड़ सकी।
ज. वर्षा हुई और पेड़-पौधे नहाए धोए से नज़र आने लगे।
झ.उदय बाज़ार गया और पुस्तकें खरीदी।

प्रश्न 4 निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्य में बदलिए

क. मैंने एक लाल गुलाब देखा जो बहुत खुशबूदार था।

ख. कुत्ते भौंकने लगे तब चोर भाग गए।

ग. यही वह छात्र है जिसने नाटक में अध्यापक की भूमिका निभाई।

घ. यही वे महात्मा हैं जो अपनी ज्ञानभरी बातों से प्रभावित कर लेते हैं।

ङ. पुलिस ने आसू गैस छोड़ी और भीड़ तितर-बितर हो गई।

च. गली में शोर हुआ परंतु उसकी नींद न खुली।

छ. लोगों ने जोकर की बातें सुनीं और हँस पड़े।

ज. जब सुमन ने मुझे समझाया तो मैं मान गया।

झ. बल्लेबाजों ने अच्छा प्रदर्शन किया और भारत मैच जीत गया।

ञ. जब पीटी अध्यापक ने सीटी बजाई तब छात्र सावधान हो गए।

उत्तरः

क . मैंने एक लाल खुशबूदार गुलाब देखा।

ख . कुत्तों के भौंकने पर चोर भाग गए।

ग . इसी छात्र ने नाटक में अध्यापक की भूमिका निभाई थी।

घ . ये महात्मा अपनी ज्ञानभरी बातों से प्रभावित कर लेते हैं।

ङ . पुलिस द्वारा आसू गैस छोड़ने पर भीड़ तितर-बितर हो गई।

च . गली में शोर होने पर भी उसकी नींद न खुली।

छ . जोकर की बातें सुनकर लोग हँस पड़े।

ज . सुमन के समझाने पर मैं मान गया।

झ . बल्लेबाजों के अच्छे प्रदर्शन से भारत मैच जीत गया।

ञ . पीटी अध्यापक के सीटी बजाने पर छात्र सावधान हो गए।

प्रश्न 5 निम्नलिखित वाक्यों को रचना के भेद के आधार पर पहचानकर लिखिए -

1. वह बाज़ार गई और स्वेटर लाई।
2. घंटी बजते ही छात्र कक्षाओं में चले गए।
3. यद्यपि वह ईमानदार है फिर भी काम से जी चुराता है।
4. बुढ़िया रो रही थी इसलिए मैंने उससे रोने का कारण पूछा।
5. जब हेलीकॉप्टर से खाना गिराया गया तब लोगों को भोजन मिला।
6. बिजली आई परंतु टीवी न चली।
7. दोनों देश के सैनिक घमासान युद्ध कर रहे थे

उत्तर:

- संयुक्त वाक्य
- सरल वाक्य
- मिश्र वाक्य
- संयुक्त वाक्य
- मिश्र वाक्य
- संयुक्त वाक्य
- सरल वाक्य
- संयुक्त वाक्य।.

प्रश्न 6 नीचे दिए गए वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए -

1. सवेरा होते ही चिड़ियाँ चहचहाने लगी। (संयुक्त वाक्य)
2. पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया और उसे मुँह की खानी पड़ी। (सरल वाक्य)
3. जब थाने में शिकायत की गई तब लाउडस्पीकर का शोर बंद हुआ। (मिश्र वाक्य)
4. परिश्रमी लोगों के लिए कोई काम असंभव नहीं होता। (संयुक्त वाक्य)
5. आकाश में बादल छाते ही शीतल हवा बहने लगी। (मिश्र वाक्य)
6. अध्यापक कक्षा में आए और पढ़ाने लगे। (मिश्र वाक्य)
7. अभिनेता अमिताभ बच्चन को सदी का महानायक कहा जाता है। (मिश्र वाक्य)
8. परिश्रम करो और सफ़लता प्राप्त करो। (सरल वाक्य)

उत्तर:

- सवेरा हुआ और चिड़ियाँ चहचहाने लगी।
- जब पाकिस्तान ने हमला किया तब उसे मुँह की खानी पड़ी।
- थाने में शिकायत करने पर लाउडस्पीकर का शोर बंद हुआ।
- जो लोग परिश्रमी होते हैं उनके लिए कोई काम असंभव नहीं होता है।
- आकाश में बादल छाए और शीतल हवा बहने लगी।
- जब अध्यापक कक्षा में आए तब वे पढ़ाने लगे।
- अमिताभ बच्चन वही अभिनेता हैं जिन्हें सदी का महानायक कहा जाता है।
- परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो।

प्रश्न 7 निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित अंशों को देखकर आश्रित उपवाक्य भेद पहचानिए -

1. अध्यापक ने उस छात्र पर जुर्माना लगाया जिसने प्रयोगशाला में उपकरण तोड़े थे।
2. राम ने सुमंत से कहा कि अब अयोध्या वापस लौट जाओ।
3. जब बारिश हो रही थी तब बच्चे नहा रहे थे।
4. कृष्ण ने दुर्योधन से कहा कि पांडवों को आधा राज्य दे दे।
5. जो गरीबों की मदद करते हैं वे दीनबंधु कहलाते हैं।
6. यदि मन लगाकर पढते तो फेल न होते।
7. अध्यापक ने छात्रों से कहा कि बिना पटाखों के दीपावली मनाएँ।
8. जब-जब बाढ आई तब-तब फ़सलें नष्ट हुई हैं।

उत्तर:

- विशेषण उपवाक्य
- संज्ञा उपवाक्य
- क्रियाविशेषण उपवाक्य
- संज्ञा उपवाक्य
- विशेषण उपवाक्य
- क्रियाविशेषण उपवाक्य
- संज्ञा उपवाक्य
- क्रियाविशेषण उपवाक्य

वाच्य

वाच्य का शाब्दिक अर्थ है :- “ बोलने का विषय “ अतः क्रिया के जिस रुप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय ‘कर्ता’ है ‘कर्म’ है अथवा ‘भाव’ है उसे वाच्य कहते हैं;

उदाहरण :-

‘नेताजी’ सुंदर लग रहे थे (इस वाक्य में नेताजी कर्ता को दर्शाते हैं|)

इनमें कर्ता के अनुसार क्रिया के पुरुष, वचन आदि आए हैं।

वाच्य के तीन प्रकार हैं -

कर्तृवाच्य

कर्मवाच्य

भाववाच्य

कर्तृवाच्य- क्रिया के उस रूपान्तर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो। सरल शब्दों में, क्रिया के जिस रूप में कर्ता प्रधान हो और सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाए हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

उदाहरण-

नरेश ट्रेक्टर चलाता है ।

सुरेश लिख नही सकता है।

उक्त वाक्यों में कर्ता प्रधान है तथा उन्हीं के लिए ‘खाता है’ तथा ‘पढ़ता है’ क्रियाओं का विधान हुआ है, इसलिए यहाँ कर्तृवाच्य है। कर्तृवाच्य में कर्ता विभक्ति रहित होता है।

कर्म वाच्य- क्रिया के उस रूपान्तर को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो। सरल शब्दों में- क्रिया के जिस रूप में कर्म प्रधान हो, जिसमें केवल सकर्मक क्रिया के वाक्य होते है। उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

उदाहरण:

कवियों द्वारा कवितायें लिखी गई |

श्याम से कहानी पढ़ी गई|

उपरोक्त वाक्यों में क्रिया, लिंग,वचन और पुरुष सदा कर्म के अनुसार हुआ क्योंकि वाक्यों मे कर्म प्रधान हैं और उन्ही के लिए लिखी गई व पढ़ी गई क्रियाओं का विधान हुआ हैं अतः यहाँ कर्मवाच्य है।

भाववाच्य- क्रिया के उस रूपान्तर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता का बोध हो। दूसरे शब्दों में- क्रिया के जिस रूप में न तो कर्ता की प्रधानता हो न कर्म की, बल्कि क्रिया का भाव ही प्रधान हो, वहा भाववाच्य होता है।

उदाहरण

मोहन से टहला भी नहीं जाता।

मुझसे उठा नहीं जाता।

मुझसे सोया नही जाता।

अमरेंद्र से लिखा नही जाता है

उक्त वाक्यों में कर्ता या कर्म प्रधान न होकर भाव मुख्य हैं, अतः इनकी क्रियाएँ भाववाच्य का उदाहरण हैं।

टिप्पणी- यह स्पष्ट है कि कर्तृवाच्य में क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनों हो सकती है, किन्तु कर्मवाच्य में केवल सकर्मक और भाववाच्य में अकर्मक होती हैं।

प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य का नाम लिखिए|

1. वह खाना खाकर चला गया।
2. मोहन से चला नहीं जाता।

3. आज निश्चित होकर सोया जाएगा।
4. ड्राईवर बस चलाता जा रहा था।
5. उससे पत्र नहीं पढ़ा जाता।
6. रुक्मिणी से यह सामान नहीं उठाया जाता।
7. छात्राएँ रात-रात भर पढ़ाई करती रही।
8. वह रामलीला देख रहा है।
9. तन्वी रात भर सो न सकी।
10. अक्षर से एक भी गेंद नहीं फेंकी गई।

उत्तरः

1. कर्तृवाच्य
2. भाववाच्य
3. भाववाच्य
4. कर्तृवाच्य
5. कर्मवाच्य
6. कर्मवाच्य
7. कर्तृवाच्य
8. कर्तृवाच्य
9. भाववाच्य
10. कर्मवाच्य

प्रश्न .निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य में बदलिए

i. दीप्ति द्वारा नहीं लिखा जाता।
ii. शोभना से पढ़ा नहीं जाता।
iii. श्रद्धालु काशीवासियों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है।
iv. समर्थकों द्वारा पुष्प वर्षा की गई।
v. आपके द्वारा उनके विषय में क्या सोचा जाता है।
vi. उनके द्वारा कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया गया।
vii. चलिए, अब सोया जाए।
viii. परीक्षा के बारे में अध्यापक द्वारा क्या कहा गया?
Ix. चलो, आज मिलकर कहीं घूमा जाए।
x. महादेवी वर्मा द्वारा 'यामा' लिखी गई।

उत्तरः

1. दीप्ति नहीं लिखती है।
2. शोभना नहीं पढ़ती है।
3. श्रद्धालु काशीवासी इस सभा का आयोजन करते हैं।
4. समर्थकों ने पुष्पवर्षा की।
5. आप उनके विषय में क्या सोचते हैं।
6. उन्होंने कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया।
7. चलो,अब सोते हैं।
8. परीक्षा के बारे में अध्यापक ने क्या कहा?
9. चलो आज मिलकर कहीं घूमते हैं।

10. महादेवी ने 'यामा' लिखी।

प्रश्न .निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए

1. उन्होंने दोनों भाइयों को पढ़ाया।
2. रामपाल ने बड़े दुखी मन से अपना अपराध स्वीकार किया।
3. उसने भगत को दुनियादारी से निवृत्त कर दिया।
4. आओ, कुछ बातें करें।
5. हमने उसको अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया।

उत्तरः

1. उनके द्वारा दोनों भाईयों को पढ़ाया गया।
2. रामपाल द्वारा अत्यंत दुखी मन से अपना अपराध स्वीकार किया गया।
3. उसके द्वारा भगत को दुनियादारी से मुक्त कर दिया गया।
4. आइए, कुछ बातें की जाएँ।
5. हमारे द्वारा उसको अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया गया।

प्रश्न-निम्नलिखित वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए

1. घायल होने के कारण वह उड़ नहीं पाया।
2. मोहिनी क्षणभर के लिए भी शांत नहीं बैठती है।
3. चलो, अब चलते हैं।
4. माँ रो भी नहीं सकती।
5. हम इतनी गरमी में नहीं रह सकते

उत्तरः

1. घायल होने के कारण उससे उड़ा नहीं गया।
2. मोहिनी से क्षण भर भी शांत नहीं बैठा जाता है।
3. चलिए अब चला जाए।
4. माँ से रोया भी नहीं जाता।
5. हमसे इतनी गर्मी में रहा नहीं जाता ।

निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए -

1. भूमिहीन लोग सरदार पटेल को याद करते हैं। (कर्मवाच्य)
2. गरम रेत में कैसे चला जाएगा। (कर्तृवाच्य)
3. बच्चे शतरंज खेलेंगे। (कर्मवाच्य)
4. घायल व्यक्ति अस्पताल से कैसे भागेगा। (भाववाच्य)
5. मैं इस समस्या का समाधान खोज रहा हूँ। (कर्मवाच्य)
6. रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों से युद्ध किया। (कर्मवाच्य)

निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए -

1. तात्या टोपे द्वारा अंग्रेज़ों को नाको चने चबवाए गए। (कर्तृवाच्य)
2. इतने शोर में मैं नहीं सो सकता हूँ। (भाववाच्य)
3. किसने गमला तोड़ा है। (कर्मवाच्य)
4. छोटा-सा बच्चा मंदिर के पास भीख माँग रहा था। (कर्मवाच्य)
5. राणा प्रताप द्वारा घास की रोटियाँ खाईं गईं। (कर्तृवाच्य

पद-परिचय एवं अलंकार

पद- व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयोग किये गए शब्द को ही पद कहते हैं |

जैसे- मोहन पत्र लिखेगा | इस वाक्य में मोहन,पत्र, लिखेगा- कुल 3 पद हैं | वाक्य से स्वतन्त्र होने पर ये सभी शब्द कहलाएँगे |

पद-परिचय- वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक सार्थक शब्द को पद कहते है तथा उन शब्दों के व्याकरणिक परिचय को पद-परिचय कहते है।

व्याकरणिक परिचय से तात्पर्य है - वाक्य में उस पद की स्थिति बताना, उसका लिंग, वचन, कारक तथा अन्य पदों के साथ संबंध बताना।

जैसे -

राजेश ने रमेश को पुस्तक दी।

राजेश = संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, 'ने' के साथ कर्ता कारक, द्विकर्मक क्रिया 'दी' के साथ।

रमेश = संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक।

पुस्तक = संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक।

पद पाँच प्रकार के होते हैं -

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय।

इन सभी पदों का परिचय देते समय हमें निम्नलिखित बिन्दुओं काध्यान रखना चाहिए।

पद-परिचय कैसे पहचानते है? -

सबसे पहले आपको संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, अवधारक (निपात), संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधकआदि के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

संज्ञा शब्द का पद-परिचय

किसी भी संज्ञा पद के पद परिचय हेतु निम्न 5 बातें बतलानी होती है -

(1) संज्ञा का प्रकार

(2) उसका लिंग

(3) वचन

(4) कारक तथा

(5) उस शब्द का क्रिया के साथ सम्बन्ध

संज्ञा शब्द का क्रिया के साथ सम्बन्ध 'कारक'के अनुसार जाना जा सकता है।

जैसे - राम पुस्तक पढ़ताहै।

उक्त वाक्य में राम तथा 'पुस्तक' शब्द संज्ञाएँ हैं।यहाँ इनका पद परिचय उक्त पाँचों बातों के अनुसार निम्नानुसार होगा -

राम - व्यक्तिवाचकसंज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक, 'पढ़ता है' क्रिया का कर्ता।

पुस्तक - जातिवाचकसंज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'पढ़ता है' क्रिया का कर्म।

सर्वनाम शब्द का पद-परिचय

किसी सर्वनाम केपद-परिचय निम्नलिखित बातों का उल्लेख करना होता है -

(1) सर्वनाम का प्रकार पुरुष सहित

(2) लिंग

(3) वचन

(4) कारक

(5) क्रिया के साथ सम्बन्ध आदि।

जैसे- यह उसकी वही कारहै, जिसे कोई चुराकर ले गया था।

इस वाक्य में 'यह, 'उसकी, 'जिसे, तथा 'कोई' पद सर्वनामहै।इनका पद-परिचय इस प्रकार होगा-

यह - निश्चयवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, स्त्रीलिंग, एकवचन, सम्बन्धकारक, 'कार' संज्ञा शब्द से सम्बन्ध।

जिसे - सम्बन्ध वाचक सर्वनाम, स्त्रीलिंग, एकवचन कर्मकारक, 'चुराकर ले गया' क्रिया का कर्म।

कोई - अनिश्चय वाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, पुल्लिंग एकवचन, कर्ताकारक, 'चुराकर ले गया' क्रिया का कर्ता।

विशेषण शब्द का पद-परिचय

किसी विशेषण शब्द के पद-परिचय हेतु निम्नबातों का उल्लेख करना होताहै-

(1) विशेषण का प्रकार

(2) अवस्था

(3) लिंग

(4) वचन

(5) विशेष्य व उसके साथ सम्बन्ध।

जैसे- वीर राम ने सब राक्षसों का वध कर दिया।

उक्त वाक्य में 'वीर' तथा 'सब' शब्द विशेषणहैं, इनका पद-परिचय निम्नानुसार होगा -

वीर - गुणवाचक विशेषण, मूलावस्था, पुल्लिंग, एकवचन, 'राम' विशेष्य के गुण का बोध कराता है।

सब - संख्या वाचक विशेषण, मूलावस्था, पुल्लिंग, बहुवचन, 'राक्षसों' विशेष्य की संख्या का बोध कराता है।

क्रिया शब्द का पद-परिचय

क्रिया के पद-परिचय हेतु निम्न बिंदु अपेक्षित हैं -

(1) भेद- अकर्मक/सकर्मक

(2) काल

(3) वाच्य

(4)लिंग

जैसे- हम बाग़ में गए परन्तु वहाँ कोई आम न मिला |

गए- अकर्मक क्रिया,पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमानकाल

मिला- सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमानकाल

अव्यय शब्द का पद-परिचय

अव्यय शब्द चूंकि लिंग, वचन, कारक आदि से प्रभावित नहीं होता, अतःइनके पद-परिचय में केवल अव्यय शब्द के प्रकार, उसकी विशेषता या सम्बन्ध ही बताया जाता है।

(1) क्रियाविशेषण - क्रियाविशेषणकेभेद (रीतिवाचक, स्थानवाचक, कालवाचक, परिमाणवाचक) उस क्रिया का उल्लेख, जिसकी विशेषता बताई जा रही हो।

जैसे- मैं भीतर बैठी थी और बच्चे धीरे-धीरे पढ़ रहे थे।

भीतर - क्रिया विशेषण, स्थानवाचक क्रिया विशेषण, 'बैठी' क्रिया के स्थान की विशेषता।

धीरे-धीरे - क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'पढ़ रहे थे' क्रिया की रीति की विशेषता।

(2) संबंधबोधक - संबंधबोधक के भेद, किस संज्ञा/सर्वनाम से संबंद्ध है।

जैसे- कुर्सी के नीचे बिल्ली बैठी है।

के नीचे - संबंधबोधक, 'कुर्सी' और 'बिल्ली' इसके संबंधी शब्द हैं।

(3) समुच्चयबोधक - भेदों का उल्लेख, जुड़ने वाले पदों का उल्लेख।

जैसे- तुम कॉपी और किताब ले लो लेकिन फाड़ना नहीं।

और - समुच्चयबोधक (समानाधिकरण) कॉपी-किताब शब्दों का संबंध करने वाला।

लेकिन - भेद दर्शक (विरोध-दर्शक) तुम............ले लो तथा 'फाड़ना नहीं इन दो वाक्यों को जोड़ता है।

(4) विस्मयादि बोधक - भेदों और भावों का उल्लेख।

जैसे- वाह! कितना सुंदर बग़ीचाहै।ठीक! मैं रोज़ आऊँगा।

वाह! - विस्मयादि बोधक, हर्ष - उल्लास

ठीक! - विस्मयादि बोधक, स्वीकार बोधक

कुछ अतिरिक्त उदाहरण -

(1) अपने गाँव की मिट्टी छूने के लिए मै तरस गया।

अपने - विशेषण (सार्वनामिक), एकवचन, पुल्लिंग, विशेष्य 'गाँव'

गाँव की - संज्ञा (जातिवाचक), एकवचन, पुल्लिंग, संबंधकारक (कारक 'की')

मिट्टी - संज्ञा (द्रव्यवाचक)

मैं - सर्वनाम (उत्तमपुरुष), एकवचन, पुल्लिंग, 'तरसगया' क्रियाकाकर्ता

तरस गया - क्रिया (अकर्मक, संयुक्त), भूतकाल, एकवचन, पुल्लिंग, कर्तृवाच्य, कर्ता "मै"

(2) निर्धन लोगो की ईमानदारी देखो।

निर्धन - विशेषण (गुणवाचक), बहुवचन, पुल्लिंग, विशेष्य 'लोगो'

लोगो की - संज्ञा (जातिवाचक), बहुवचन, पुल्लिंग, संबंधकारक (कारक 'की')

ईमानदारी - संज्ञा (भाववाचक), कर्मकारक, 'देखो' क्रिया का कर्म

देखो - क्रिया (सकर्मक), बहुवचन, धातु 'देख', वर्तमान काल, क्रिया का कर्म 'ईमानदारी'

(3) यह पुस्तक मेरे मित्र की है।

यह - विशेषण (सार्वनामिक), एकवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य 'पुस्तक'

पुस्तक - संज्ञा (जातिवाचक), एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्मकारक, 'है' क्रिया का कर्म

मेरे - सर्वनाम (पुरुषवाचक - उत्तमपुरुष), पुल्लिंग, एकवचन, संबंधकारक

मित्रकी - संज्ञा (जातिवाचक), एकवचन, पुल्लिंग, संबंधकारक (कारक 'की), 'है' क्रिया से संबंध

है - क्रिया, वर्तमानकाल, एकवचन

(4) नेहा यहाँ इसी मकान में रहती है।

नेहा - संज्ञा (व्यक्तिवाचकसंज्ञा), स्त्रीलिंग,एकवचन, कर्ता कारक, 'नेहा' रहना क्रिया की कर्ता है

यहाँ - क्रिया विशेषण (स्थान वाचक क्रिया विशेषण)

इसी - विशेषण (सार्वनामिक), पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य - 'मकान'

मकानमें - संज्ञा (जातिवाचक), पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक (कारक 'में'), मकान 'रहना' क्रिया का कर्म है

रहती है - क्रिया (सकर्मक), स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, वर्तमानकाल, कर्तृवाच्य, 'रहती है 'क्रिया की कर्ता 'नेहा' और कर्म 'मकान' है

(5) अरे वाह! तुम भी पुस्तक पढ़ सकते हो।

अरेवाह! - विस्मयादिबोधक, आश्चर्य का भाव

तुम - सर्वनाम (मध्यमपुरुष), एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक, 'पढ़ सकते हो' क्रिया का कर्ता है

भी - निपात

पुस्तक - संज्ञा (जातिवाचक), स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, पुस्तक 'पढ़सकतेहो'क्रियाकाकर्महै

पढ़ सकते हो - क्रिया (सकर्मक), पुल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, वर्तमानकाल, कर्तृवाच्य, क्रिया का कर्ता तुम व कर्म पुस्तक पढ़ना |

<u>अभ्यास प्रश्न पत्र</u>

प्रश्न 1. <u>रेखा</u> दसवीं कक्षा में पढ़ती है | 'रेखा' शब्द का पद- परिचय होगा |

(क) व्यक्ति वाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, पढ़ना क्रिया का कर्ता

(ख) विशेषण, संख्यावाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कक्षा विशेष्य का विशेषण

(ग) गुणवाचक, विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, विशेष्य

(घ) जातिवाचकसंज्ञा, पुलिंग, एकवचन, कर्ताकारक

प्रश्न 2. मैं <u>कभी-कभी</u> मंदिर जाती हूं | वाक्य में 'कभी-कभी' शब्द का पद-परिचय है-

(क) अव्यय, क्रिया विशेषण, कालवाचक, जाती है क्रिया का विशेषण

(ख) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन

(ग) विशेषण, सार्वनामिक, अनिश्चयवाचक, पुल्लिंग

(घ) विस्मयादिबोधक अव्यय

प्रश्न 3. <u>आह!</u> बगीचे में सुंदर फूल खिले हैं | 'आह!' शब्द का पद-परिचय है-

(क) स्त्रीलिंग, संज्ञा ,जातिवाचक

(ख) विशेषण ,सार्वनामिक ,अनिश्चयवाचक

(ग) विस्मयादिबोधकअव्यय, प्रशंसाबोधक

(घ) क्रियाविशेषण, कालवाचक

प्रश्न 4. विमला पत्र <u>लिख रही है</u>| इस वाक्य में रेखांकित पद का पद-परिचय होगा-

(1) प्रेरणार्थकक्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमानकाल

(2) द्विकर्मकक्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमानकाल

(3) सकर्मकक्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमानकाल

(4) अकर्मकक्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमानकाल

प्रश्न.5 समाज में <u>विभीषणों</u> की संख्या बढ़ती जा रही है | इस वाक्य में रेखांकित पद का पद-परिचय होगा-

(क) जाति वाचकसंज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, सम्बन्धकारक

(ख) समूह वाचकसंज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, सम्बन्धकारक

(ग) भाव वाचकसंज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, सम्बन्धकारक

(घ) व्यक्ति वाचकसंज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, सम्बन्धकारक

<u>अलंकार</u>

अलंकार शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है- आभूषण यानी गहना।अलंकार शब्द 'अलम' और 'कार' दो शब्दों के योग से बना है| 'अलम' का अर्थ होता है-शोभा तथा 'कार' का अर्थ है- 'करने वाला' | काव्य की शोभा (सौन्दर्य) बढ़ाने वाले शोभा कारक शब्दों को अलंकार कहते हैं। 'अलंकार शास्त्र' में आचार्य भामह ने इसका विस्तृत वर्णन किया है।वे अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक कहे जाते हैं।

जैसे- (1) बालकु बोलि बधौं नहि तोही | केवल मुनि जड़ जानहि मोही |

(2) प्रीति-नदी में पाव न बोरयो, दृष्टि न रूप परागी |

अलंकार के प्रयोग से काव्य रुचिकर और पठनीय बनता है| भाषा की गुणवत्ता बढ़ जाती है और उसमें सजीवता आ जाती है | अभिव्यक्ति में सरसता और स्पष्टता आने से कविता संप्रेषणीय बन जाती है | जैसे आभूषण नारियों का श्रृंगार है, ठीक उसी प्रकार साहित्य में 'अलंकार' काव्य का श्रृंगार है |

अलंकार के भेद- अलंकार के मुख्यतः दो भेद हैं- **(1)** शब्दालंकार, (2) अर्थालंकार |

(1)शब्दालंकार- जहाँ शब्दों के विशिष्ट प्रयोग से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता हैं, वहाँ शब्दालंकार होता है |

जैसे-(1) अवधि अधार आस आवन की,तन मन विथा सही |

(2) चारू चन्द्र की चंचल किरणें खेल रहीं हैं जल-थल में |

शब्दालंकार तीन प्रकार का होता है- अनुप्रास, यमक, श्लेष।

(2)अर्थालंकार-जब किसी वाक्य में किसी भाषा का प्रयोग इस प्रकार से किया जाता है, कि उसमें अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न होता है, तब वहाँ पर अर्थालंकार होता है।मुख्यतःउपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, दृष्टांत, मानवीकरण आदि मुख्य अर्थालंकार हैं।

शब्दालंकार

(1) अनुप्रासअलंकार- जिस पंक्ति मे वर्णो की आवृत्ति एक निश्चित क्रम में हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। उदाहरण-

(अ) मधुर मृदु मंजुल मुख मुसकान।

यहाँ 'म' वर्ण की आवृत्ति एक निश्चित क्रम में हुई है| अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

(ब) चारू चन्द्र की चंचल किरणें खेल रहीं हैं जल-थल में |

यहाँ 'च' और 'ल' वर्ण की आवृत्ति एक निश्चित क्रम में हुई है| अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

(2) यमक अलंकार- यमक अर्थात् 'युग्म'। जब काव्य में एक ही शब्द की दो या अधिक बार आवृत्ति होती है और अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं, वहाँ यमक अलंकार होता है| जैसे-

(अ) **कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।**

वा खाये बौराय नर वा पाये बौराय।।

यहाँ 'कनक' शब्द की दो बार आवृत्ति है। 'कनक' के दो अर्थ हैं- धतूरा तथा सोना, अतःयहाँ यमक अलंकार है।

(ब) **काली घटा का घमण्ड घटा** |

यहाँ 'घटा' शब्द की दो बार आवृत्ति है।प्रथम 'घटा' का अर्थ 'बादल' तथा दूसरे 'घटा' का अर्थ 'कम हो जाना' है, अतःयहाँ यमक अलंकार है।

(3) श्लेष अलंकार- श्लेष शब्द का अर्थ है- चिपका हुआ | जिस काव्यांश में एक शब्द से अधिक अर्थो का बोध होता है, किन्तु शब्द एक ही बार प्रयुक्त होता है वहाँ श्लेष अलंकार होता है | जैसे-

(अ) **माया महाठगिनि हम जानी।**

तिरगुन फाँस लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।

तिरगुन- (i) रज, सत, तम नामक तीन गुण।

(ii) रस्सी (अर्थातीनधागों की संगत), अतःश्लेष अलंकारहै।

(ब) **जो रहीम गति दीपक की कुल कपूत गति सोय।**

बारे उजियारे करे, बढ़े अँधेरो होय।।

'दीप' शब्द के दो अर्थ हैं- दीपक तथा संतान।

बारे = छोटा होने पर (संतान के पक्ष में), जलाने पर दीपक के पक्ष में।

बढ़े = बड़ा होने पर, बुझा देने पर, अतःश्लेष अलंकारहै।

अर्थालंकार-

जब किसी वाक्य में किसी भाषा का प्रयोग इस प्रकार से किया जाता है, कि उसमें अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न होता है, तब वहाँ पर अर्थालंकार होता है।

(1) **उपमा अलंकार-** उपमा अर्थात् तुलना या समानता | जहाँ किसी वस्तु अथवा प्राणी के गुण धर्म ,स्वभाव और शोभा को व्यक्त करने के लिए उसी के समान गुण धर्म वाली किसी अन्य प्रसिद्ध वस्तु अथवा प्राणी से उसकी तुलना की जाती है।तो वहाँ उपमा अलंकार होता है|

(1) उपमेय-वह शब्द जिसकी उपमा दी जाए।

(2) उपमान-वह शब्द जिससे उपमा या तुलना की जाए।

(3) समानता वाचक शब्द-जैसे, ज्यों, सम, सा, सी आदि।

(4) समान धर्म-वह शब्द जो उपमेय व उपमान की समानता को व्यक्त करने वाले होते हैं।

उदाहरण-

(1) (i) **हाय फूल सी कोमल बच्ची, हुई राख की ढ़ेरी** |

यहाँ उपमेय- बच्ची, उपमान- राख

समानता वाचक शब्द- सी ,साधारण धर्म- कोमल

इस पद्यांश में 'बच्ची' कीउपमा 'राख' से दी जा रही है।अतः उपमा अलंकार है।

(ii) **मधुकर सरिस संत, गुनग्राही।**

यहाँ उपमेय-संत, उपमान-मधुकर

समानता वाचक शब्द-सरिस

समान धर्म-गुनग्राही

संतों के स्वभाव की उपमा मधुकर से दी गई है।अतः उपमा अलंकार है।

(2) रूपक अलंकार- जिस काव्य पंक्ति में उपमेय और उपमान में एकरूपता अथवा दोनों में अभेद आरोप किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है | जैसे-

(i) **आए महंत बसंत।**

यहाँ बसंत पर महंत का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

(ii) **बंदौ गुरु पद पदुम परागा।**

इस पद्यांश में गुरुपद में पदुम (कमल) का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

(iii) **मैय्या मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों |**

इस पद्यांश में 'चन्द्रमा रूपी खिलौना' का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

(3) उत्प्रेक्षा अलंकार- यहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है।वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है |इसमें मानो, मनौ, जानो, जनहु, मनहु, ज्यों आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

उदाहरण- (i)**सोहत ओढ़ै पीत पट, स्याम सलोने गात।**
मनो नीलमनि सैल पर, आतप परयो प्रभात।।

अर्थात श्रीकृष्ण के श्यामल शरीर पर पीताम्बर ऐसा लग रहा है मानो नील पर्वत पर प्रभावकाल की धूप शोभा पा रही हो।

(ii) **मानो नेत्र कमल हैं** |

इस पद्यांश में 'नेत्रों की कमल' के समान दिखने की संभावना व्यक्त हो रही है उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(4) अतिशयोक्ति अलंकार- जहाँ किसी वस्तु,घटना या प्राणी का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए कि वह लोक सीमा को पार कर जाए तो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण- (i)**हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।**
लंका सगरी जरि गई,गए निशाचर भाग।।

इस पद्यांश में हनुमान की पूँछ में आग लगने के पहले ही सारी लंका का जलना और राक्षसों के भाग जाने का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया है, अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

(ii) **आगे नदियाँ पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार|**
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार ||

(5) मानवीकरण अलंकार-जहाँ कवि काव्य में भाव या प्रकृति को मानवीकृत कर दे, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।जैसे-

(i) **बीती विभावरी जागरी।**
अंबर पनघट में डुबो रहीं, तारा घट उषा नागरी।

यहाँ उषा (प्रातः) का मानवीकरण कर दिया गया है।उसे स्त्री रूप में वर्णित किया गया है, अतः मानवीकरण अलंकार है।

(ii) **तुम भूल गए क्या मातृ प्रकृति को**
तुम जिसके आँगन में खेले-कूदे,
जिसके आँचल में सोए जागे।

यहाँ प्रकृति को माता के रूप में मानवीकृत किया गया है, अतःमानवीकरण अलंकार है।

(iii) **मेघ आए बड़े बन-ठन के सवंर के |**

यहाँ मेघों की मेहमान के समान सजकर या बन-ठन कर आने की बात का मानवीकरण किया गया है, अतःमानवीकरण अलंकार है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न.1 जहाँ जड़-प्रकृति या चेतन पर मानवीय क्रियाओं का आरोप किया जाता है,वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

(क)श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) मानवीकरण (घ) अतिश्योक्ति

प्रश्न.2 'सजना है मुझे सजना के लिए |' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?

(क) श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) यमक (घ) अनुप्रास

प्रश्न.3 'रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून | पानी गए न उबरै मोती मानुस चून || इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?

(क)श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) यमक (घ) अनुप्रास

प्रश्न.4 'तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए |' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?

(क)श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) यमक (घ) अनुप्रास

प्रश्न.5 'चरण कमल बन्दौ हरिराई |' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?

(क)श्लेष (ख) रूपक
(ग) यमक (घ) अनुप्रास

सृजनात्मक लेखन

अनुच्छेद-लेखन

अनुच्छेद का अर्थ :-किसी भाव या विचार को व्यक्त करने हेतु सुगठित वाक्य समूह को अनुच्छेद कहते हैं| इसमें कोई भी वाक्य निरर्थक या अनावश्यक नहीं होता | एक ही अनुबंध (पैराग्राफ) में अपने विचारों को प्रस्तुत किया जाता है | अनुच्छेद में भाषा सरल , स्पष्ट और प्रभावशाली होनी चाहिए| अनुच्छेद शब्द अंग्रेजी भाषा के पैराग्राफ शब्द का हिंदी पर्याय है | विषय का आरंभ मुख्य विषय से करना चाहिए इसमे किसी विषय के किसी एक पक्ष पर ८०से१०० शब्दों में विचार व्यक्त किये जाते हैं|

अनुच्छेद लेखन के भाग :-

1. परिचय 2. प्रधानभाग 3. निष्कर्ष

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :-

१) अनुच्छेद लिखने से पहले रूपरेखा या संकेतबिंदु आदि बनाने चाहिए|
२) अनुच्छेद में भाषा सरल स्पष्ट और प्रभावशाली होनी चाहिए |
३) भाषा विषय के अनुरूप भावात्मक ,ओजस्वी और प्रवाहपूर्ण होती है |
४) एक ही को बार बार न दोहराएं |
५) अनावश्यक विस्तार से बचें लेकिन विषय से न हटें|
६) शब्द सीमा को ध्यान में रखकर ही अनुच्छेद लिखें|
७) विषय से संबधित सूक्ति अथवा कविता की पंक्तिऔं का भी प्रयोग कर सकते हैं|
८) रोचकता भी अनुच्छेद का अनिवार्य गुणहै |
९) अनुच्छेद कल्पनात्मक न होकर तथ्यात्मक अधिक होता है मगर विषय के अनुरूप उसमे यथावश्यक कल्पना का समावेश भी किया जा सकता है |

विशेष

पाठ्यक्रम के अनुसार अनुच्छेद की शब्द सीमा ८० से १०० शब्द निर्धारित की गयी है | अनुच्छेद लिखने के लिए चार संकेत- बिंदु दिए होते हैं |प्रत्येक बिंदु पर तीन या चार पंक्ति में अपनी बात पूर्ण करनी चाहिए |

निर्धारितअंकविभाजन-

- भूमिका - १अंक
- विषयवस्तु-३अंक
- भाषा - १अंक

उदाहरण :-

(क) मोबाइल फोन आज की आवश्यकता

संकेत बिंदु - मोबाइल फोन का महत्व, आवश्यक संचार साधन, सुविधाजनक, उपयोग में सावधानियां |

मोबाइल फोन ऐसा साधन है जिसने आज की दुनिया बदल डाली है | मोबाइल है तो सारा संसार आपके साथ चलता है | आप जब जिससे चाहें बात कर सकते हैं इसी खूबी के कारण मोबाइल फोन बच्चे बूढ़े सबका प्रिय हो गया है | यह आज का सबसे आवश्यक संचार साधन बन चूका है इसकी सुविधाएँ अन्नंत हैं यह असानी से आपकी जेब में आ जाता है ना किसी तार की जरुरत न कोई झंझट | इसके कारण आप कही भी बैठकर अपने प्रियजनों से संपर्क साध सकते हैं और परिवार का सुख-दुःख बाँट सकते हैं| व्यापारी, कारीगर ,व्यवसायी अपना काम धंधा बढ़ा सकते हैं| मोबाइल ने सड़कों पर बढ़ने वाली भीड़ को नियंत्रित कर लिया है जो काम पहले खुद आने- जाने से होता था अब वह एक मोबाइल कॉल से हो जाता है अतःयह सुविधाजनक है |परन्तु इसके खतरे भी हैं| यह कहीं भी बज उठता है अनेक बार गलत कॉलें आ जाती हैं| कई गलत मैसेज आ जाते हैं

अपराधी और उठाईगीर भी इसका दुरूपयोग कर सकते हैं| इसके लगातार उपयोग से कान और ह्रदय पर बुरा प्रभाव पड़ता है | इन खतरों से सावधान होने की आवश्यकता है |

(ख) कोरोना : लक्षण और बचाव

संकेत बिंदु- कोरोना संक्रम, लक्षण, शरीर पर प्रभाव, बचाव|

कोरोना एक घातक वायरस है| यह वायरस मनुष्य के श्वसन- तंत्र पर आक्रमण करता है| यह सबसे पहले आंख, नाक या मुँह के माध्यम से उसके गले में प्रवेश करता है और तीन चार दिनों तक उसके गले में बना रहता है, जिससे गले में खीच-खीच, खराश उत्पन होती है| इसी के साथ संक्रमित व्यक्ति में खांसी और जुकाम के लक्षण दिखाई देने लगते हैं| शरीर में संक्रमण ज्यों- ज्यों बढ़ता जाता है उसके फेफडो की क्षमता कम होती जाती है और व्यक्ति को साँस लेने में परेशानी होने लगती है |कुछ लोगों की आँखों में लाली और जलन भी होने लगती है| संक्रमित व्यक्ति बुखार से पीड़ित हो जाता है| कभी -कभी पेट दर्द, उल्टी, अतिसार आदि की परेशानी भी व्यक्ति को होने लगती है| यह जरुरी नहीं कि ये सभी लक्षण सभी संक्रमित व्यक्तियों में दिखाई दें| अधिकांश व्यक्तियों में सर्दी, जुकाम ,खांसी और छींक आना गले में खराश या दर्द होना या साँस लेने में परेशानी होना आदि लक्षण ही मुख्य रूप से दिखाई देते है| कुछ लोगों में इनमे से कोई भी लक्षण दिखाई नहीं देता| यहाँ यह बात भी उल्लेखनीय है कि सभी सर्दी-जुकामखांसी, गले का ख़राब होना बुखार या साँस लेने में परेशानी का होना कोरोना से संक्रमित होने का कारण नहीं है| यह सब लक्षण अन्य कारणों से भी हो सकते हैं| इसलिए इन लक्षणों के दिखाई देने मात्र से घबराना नहीं चाहिए| कोरोना संक्रमण संक्रमित वस्तुओं या व्यक्तिओं को छुने से फैलता है इसके संक्रमण से बचने के लिए मुह और नाक पर मास्क लगाना एक दुसरे से दो गज की दुरी बनाकर रखना और बार-बार साबुन से हाथ धोना आवश्यक है| "कोरोना से डरो ना, बचाव करो ना|"

(ग) उर्जा-संरक्षण

संकेत बिंदु- उर्जा-संरक्षण की आवश्यकता, आत्मनिर्भरता का उपाय, हमारी भूमिका, संरक्षण का उपाय|

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए यह परमावश्यक है कि उसके यहाँ उर्जा का अधिकाधिक उत्पादन किया जाए: क्योंकि उर्जा ही देश के विकास को गति प्रदान करती है उर्जा उत्पादन से भी अधिक आवश्यक है-उपलब्ध ऊर्जा का समुचित संरक्षण| उद्योगों को चलने के लिए ऊर्जा दो प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होती है-नवीकरणीय तथा परम्परागत| दोनों ही संसाधनों से उर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया अत्यंत लंबी तथा खर्चीली होती है| इसीलिए ऊर्जा का हमें आवश्यकता अनुसार ही प्रयोग करना चाहिए| आज जो देश आर्थिक विकास के शिखर पर है, उनका सर्वप्रमुख कारण उर्जा के क्षेत्र में उनकी आत्मनिर्भरता है| ऊर्जा की बचत करके ही हम लंबे समय तक अधिकाधिक कल-कारखाने चला सकते हैं, जिससे उत्पादन में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकेगी| औदयोगिक-उत्पादन की मात्रा पर ही किसी देश की प्रगति निर्भर करती है| हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ऊर्जा की बचत का दायित्व हम सभी का है| यदि हम छोटी-छोटी सावधानियाँ बरतें तो ऊर्जा -संरक्षण अथवा ऊर्जा की बचत के लिए अपनाए जाने वाले कुछ उपाय इस प्रकार हैं-बिजली का आवश्यकतानुसार प्रयोग, ऐसी तकनीक वाले उपकरणों का प्रयोग, जो काम ऊर्जा खपत करते हैं, निजी वाहनों के स्थान पर सार्वजनिक वाहनों का अधिक से अधिक प्रयोग आदि| वस्तुतः ऊर्जा की बचत एवं संरक्षण में ही हमारा भविष्य उज्वल सुरक्षित एवं संरक्षित है|

पत्र - लेखन

पत्र लेखन का इतिहास-

पत्र लेखन एक उपयोगी कला है| पत्र लिखने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है| यह परंपरा द्वापर युग से चली आ रही है जो आज तक विद्यमान है| सबसे पहले रुक्मणी ने अपनी सहायता के लिए कृष्ण को प्रेम पत्र लिखा था इसके बाद यह परंपरा आगे चलती गयी| पत्र अपने मन की भावना को वाणी देने का उत्तम साधन है| जीवन में सफल होने के लिए प्रभावी पत्र लेखन क्षमता होनी चाहिए|

पत्र लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें

१. पत्र की भाषा सरल सुबोध एवं स्पष्ट होनी चाहिए |
२. पत्र लिखने का मूल उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए |
३. पत्र के प्रेषक का नाम और पता (Sender's address)तथा पाने वाले का नाम और पता (Receiver's address) का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए |
४. पत्र लेखन में शिष्टता बनाए रखनी चाहिए |
५. पत्रों में आत्मीयता होनी चाहिए |
६. पत्र संक्षिप्त और सटीक होना चाहिए |
७. पत्र लिखने के बाद उसे एक बार अवश्य पढ़ लेना चाहिए |

पत्र लेखन में आंतरिक अंक- विभाजन

पत्र लेखन के लिए परीक्षा में पांच अंक निर्धारित है | इन पांच अंको का विभाजन इस प्रकार है-

प्रारम्भ और अंत की औपचारिकताएँ	१+१=२
विषयवस्तु	२ अंक
भाषा शुद्धता	१ अंक

पत्र- लेखन

यद्यपि आज दूरसंचार के साधनों के क्षेत्र में जबरदस्त क्रांति आई है और दूरभाष ,फैक्स ,मोबाइल , इन्टरनेट आदि साधनों का उपयोग हो रहा है ,तथापि सर्वधारण के लिए पत्रों की महता को नाकारा नहीं जा सकता |आज भी समाज के विभिन्न वर्ग अपनी प्रियजनों, माता-पिता तथा सगे संबंधियों से संपर्क करने के लिए पत्रों का ही सहारा लेते हैं इसी के साथ विभिन्न कार्यालयों ,संस्थाओं आदि में कार्यालयी कार्यवाही पत्रों के माध्यम से ही संचालित होती है |इस प्रकार पत्र-लेखन की उपयोगिता और आवश्यकता सर्वमान्य है |

पत्रकेप्रकार-

१. औपचारिक-पत्र - कार्यालय, अधिकारी आदि को |
२. अनौपचारिक-पत्र - रिश्तेदारों, मित्रों आदि को |

औपचारिकपत्र-

औपचारिक पत्र उन लोगों को लिखा जाता है ,जिनसे हमारा व्यक्तिगत परिचय नहीं होता है | इसमें व्यक्ति का नहीं बल्कि उसके पद का महत्व होता है | इसके अंतर्गत निम्न प्रकार के पत्र आते हैं-

१. प्रार्थना पत्र
२. आवेदन पत्र
३. शिकायती पत्र
४. संपादकीय पत्र
५. व्यावसायिक पत्र
६. कार्यालयी पत्र

औपचारिक पत्र का प्रारूप (प्रार्थनापत्र)

प्रेषक अ. ब. स.

(पता)..................

....

सेवा में,

प्राचार्य / प्राचार्या

(पता) ....

विषय ....(सम्बंधित विषय का उल्लेख)

महोदय / महोदया,

……
……
………
सधन्यवाद ,
आपका आज्ञाकारी शिष्य /शिष्या
…………………………
स्थान :
दिनांक :

नमूना प्रार्थना पत्र

-आपके पिताजी का स्थानान्तरण जयपुर हो गया है | अतः जयपुर के विद्यालय में प्रवेश लेने के लिए आपको स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र की आवश्यकता है | अपने विद्यालय के प्राचार्य को इस आवशयक कार्य के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए |

सेवामें ,
श्रीमान प्राचार्य,
केंद्रीय विद्यालय-रायपुर

विषय-स्थानान्तरण प्रमाण पत्र प्राप्त करने के सम्बन्ध में |

महोदय ,
निवेदन है कि मेरे पिताजी का स्थानान्तरण जयपुर हो गया है |पारिवारिक परिस्थिति वश मुझे जयपुर के ही किसी विद्यालय में प्रवेश लेना पड़ेगा |अतः मुझे स्थानान्तरण प्रमाण पत्र की आवश्यकता है |मेरी ओर विद्यालय का कुछ भी देय शेष नहीं है |आशा है , आप यथा शीघ्र स्थानान्तरण प्रमाण पत्र दिलाने का कष्ट करेंगे , ताकि मै समय से प्रवेश प्राप्त कर सकूँ |
आपका आज्ञानुवर्ती ,
मोहन सिंह
कक्षा १० (अ)
दिनांक : १४ जनवरी २०२१

नमूना सम्पादकीय-पत्र

अपने नगर में व्याप्त बिजली कटौती से उत्पन्न समस्याओं का उल्लेख करते हुए किसी लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र के संपादक को लिखिए |

प्रेषक,
अभिनव शर्मा ,
सी - ६८०, मानसरोवर कॉलोनी, जयपुर |
दिनांक १४ जनवरी, २०२१
सेवा में,
संपादक महोदय ,
दैनिक भास्कर , जयपुर |
विषय: बिजली की कटौती से उत्पन्न समस्याओं के संबंध में |
महोदय ,

मै आप के लोकप्रिय पत्र के माध्यम से नगर में बिजली से कटौती से उत्पन्न समस्याओं की ओर सरकार और बिजली विभाग के अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ| भीषण गर्मी के मौसम में बिजली की निरंतर हो रही कटौती से जनता अत्यंत त्रस्त है |बिजली जाते ही सारा जन-जीवन अस्त-ब्यस्त सा हो जाता है| शिक्षा, व्यवसाय, पारिवारिक जीवन, बैंक और सरकारी कार्यालय बिजली के बिना पंगु से हो जाते है | बिजली कटौती का कोई निश्चित समय नहीं है| मेरा विद्युत् प्रशासन से अनुरोध है कि बिजली कटौती यदि करना आवश्यक भी हो तो उसका समय सुनिश्चित अवश्य किया जाना चाहिए|

धन्यवाद् सहित,

अभिनव शर्मा

व्यावसायिक पत्र-

स्वयं को एक पुस्तक विक्रेता मानते हुए स्टूडेंट एडवाइजर पब्लिकेशन्स को पत्र लिखें, उनके द्वारा कक्षा ९, १०, ११ तथा १२ के लिए प्रकाशित पुस्तकों का सूचि-पत्र तथा कमीशन के बारे में विवरण मंगाएं |

प्रेषक ,

धनंजय शर्मा ,

शर्मा बुक डिपो, कृष्णानगर , अलवर (राज.)

दिनांक १४ जनवरी २०२१

सेवा में ,

प्रबंधक महोदय ,

स्टूडेंट एडवाइजर पब्लिकेशन्स

डी.१६, इंडस्ट्रियल एरिया, मथुरा (उ.प्र.)

महोदय,

मैंने कुछ समय पूर्व ही दुकान प्रारम्भ की है| मैंने आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के श्रेष्ठस्तर और लोकप्रिय के बारे में सुना है| मैं अपनी दुकान के माध्यम से अपने नगर के छात्रों को आपकी पुस्तकों से लाभान्वित करना चाहता हूँ| कृपया आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का सूचि-पत्र तथा विक्रेता को दिए जाने वाले कमीशन का विवरण शीघ्र भेजने का कष्ट करें|

भवदीय ,

धनंजय शर्मा

<u>अनौपचारिक-पत्र</u>

इन पत्रों को व्यक्तिगत या पारिवारिक पत्र भी कहा जाता है| इन पत्रों को अपने मित्रों, रिश्तेदारों ,सगे-सम्बन्धियों तथा शुभेछु व्यक्तियों को लिखे जाते हैं| इन पत्रों में आत्मीयता, निकटता, तथा घनिष्ठ्ता का भाव समाया रहता है, जिनमें घरेलू और निजतापूर्ण बातों काउल्लेख रहता है|

इसके अंतर्गत निम्न प्रकार के पत्र आते हैं-

१. धन्यवाद् पत्र
२. बधाई पत्र
३. शुभकामना पत्र
४. निमंत्रण पत्र
५. सांत्वना पत्र
६. सुझाव पत्र
७. अन्य पत्र

<u>पत्र लिखते समय ध्यान रखने योग्य कुछ बिंदु-</u>

१. पत्र लेखक तथा प्रेषक की उम्र, योग्यता, पद आदि का ध्यान रखना चाहिए |
२. पत्र सारगर्भित होना चाहिए |

३. पत्र सुलेख में लिखा होना चाहिए |

४. पत्र में सरल भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए |

५. पत्र में विषय,स्थान ,दिनांक,भेजने वाले का नाम आदि का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए |

६. पत्र में काट-छांट नहीं होना चाहिए |

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप-

- लिखने वाले का पता
- या
- परीक्षा भवन
- क.ख.ग.
- ....शहर
- दिनांक ....
- संबोधन...................
- अभिवादन................
- पत्र की विषयवस्तु
  ....
  ....पत्र की समाप्ति |
- पत्र पाने वाले के साथपत्र भेजने वाले का संबंध
- भेजने वाले का नाम (या) अ.ब.स.

<u>नमूना बधाई पत्र-</u>

अपने मित्र को परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई देते हुए एक पत्र लिखिए |

सुधांशु शर्मा

प्रीति विहार, नई दिल्ली

दिनांक १४ जनवरी, २०२१

प्रिय मित्र सर्वेश,

सस्नेह नमस्कार ,

बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान पाने तथा विद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो | तुम्हारे अथक परिश्रम और प्रतिभा का मीठा फल तुम्हे मिलना ही था | मुझे विश्वास है कि तुम भविष्य में भी ऐसे ही कीर्तिमान स्थापित करते रहोगे |

अपने माता- पिता को मेरी ओर से चरण स्पर्श कहना |

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

सुधांश

<u>नमूना निमंत्रण पत्र-</u>

अपने बड़े भाई के विवाह पर अपने मित्र को निमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए |

नलिनी भास्कर

प्रोफ़ेसर कालोनी, आगरा

दिनांक १४ जनवरी, २०२१

प्रिय सहेली सुचित्रा,

सप्रेम स्मरण,

आशा हैं तुम सपरिवार स्वस्थ और सानंद होंगी | तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भाई श्री प्रकाश भास्कर का शुभ-विवाह बरेली निवासी श्री रविशंकर शुक्ल की सुपुत्री गरिमा से दिनांक ५फ़रवरी२०२१ को होना निश्चित हुआ है | इस मंगलमयी बेला पर तुम सपरिवार सादर आमंत्रित हो | आशा है तुम मुझे निराश नहीं करोगी | अपने माता-पिता को मेरी ओर से चरण स्पर्श कहना |

मुद्रित निमंत्रण पत्र संलग्न है |

तुम्हारी सहेली

नलिनी भास्कर

सुझावपत्र

स्वयं को अनुपमा 'भारतीय', महाबलीपुरम-निवासी मानते हुए कोलकाता में अध्ययनरत अपनी अस्वस्थ बहिन अनुजा को डाक्टरी इलाज के साथ व्यायाम करने की सलाह देते हुए एक पत्र लिखिए |

महाबलीपुरम

दिनांक १४ जनवरी २०२१

प्रिय बहन अनुजा,

सदा प्रसन्न रहो!

तुम्हारे पत्र से पता चला कि तुम आजकल बीमार चल रही हो| तुम्हारे स्वाश्थ्य को लेकर मै बहुत चिन्तित हूँ| तुम तो जानती हो कि जब से तुम्हारे जीजा जी का यहाँ से स्थानान्तरण हुआ है, वे तभी से अस्वस्थ हैं| वे कह रहे थे , अनुजा को यहीं बुला लो| यदि तुम्हारे अध्ययन में व्यवधान नहीं पड़े तो कुछ दिन के लिए यहाँ आ जाओ |तुम अपने अद्ययन के प्रति सदैव ही सजग रही हो| उसके आगे तुम अपने स्वास्थय को भी भूल जाती हो, पर बहन स्वस्थ रहना भी आवश्यक है| अध्ययन के साथ अपने स्वास्थ का भी ध्यान रखो तथा किसी योग्य डाक्टर से परामर्श लेकर उचित इलाज कराना| पूर्णतःस्वस्थ हो जाने के बाद समय निकाल कर थोडा व्यायाम कर लिया करो| प्रातः उठकर छात्रावास के बगीचे में ही घूम लिया करो| उससे बहुत अधिक लाभ मिलेगा| शेष फिर कभी| यहाँ सभी ठीक है| अपने स्वास्थ का समाचार शीघ्र लिखना, जिस से मेरी चिंता दूर हो सके|

तुम्हारी दीदी .

अनुपमा' भारतीय'

विज्ञापन-लेखन

विज्ञापन शब्द' ज्ञापन-

(सार्वजनिक सूचना) शब्द में वि 'उपसर्ग लगाने से बना है जिसका अर्थ है '-विशेष जानकारी देना|'

यह जानकारी उत्पादित वस्तुओं ,सेवाओं आदि से जुड़ी होती है |विज्ञापन में वस्तु के गुणों को बड़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाताहै,जिससे उपभोक्ता लालायित अथवा आकर्षित हो और इन्हें खरीदने के लिए विवश हो जाए) विज्ञापन के कारण उत्पादकों को अपनी वस्तुओं के अच्छे दाम मिल जाते हैं| तो वहीं उपभोक्ता को वस्तुओं की जानकारी,तुलनात्मक दाम एवं चयन का विकल्प मिल जाता है आजकल टी.वी,.रेडियों के कार्यक्रम,समाचारपत्र,पत्रिकाएँ,भवनों की दीवारें विज्ञापनों से रंगी दिखाई पड़ती है|

"किसी वस्तु ,सेवा को बेचने के लिए जन संचार माध्यम से किया गया प्रचार-प्रसार विज्ञापन (Advertisement) कहलाता है"|

विज्ञापन के प्रकार-

विज्ञापन मुख्यतः छः प्रकार के होते हैं-

1. स्थानीय विज्ञापन
2. राष्ट्रीय विज्ञापन
3. वर्गीकृत विज्ञापन
4. औद्योगिक विज्ञापन
5. जन कल्याण से सम्बन्धित विज्ञापन
6. सूचनाप्रद विज्ञापन

<u>विज्ञापन लेखन से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण बातें-</u>

- विज्ञापन लिखते समय सबसे पहले जरुरी जानकारी को एकत्रित कर लेना चाहिए|
- सर्वप्रथम एक बाक्स-सा बनाकर ऊपर मध्य में विज्ञापित वस्तु का नाम मोटे अक्षरों में लिखना चाहिए|
- दाएं एवं बाएँ किनारों पर सेल,धमाका,खुशखबरी,खुल गया जैसे लोक लुभावने शब्दों को लिखना चाहिए|
- कुछ प्रेरक वाक्य -आज ही खरीदिए ,!सोचिए मत ,!जल्दी कीजिए ,!सुनहरा मौका ,!स्टॉक सीमितहै ,!सफलता की गारंटी,!पहले आओ,पहले पाओ !आदि का प्रयोग करें|
- बाई ओर मध्य में विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख करें|
- ऊपर ही या नीचे जगह देखकर कोई छोटी-सी तुकबंदी भी करें जिससे पढ़ने वाला आकर्षित हो जाए|
- कम से कम शब्दों में विज्ञापन होना चाहिए|
- शब्दों में गागर में सागर भरने की क्षमता होनी चाहिए|
- भाषा सरस,रोचक तथा प्रभावपूर्ण होनी चाहिए |भाषा काव्यात्मक रहे तो बेहतर रहेगा|
- बॉक्स के दाहिनी तरफ विज्ञापित वस्तुका आकर्षक चित्र बनाएँ|
- विज्ञापन में सबसे नीचे आवश्यकतानुसार पता,मोबाइल नंबर आदि लिखें|
- प्रभावशाली विज्ञापन बनाने के लिए रंगीन पेंसिल का प्रयोग करें |

<u>अंकविभाजन-</u>

विषयवस्तु	-	2 अंक
प्रस्तुति	-	2 अंक
भाषा	-	1 अंक

<u>नमूना-</u>

- **50-25 शब्दों में सैमसंग मोबाइल के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए|**

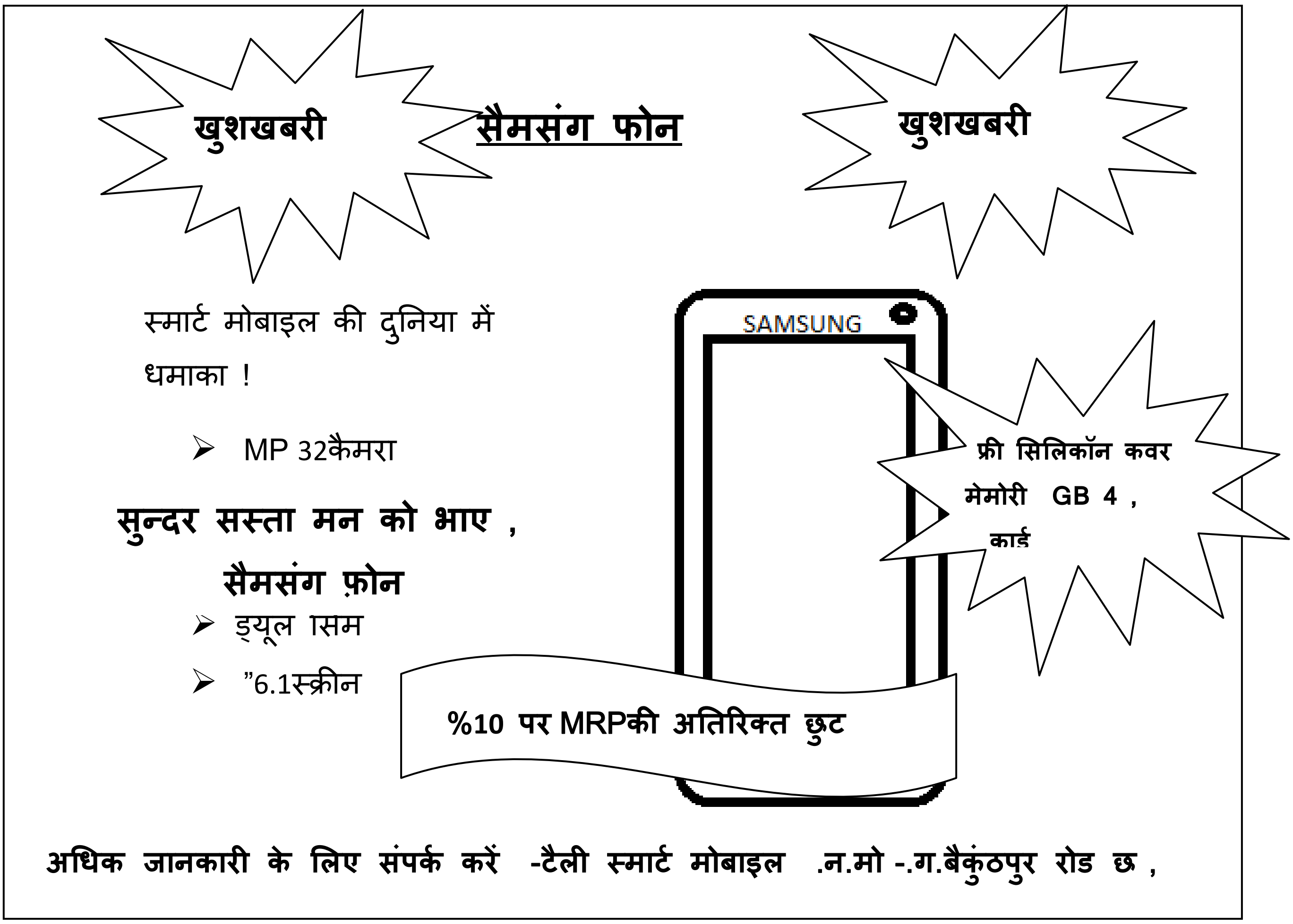

नए खुले आनंद योग केंद्र के लिए 50-25 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए|

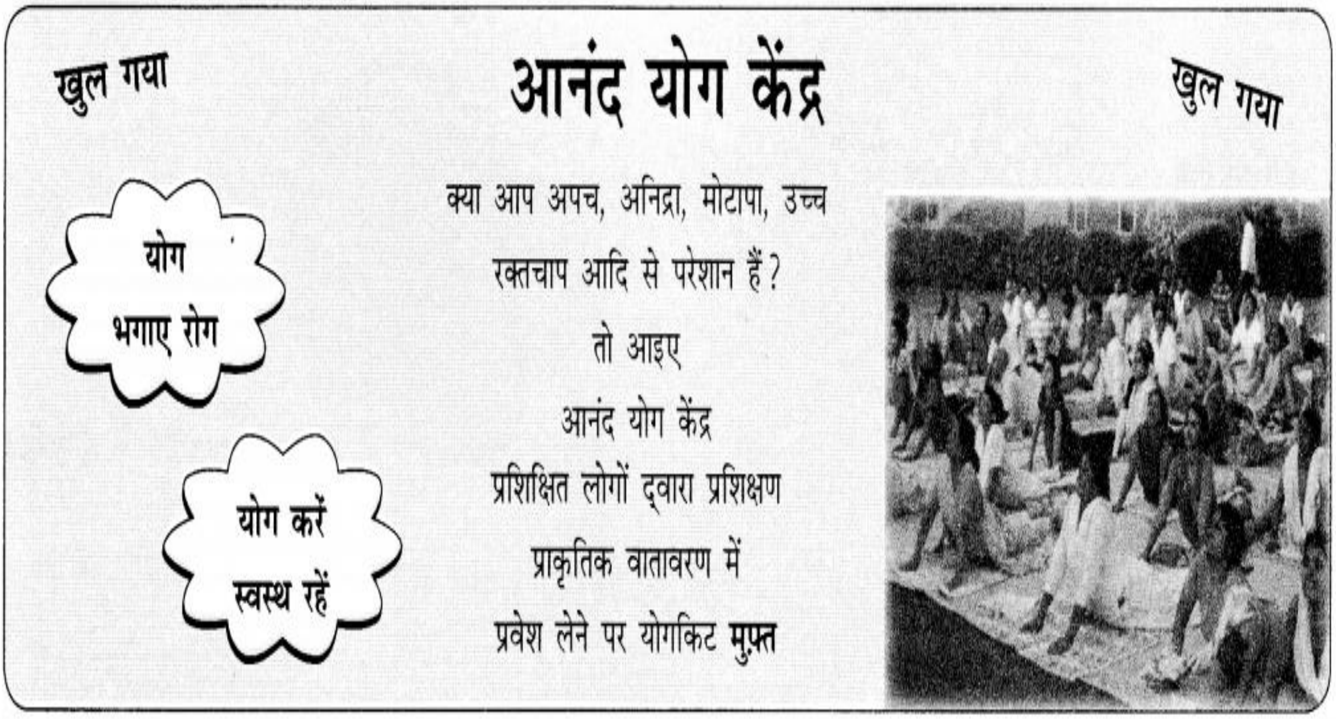

पर्यावरणकेप्रतिजागरूकताबढ़ानेकेलिएलगभग 50-25 शब्दोंमेंएकविज्ञापनतैयारकीजिए

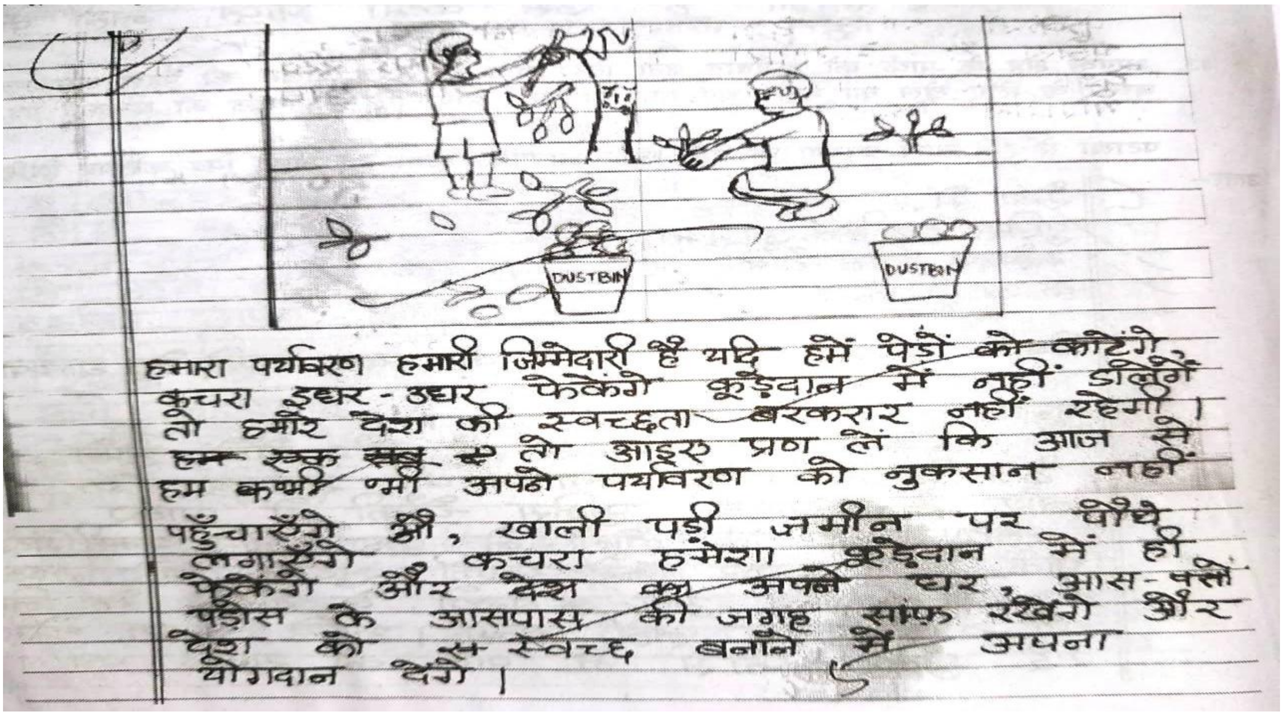

अपने विद्यालय की संस्था' पहरेदार 'की ओर से जल का दुरुपयोग रोकने का आग्रह करते हुए लगभग 50शब्दों में एक विज्ञापन का आलेख तैयार कीजिए

<u>अभ्यास प्रश्न-</u>

- सामाजिक जागरूकता के लिए 50-25 शब्दों में एक विज्ञापन बनाएँ |विषय-बेटी बचाओ ,बेटी पढाओ|
- विद्यालय के वार्षिक खेल दिवस हेतु आकर्षक विज्ञापन बनाइए जिसमे अभिभावकोंको आमंत्रित किया गया हो|
- विद्यालय की कलाकृति में कुछ पेंटिंग्स बिक्री के लिए उपलब्ध है| इसके लिए 50 शब्दों में विज्ञापन लिखिए |
- 'कोरोना टीकाकरण 'अभियान हेतु जागरूकता लाने के लिए एक विज्ञापन 50-25 शब्दों में तैयार कीजिए |

<u>संदेश-लेखन</u>

सन्देश शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है जिसका अर्थ है- पैगाम,खबर या समाचार प्राप्त करना|किसी उद्देश्य से मौखिक,लिखित या सांकेतिक महत्वपूर्ण बात को संदेश कहते हैं |

"जब किसी व्यक्ति या समूह द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को किसी सूचना ,जानकारी या विचारों को लिखित माध्यम से दिया जाता है तो उसे लिखित सन्देश कहते हैं |"

आज संदेश भेजने के बहुत अच्छे माध्यम व्हाट्सऐप ,मैसेंजर ,फेसबुक ,ट्विटर ,ई.मेल ,इन्स्टाग्राम आदि सोशल मिडिया प्लेटफार्म है |

<u>संदेश के प्रकार-</u>

1. **<u>औपचारिक संदेश-</u>**यह संदेश किसी अधिकारी,किसी कार्यालय के कर्मचारी या आम जनमानस के लिए सार्वजनिक रूप से लिखे जा सकते हैं | यह सार्वजनिक संदेश है | यदि संदेश किसी नेता या अभिनेता द्वारा दिया जाता है तो यह आम लोगों को प्रभावित करने के उद्येश्य से लिखा जाता है |
2. **<u>अनौपचारिक संदेश-</u>**अनौपचारिक संदेश या व्यक्तिगत संदेश अपने परिजनों,किसी करीबी को कोई सूचना देने के लिए लिखा जाता है | (मित्र,रिश्तेदार एवं परिजन आदि|)

- **संदेश लेखन के प्रकार-**
  - शुभकामना व बधाई संदेश
  - पर्व त्यौहार पर दिए जाने वाले संदेश
  - शोक संदेश
  - व्यक्तिगत संदेश
  - समाजिक संदेश
  - मिश्रित संदेश

शु

शुभकामनाएं व बधाई संदेश -

यह संदेश मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जन्मदिन,सालगिरह,सफलता,कर्मचारियों की पदोन्नति होने पर भेजे जाने वाले संदेश को शुभकामना संदेश कहते हैं |

- **पर्व त्यौहार पर दिए जाने वाले संदेश-** इस तरह के संदेश विशेष पर्वों व त्यौहारों के समय लोग एक दूसरे को भेजते हैं | जैसे-दीपावली,होली,रमजान,ईद,क्रिसमस व स्वतन्त्रता दिवस आदि पर दिए जाने वाला संदेश |
- **शोक संदेश-** ऐसे संदेश किसी व्यक्ति की पुण्यतिथि या मृत्यु पर लोगो को भेजे जाते हैं |
- **व्यक्तिगत संदेश-** परिजनों को बधाई व शुभकामना, कहीं आने-जाने का संदेश या किसी अन्य तरह का संदेश जो सिर्फ परिजनों को दिया जाता है |
- **सामाजिक संदेश-** धार्मिक या सामाजिक कार्यक्रमों से जुड़े आयोजनों के सन्दर्भ में दिए जाने वाले संदेश| जैसे-बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ,जल सरंक्षण व पर्यावरण दिवस आदि पर
- **मिश्रित संदेश-** मिश्रित संदेश में जैसे वर्तमान समय में चल रही कोरोना महामारी,डेंगू,मलेरिया,बाढ़,भूकंप या देश से जुड़ा कोई और संदेश |

- **<u>संदेश लेखन से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण बातें</u>-**
  - संदेश लेखन करते समय सर्वप्रथम एक बॉक्स बनाएं,बॉक्स के भीतर ही संदेश लिखें |
  - सबसे ऊपर बीच में संदेश का शीर्षक लिखें | उसके नीचे बाई ओर दिनांक और इसी के समानांतर यानी इसी के सीध में दाई ओर समय अवश्य लिखें |
  - जहाँ दिनांक लिखेंगे उसके नीचे, जिसे संदेश लिखना है उसका संबोधन (प्रियमित्र, प्यारे देशवासियों आदि) लिखकर संदेश लिखना प्रारम्भ करेंगे |
  - अंत में बाई ओर सबसे नीचे संदेश लिखने वाले का नाम लिखा जाना चाहिए |
  - संदेश की विषय वस्तु 30-40 शब्दों में होनी चाहिए |
  - संदेश स्पष्ट,कम से कम शब्दों में और सरल भाषा में लिखना चाहिए |
  - संदेश विषय से सम्बन्धित लिखें,व्यर्थ की बातों को लिखने से बचें|
  - यदि कविता,श्लोक,दोहे,शायरी की आवश्यकता हो तो प्रयोग कर सकते हैं |

- **अंक विभाजन-**

रचनात्मक प्रस्तुति -	2 अंक
विषयवस्तु -	2 अंक
भाषा -	1 अंक

प्रारूप- संदेश(शीर्षक)

दिनांक............ समय

सम्बोधन..........

मुख्य भाग ....

....

....

अपना नाम

अपने पुत्र को जन्मदिन की शुभकामनाएँ देते हुए 30-

दिनांक – 19 नवम्बर 2020

समय – 5:00 am

प्रिय बेटा अभिनय

तुम्हे तुम्हारे जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं भगवान् से प्रार्थना करती हूँ कि वह तुम्हे निरोग व् लम्बी आयु प्रदान करें और तुम अपने जीवन में हर वो मुकाम हासिल करे जो तुम चाहते हो |

ढेर सारा प्यार व आशीर्वाद

तुम्हारी माँ

अपने दादी जी के निधन पर 40-30 शब्दों में एक संदेश लिखिए|

वसंत पंचमी के अवसर पर अपने मित्र को बधाई संदेश लिखिए|

- **<u>अभ्यासप्रश्न</u>-**

❖ अपने मित्र के भारतीय टीम में चयन होने पर शुभकामना संदेश 40-30 शब्दों में लिखिए|

❖ आपकी माँ घर पर नहीं है और आपको बाहर मित्र के घर जाना है | अपनी माँ को 40-30 शब्दों में संदेश लिखिए|

❖ होली के त्यौहार पर मित्र को शुभकामना देते हुए 40-30 शब्दों में एक संदेश लिखिए|

❖ नववर्ष की शुभकामना देते हुए 40-30 शब्दों में एक संदेश लिखिए|

❖ प्राचार्य जी द्वारा कोविड 19-महामारी के कारण विद्यालय बंद रहने हेतु 40-30 शब्दों में संदेश लिखिए|

सूरदास के पद

सूरदास

सूरदास का जन्म 1478 में हुआ था।

इनका जन्म मथुरा के रूनकता रेणुका जगह पर हुआ था। इनका जन्म दिल्ली के पास सिही माना जाता है। वे मथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट पर रहते थें।

इनकी मृत्यु 1583 में परसौली में हुआ था। उनके तीन ग्रंथ थे- **सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावाली**। जिसमें सबसे लोकप्रिय सूरसागर ही हुआ।

सूरदास **'वात्सल्य'** और 'श्रृंगार' के श्रेष्ट कवि माने जाते हैं।

उनकी कविता ब्रजभाषा में लिखी हुई है। यहाँ सूरसागर के भ्रमरगीत से चार पद लिए गए हैं।

मथुरा जाने के बाद स्वयं न लौटकर उद्धव के जरिए गोपियों के पास श्रीकृष्ण ने संदेश भेजा था। उद्धव निर्गुण ब्रह्म एवं योग का उपदेश देकर गोपियों के विरह वेदना को शांत करने का प्रयास किया लेकिन गोपियाँ नहीं मानी। वह ज्ञान मार्ग के बजाय प्रेम मार्ग को पसंद करती थी। इसलिए उन्हे उद्धव का संदेश पसंद नहीं आया। तभी वहाँ एक भौंरा यानी भ्रमर उड़ता हुआ आ गया, गोपियों ने व्यंग्य के द्वारा उद्धव से अपने मन की बातें कहीं। अर्थात तभी गोपियाँ ने भ्रमर के बहाने उद्धव पर व्यंग वाण छोड़ें। इसलिए उद्धव और गोपियों का संवाद '**भ्रमरगीत'** नाम से प्रसिद्ध है।

पहले पद में गोपियों कि यह शिकायत वाजिब लगती है कि जब उद्धव स्नेह के धागे से बंधे रहते तो वो विरह के वेदना को अनुभव नही कर पाते। उद्धव, श्रीकृष्ण के पास रहने के बावजूद भी उन्हें प्रेम की पीड़ा का एहसास नहीं होता है।

दूसरे पद में गोपियाँ यह स्वीकार करती है कि उनके मन की अभिलाषाएँ मन में हीं रह गई। कृष्ण के लिए उनके प्रेम की गहराई को प्रकट करती है। **तीसरे पद** में वे उद्धव की योग साधना को कड़वी-ककड़ी जैसा बताकर अपने एकता वाले प्रेम के विश्वास को प्रकट करती हैं। **चौथे पद** में उद्धव को ताना मारती है कि कृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है और अंत में गोपियों द्वारा उद्धव को प्रजा की हित याद दिलाया जाना सूरदास की लोकधार्मिता को दर्शाता हैं

पद

(1)

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी में पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

भावार्थ- इस पद में गोपियाँ श्री कृष्ण के मित्र से कहती है कि तुम बहुत भाग्यशाली हो जो अपने मित्र श्री कृष्ण के पास रहकर भी उसके प्रेम को नहीं जान पाए। उनसे प्रेम नहीं कर पाए। नही तो आपको भी उनसे दूर होने की दर्द सहन करना होता। आप बिल्कुल पानी में खिले कमल के पत्ते की तरह है जो पानी के भितर रहकर भी अछुते रहते हैं। जिस तरह तेल की गगरी को अगर पानी में डालकर निकाले फिर भी कुछ न हो पाए यानी तब भी वह गीला न हो। बिल्कुल आप वैसे ही है। जो श्री कृष्ण के इतने पास होकर भी उनके प्रेम से अंजान है। उनका प्रेम आपको छु नहीं पाया है। प्रेम की नदी में आप अपने पैर भी नही डुबोया और नही उन पर नजर डाली। लेकिन हम गोपियाँ तो अबला है। श्री कृष्ण के प्रेम में इस तरह चिपट गए। जैसे गुड़ से चिटियाँ लिपट जाती है और प्राण खो देती है।

(2)

मन की मन ही माँझ रही।

कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।

अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।

अब इन जोग सँदेसनि सुनि सुनि, बिरहिनि बिरह दही।

चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।

'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।

भावार्थ- इस पद में गोपियाँ कहती है कि हमने अपने मन की बात मन में ही रख लिए। लेकिन उद्धव आप जो संदेश लेकर आए हैं वह तो ठीक है पर अपनी मन की बात से नहीं कह पाएँगे। क्योंकि अपनी मन की बात आपको कहना उचित नहीं मानतें। हम गोपियाँ ये सोंचकर अपने मन में बातें रखी थी कि कभी श्री कृष्ण वापस लौटकर आऐंगें तो हम उन्हें अपनी मन की बात बताएँ। लेकिन इतना समय बित गया वो नहीं आए और श्री कृष्ण ने जो संदेश भेजा, उससे हम गोपियाँ और दुःखी हो गए। उन्होंने ये संदेश भेजकर आग में घी डालने का काम किया है। ऐसे परिस्थति में हम अपने रक्षक को बुलातें है सहायता के लिए लेकिन यहाँ तो हमारे रक्षक ही हमारे दुःख का कारण बनें हैं। हम गोपियाँ चाहते हैं कि हमें प्रेम के बदले प्रेम मिले। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अब हम अपनी मरयादा पार कर रहें हैं। हम अपने दिल कि बात नहीं बताना चाहतें हैं लेकिन अब हम बतातें हैं कि हमें कितना तकलीफ हो रही है।

(3)

हमारैं हरि हारिल की लकरी।

मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।

जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह कान्ह जकरी।

सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।

सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।

यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपो, जिनके मन चकरी।।

भावार्थ- इस पद में गोपियाँ कहती है कि श्री कृष्ण हमारे लिए हारिल कि लकड़ी है। जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पैरों में दबाई लकड़ी को नहीं छोड़ता, उसी प्रकार हमने मन, क्रर्म, वचन, नंद सभी से श्री कृष्ण को अपना माना है। हमने जागते, सोते, सपने में, दिन में, रात में हर समयय में मेरे रोम-रोम में कान्हा ही कान्हा है सिर्फ कान्हा यानी श्रीकृष्ण। इसलिए जो आप हमारे लिए संदेश लाए हैं वो कड़वी ककड़ी के समान है। हमें कृष्ण के प्रेम का लत लग चुका है उनका प्रेम का रोग इसलिए आपका कुछ भी कहने से हम अपने प्रेम पर रोक नहीं लगा सकतें। इसलिए आप ये संदेश उन्हें जाकर दिजिए जो चंचल है। यानी जिन्हे अलग-अलग चीजें पसंद आ जाती है।

(4)

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।

समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।

इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।

बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।

ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।

अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।

ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।

राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।

भावार्थ- इस पद में गोपियाँ कहती है कि श्री कृष्ण वहां जाकर राजनीति पढ़ ली है। इसलिए वह अपना फायदा नुकसान देखकर कोई कार्य करते हैं। क्योंकि वो तो पहले से ही चालाक थे और वो वहाँ मथुरा

जाकर बहुत से ग्रंथ पढ़ लिए हैं। गोपियाँ सारी बातें तो भौंरा से कह रही है पर सभी अपने आसपास के लोगों को सुनाकर कह रही हैं। अब श्री कुष्ण की बुद्धि बहुत बढ़ गई है। अब तो चालाक हो गए हैं इसलिए अपना फायदा नुकसान देखकर हीं कोई काम करतें हैं। इसलिए वो हमारे लिए ये संदेश भेजा है पर आप मथुरा जाकर श्री कृष्ण को कहिएगा कि वो साथ में हमारा मन भी ले गए। जिसे वापस कर दें। अब श्री कृष्ण तो मथुरा के राजा हैं और राजा का कार्य होता है। अन्याय न करें पर वो तो हमारे साथ हीं अन्याय कर रहें हैं। इसलिए कि वो हमें न चाहकर किसी और को चाह रहें हैं।

<u>अभ्यास प्रश्न</u>

प्रश्न 1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर- गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में वक्रोक्ति है। वे प्रत्यक्षरूप में प्रशंसा कर रही हैं किंतु वास्तव में कहना चाह रही हैं कि तुम बड़े अभागे हो कि प्रेम का अनुभव नहीं कर सके। न किसी के हो सके, न किसी को अपना बना सके। तुमने प्रेम का आनंद जाना ही नहीं। यह तुम्हारा दुर्भाग्य है।

प्रश्न 2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर- उद्धव के व्यवहार की तुलना दो वस्तुओं से की गई है

- कमल के पत्ते से जो पानी में रहकर भी गीला नहीं होता है।
- तेल में डूबी गागर से जो तेल के कारण पानी से गीली नहीं होती है।

प्रश्न 3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर-गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं ।

1. उन्होंने कहा कि उनकी प्रेम-भावना उनके मन में ही रह गई है। वे न तो कृष्ण से अपनी बात कह पाती हैं, न अन्य किसी से।
2. वे कृष्ण के आने की इंतज़ार में ही जी रही थीं, किंतु कृष्ण ने स्वयं न आकर योग-संदेश भिजवा दिया। इससे उनकी विरह-व्यथा और अधिक बढ़ गई है।
3. वे कृष्ण से रक्षा की गुहार लगाना चाह रही थीं, वहाँ से प्रेम का संदेश चाह रही थीं। परंतु वहीं से योग-संदेश की धारा को आया देखकर उनका दिल टूट गया।
4. वे कृष्ण से अपेक्षा करती थीं कि वे उनके प्रेम की मर्यादा को रखेंगे। वे उनके प्रेम का बदला प्रेम से देंगे। किंतु उन्होंने योग-संदेश भेजकर प्रेम की मर्यादा ही तोड़ डाली।

प्रश्न 4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर-श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ पहले से विरहाग्नि में जल रही थीं। वे श्रीकृष्ण के प्रेम-संदेश और उनके आने की प्रतीक्षा कर रही थीं। ऐसे में श्रीकृष्ण ने उन्हें योग साधना का संदेश भेज दिया जिससे उनकी व्यथा कम होने के बजाय और भी बढ़ गई । इस तरह उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेशों ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम किया।

प्रश्न 5. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर- प्रेम की यही मर्यादा है कि प्रेमी और प्रेमिका दोनों प्रेम को निभाएँ। वे प्रेम की सच्ची भावना को समझें और उसकी मर्यादा की रक्षा करें। परंतु कृष्ण ने गोपियों से प्रेम निभाने की बजाय उनके लिए नीरस योग-संदेश भेज दिया, जो कि एक छलावा था, भटकाव था। इसी छल को गोपियों ने मर्यादा का उल्लंघन कहा है।

प्रश्न 6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर-गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति की अभिव्यक्ति निम्नलिखित रूपों में करती हैं

- वे अपनी स्थिति गुड़ से चिपटी चींटियों जैसी पाती हैं जो किसी भी दशा में कृष्ण प्रेम से दूर नहीं रह सकती हैं।
- वे श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान मानती हैं।
- वे श्रीकृष्ण के प्रति मन-कर्म और वचन से समर्पित हैं।

- वे सोते-जागते, दिन-रात कृष्ण का जाप करती हैं।
- उन्हें कृष्ण प्रेम के आगे योग संदेश कड़वी ककड़ी जैसा लगता है।

प्रश्न 7. गोपियों ने उधव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तर-गोपियों ने उद्धव को कहा है कि वे योग की शिक्षा ऐसे लोगों को दें जिनके मन स्थिर नहीं हैं। जिनके हृदयों में कृष्ण के प्रति सच्चा प्रेम नहीं है। जिनके मन में भटकाव है, दुविधा है, भ्रम है और चक्कर हैं।

प्रश्न 8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर-सूरदास द्वारा रचित इन पदों में गोपियों की कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम, भक्ति, आसक्ति और स्नेहमयता प्रकट हुई है। जिस पर किसी अन्य का असर अप्रभावित रह जाता है। गोपियों पर श्रीकृष्ण के प्रेम का ऐसा रंग चढ़ा है कि खुद कृष्ण का भेजा योग संदेश कड़वी ककड़ी और रोग-व्याधि के समान लगता है, जिसे वे किसी भी दशा में अपनाने को तैयार नहीं हैं।

प्रश्न 9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर-गोपियों के अनुसार, राजा का धर्म यह होना चाहिए कि वह प्रजा को अन्याय से बचाए। उन्हें सताए जाने से रोके।

प्रश्न 10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उत्तर-गोपियों को कृष्ण में ऐसे अनेक परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन श्रीकृष्ण से वापस पाना चाहती हैं; जैसे

- श्रीकृष्ण ने अब राजनीति पढ़ लिया है जिससे उनके व्यवहार में छल-कपट आ गया है।
- श्रीकृष्ण को अब प्रेम की मर्यादा पालन का ध्यान नहीं रह गया है।
- श्रीकृष्ण अब राजधर्म भूलते जा रहे हैं।
- दूसरों के अत्याचार छुड़ाने वाले श्रीकृष्ण अब स्वयं अनीति पर उतर आए हैं।

प्रश्न 11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए?

उत्तर-गोपियाँ वाक्चतुर हैं। वे बात बनाने में किसी को भी पछाड़ देती हैं। यहाँ तक कि ज्ञानी उद्धव उनके सामने गैंगे होकर खड़े रह जाते हैं। कारण यह है कि गोपियों के हृदय में कृष्ण-प्रेम का सच्चा ज्वार है। यही उमड़ाव, यही जबरदस्त आवेग उद्धव की बोलती बंद कर देता है। सच्चे प्रेम में इतनी शक्ति है कि बड़े-से-बड़ा ज्ञानी भी उसके सामने घुटने टेक देता है।

प्रश्न 12. संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए?

उत्तर-सूरदास के पदों के आधार पर भ्रमरगीत की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

1. सूरदास के भ्रमरगीत में विरह व्यथा का मार्मिक वर्णन है।
2. इस गीत में सगुण ब्रह्म की सराहना है।
3. इसमें गोपियों के माध्यम से उपालंभ, वाक्पटुता, व्यंग्यात्मकता का भाव मुखरित हुआ है।
4. गोपियों का कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम का प्रदर्शन है।
5. उद्धव के ज्ञान पर गोपियों के वाक्चातुर्य और प्रेम की विजय का चित्रण है।
6. पदों में गेयता और संगीतात्मकता का गुण है।

प्रश्न13. गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

उत्तर-गोपियाँ-ऊधौ! यदि यह योग-संदेश इतना ही प्रभावशाली है तो कृष्ण इसे कुब्जा को क्यों नहीं देते? तुम यों करो, यह योग कुब्जा को जाकर दो। और बताओ! जिसकी जुबान पर मीठी खाँड का स्वाद चढ़ गया हो, वह योग रूपी निबौरी क्यों खाएगा? फिर यह भी तो सोचो कि योग-मार्ग कठिन है। इसमें कठिन

साधना करनी पड़ती है। हम गोपियाँ कोमल शरीर वाली और मधुर मन वाली हैं। हमसे यह कठोर साधना कैसे हो पाएगी। हमारे लिए यह मार्ग असंभव है।

प्रश्न 14. उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी?

उत्तर-उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे परंतु उन्हें व्यावहारिकता का अनुभव नहीं था। गोपियों ने यह जान लिया था कि उद्धव को श्रीकृष्ण से अनुराग नहीं हो सका, इसलिए उन्होंने कहा था, 'प्रीति नदी में पाउँ न बोरयो'। उद्धव के पास इसका कोई जवाब न था। इससे गोपियों का वाक्चातुर्य मुखरित हो उठा। गोपियाँ कृष्ण के प्रति असीम, अथाह लगाव रखती थी। जबकि उद्धव को प्रेम जैसी भावना से कोई मतलब न था। उद्धव को इस स्थिति में चुप देखकर उनकी वाक्चातुर्य और भी मुखर हो उठी।

प्रश्न 15. गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नज़र आता है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-जब गोपियों ने देखा कि जिस कृष्ण की वे बहुत समय से प्रतीक्षा कर रही थीं, वे नहीं आए। उसकी जगह कृष्ण से दूर ले जाने वाला योग-संदेश आ गया तो उन्हें इसमें कृष्ण की एक चाल नज़र आई। वे इसे अपने साथ छल समझने लगीं। इसीलिए उन्होंने आरोप लगाया कि

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।

आज की राजनीति तो सिर से पैर तक छल-कपट से भरी हुई है। किसी को किसी भी राजनेता के वायदों पर विश्वास नहीं रह गया है। नेता बातों से नदियाँ, पुल, सड़कें और न जाने क्या-क्या बनाते हैं किंतु जनता लुटी-पिटी-सी नजर आती है। आज़ादी के बाद से गरीबी हटाओ का नारा लग रहा है किंतु तब से लेकर आज तक गरीबों की कुल संख्या में वृद्धि ही हुई है। इसलिए गोपियों का यह कथन समकालीन राजनीति पर खरा उतरता है।

लघुउत्तरीयप्रश्न

प्रश्न 1. गोपियों ने उद्धवे को बड़भागी क्यों कहा है?

उत्तर-गोपियों ने उद्धव को इसलिए बड़भागी कहा है क्योंकि उद्धव श्रीकृष्ण के प्रेम से दूर हैं। उन्हें कृष्ण का प्रेम अपने बंधन में न बाँध सका। ऐसे में उद्धव को प्रेम की वैसी पीड़ा नहीं झेलनी पड़ रही है जैसी गोपियाँ झेलने को विवश हैं।

प्रश्न 2. 'गुर चाँटी ज्यों पागी' कहने से गोपियों की किस मनोदशा की अभिव्यक्ति होती है?

उत्तर-'गुर चाँटी ज्यों पागी' से गोपियों का कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम की अभिव्यक्ति का ज्ञान होता है। गोपियों की मनोदशा ठीक वैसी ही है जैसी गुड़ से चिपटी चीटियों की होती है। जिस तरह चीटियाँ किसी भी दशा में गुड़ को नहीं छोड़ना चाहती हैं उसी प्रकार गोपियाँ भी कृष्ण को नहीं छोड़ना चाहती हैं।

प्रश्न 3. गोपियों ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान क्यों बताया है?

उत्तर-गोपियों ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान इसलिए बताया है क्योंकि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजे में दबी लकड़ी को आधार मानकर उड़ता है उसी प्रकार गोपियों ने अपने जीवन का आधार कृष्ण को मान रखा है।

प्रश्न 4. ऐसी कौन-सी बात थी जिसे गोपियों को अपने मन में दबाए रखने के लिए विवश होना पड़ा?

उत्तर-गोपियाँ कृष्ण से अनन्य प्रेम करती थीं। अब जब कृष्ण ब्रज से मथुरा चले गए तब भी गोपियाँ उनसे वैसा ही प्रेम करती थीं। गोपियाँ चाहती थीं कि वे कृष्ण के दर्शन करें और अपने प्रेम की अभिव्यक्ति उनसे करें। वे इन बातों को उद्धव से नहीं कर सकती थीं। यही बात उनके मन में दबी रह गई।

प्रश्न 5. 'कमल के पत्ते' और 'तेल लगी गागर' की क्या विशेषता होती है?

उत्तर-कमल का पत्ता इतना चिकना होता है कि पानी की बूंद उस पर ठहर नहीं सकती है इसलिए कमल

का पत्ता पानी में रहने पर भी गीला नहीं होता है। इसी प्रकार तेल लगी गागर को जब पानी में डुबोया जाता है तो उसे भी पानी छू नहीं पाता है और वह सूखी की सूखी रह जाती है।

प्रश्न 6. गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली कहा है। आपकी दृष्टि से उनका ऐसा कहना कितना उपयुक्त है?

उत्तर-गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली कहा है पर मेरी दृष्टि में ऐसा नहीं है। गोपियाँ कृष्ण से दूर रहकर भी उनके प्यार में अनुरक्त हैं। वे स्वयं को कृष्ण के प्रेमबंधन में बँधी पाती हैं। जिसे कृष्ण से इस तरह का प्रेम मिल रहा हो वह अबला और भोली नहीं हो सकती है।

प्रश्न 7. 'प्रीति नदी में पाउँ न बोयो' का आशय स्पष्ट कीजिए। ऐसा किसके लिए कहा गया है?

उत्तर-'प्रीति नदी में पाउँ न बोयो' का आशय है कि-प्रेम रूपी नदी में पैर न डुबोना। अर्थात् किसी से प्रेम न करना और प्रेम का महत्त्व न समझना। ऐसा उन उद्धव के लिए कहा गया है, जो कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम से अछूते बने रहे।

प्रश्न 8. गोपियाँ किस आधार पर विरह व्यथा सह रही थीं?

उत्तर-मथुरा जाते समय श्रीकृष्ण ने गोपियों से एक निश्चित समय सीमा की ओर संकेत करके कहा था कि इतने समय के बाद ब्रज वापस आ जाएँगे। उसी आने की अवधि को आधार बनाकर गोपियाँ तन और मन की विरह व्यथा सह रही थीं।

प्रश्न9. गोपियों को मदद मिलने की आशा कहाँ लगी थी, पर उनकी यह आशा निराशा में कैसे बदल गई?

उत्तर-गोपियाँ जो विरह-व्यथा झेलने को विवश थीं, को श्रीकृष्ण की ओर दर्शन और प्रेम संदेश के रूप में मदद मिलने की आशा लगी थी पर जब कृष्ण ने ही उद्धव के हाथों योग-संदेश भिजवाया तो उनकी यह आशा निराशा में बदल गई।

प्रश्न 10. गोपियाँ अब धैर्य क्यों रखना चाहती हैं?

उत्तर-गोपियों को श्रीकृष्ण की ओर प्रेम के प्रतिदान और शीघ्र आकर दर्शन देने की आशा लगी थी। उन्होंने कृष्ण का प्रेम पाने के लिए सामाजिक मर्यादा की परवाह नहीं की। इसके विपरीत श्रीकृष्ण ने प्रेम की मर्यादा का निर्वाह नहीं किया। इस कारण अब गोपियाँ धैर्य नहीं धारण करना चाहती हैं।

प्रश्न 11. उद्धव गोपियों के पाए जिस उद्देश्य से आए थे, उसमें सफल नहीं हो सके?

उत्तर-उद्धव गोपियों के पास ज्ञान और योग साधना का महत्त्व बताने और उसे अपनाने की सीख देने आए थे, परंतु उद्धव इस उद्देश्य में सफल न हो सके क्योंकि उद्धव को अपने ज्ञान और योग का घमंड सवार था। वे गोपियों के आदर्श प्रेम और उनकी मनोदशा समझ पाने में सर्वथा अनभिज्ञ रहे।

प्रश्न 12. गोपियों ने कृष्ण को राजधर्म की बात क्यों याद दिलाई?

उत्तर-गोपियों ने कृष्ण को राजधर्म की बात इसलिए याद दिलाई क्योंकि श्रीकृष्ण प्रेम में डूबी गोपियों के लिए योग संदेश भेजकर उनके साथ अनीति भरो आचरण कर रहे थे। उनका मानना था कि राजा अपनी प्रजा की भलाई की बात सदैव सोचता है। जबकि कृष्ण ऐसा नहीं कर रहे थे।

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद - तुलसीदास

1.नाथ संभुधनु भंज निहारा, होइ केउ एकदास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहिं सब राजा॥
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधर हि अवमाने॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुल केतू॥
रे नृपबालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।

अर्थ - परशु राम के क्रोध को देखकर श्रीराम बोले - हे नाथ! शिवजी के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई एक दास ही होगा।क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते।यह सुनकर मुनि क्रोधित होकर बोले कि सेवक वह होता है जो सेवा करे, शत्रु का काम करके तो लड़ाई ही करनीचाहिए।हे राम! सुनो, जिसने शिवजी के धनुष को तोड़ा है, वह सहस्र बाहु के समान मेरा शत्रु है।वह इस समाज को छोड़कर अलग हो जाए, नहीं तो सभी राजा मारे जाएँगे। परशुराम के वचन सुनकर लक्ष्मण जी मुस्कुराए और उनका अपमान करते हुए बोले- बचपन में हमने बहुत सी धनुहियाँ तोड़ डालीं, किन्तु आपने ऐसा क्रोध कभी नहीं किया।इसी धनुष पर इतनी ममता किस कारण से है? यह सुनकर भृगुवंश की ध्वजा स्वरूप परशुराम जी क्रोधित होकर कहने लगे - अरे राजपुत्र! काल के वश में होकर भी तुझे बोलने में कुछ होश नहीं है।सारे संसार में विख्यात शिवजी का यह धनुष क्या धनुही के समान है?।

2.लखन कहा हँसि हमरें जाना।सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें।देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू।मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितइ परसु की ओरा।रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही।केवल मुनि जड़ जानहि मोह।।
बाल ब्रह्मचारी अतिकोही।बिस्वबिदित छत्रिय कुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनुकीन्ही।बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहु भुज छेद निहारा।परसु बिलोकु महीप कुमारा।।
मातु पितहि जनि सोच बस करसि महीस किसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।

अर्थ - लक्ष्मण जी ने हँसकर कहा- हे देव! सुनिए, हमारे लिए तो सभी धनुष एक से ही हैं। पुराने धनुष के तोड़ने में क्या हानि-लाभ! श्री रामचन्द्र जी ने तो इसे नवीन के धोखे से देखा था।परन्तु यह तो छूते ही टूट गया, इसमें रघुनाथ जी का भी कोई दोष नहीं है। हे मुनि! आप बिना ही कारण किस लिए क्रोध करते हैं? परशुराम जी अपने फरसे की ओर देखकर बोले- अरे दुष्ट! तूने मेरा स्वभाव नहीं सुना।मैं तुझे बालक जानकर नहीं मारता हूँ। अरे मूर्ख! क्या तू मुझे निरा मुनि ही जानता है।मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यन्त क्रोधी हूँ। क्षत्रिय कुल का शत्रु तो विश्वभर में विख्यात हैं ।अपनी भुजाओं के बल से मैंने पृथ्वी को राजाओं

से रहित कर दिया और बहुत बार उसे ब्राह्मणों को दे डाला।अरे राजा के बालक लक्ष्मण! तू मुझसे भिड़कर अपने माता - पिता को चिंता में मत डाल अर्थात अपनी मौत को न बुला। मेरा फरसा बहुत भयंकर है । यह गर्भ में पल रहे बच्चों का भी नाश कर डालता है अर्थात मेरे फरसे की गर्जना सुनकर गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि परशुराम जी लक्ष्मण जी को समझाने का प्रयास कर रहे हैं कि उन्हें जब क्रोध आता है तो वे किसी बालक को भी मारने से नहीं हिचकिचाते।

3.**बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।**
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी।।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई।।
बधें पापु अपकीरति हारें।मारत हूँ पा परिअ तुम्हारें।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।
जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर।।

अर्थ - परशुराम जी के क्रोध से भरे वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी बहुत ही अधिक कोमल वाणी में हँसकर उनसे बोले कि हे मुनिवर ! आप तो अपने आपको बहुत बड़ा योद्धा समझते हैं और बार - बार मुझे अपना फरसा दिखाते हैं।मुझे तो ऐसा लगता है कि आप फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं, परंतु हे मुनिवर ! यहाँ पर कोई भी सीताफल अर्थात कुम्हड़े के छोटे फल के समान नहीं हैं, जो तर्जनी उँगली को देखते ही मर जाएँ। (यहाँ लक्षमण जी ने, तर्जनी उँगली को देखते ही मर जाएँ, ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि परशुराम जी ने क्रोध में अपनी तर्जनी उँगली दिखाकर कहा था कि अगर वह व्यक्ति सभा से अलग नहीं हो जाता अर्थात उनके सामने नहीं आ जाता जिसने उनके आराध्य शिवजीका धनुष तोड़ा है तो वे वहाँ सभा में उपस्थित सभी राजाओं का वध कर देंगे)

मुनिजी! मैंने आपके हाथ में फरसा और धनुष - बाण देखकर ही अभिमानपूर्वक आपसे कुछ कहा था।कहने का तात्पर्य यह है कि एक क्षत्रिय ही दूसरे क्षत्रिय से अभिमानपूर्वक कुछ कह सकता है। जनेऊ से तो आप एक भृगुवंशी ब्राह्मण जान पड़ते हैं इन्हें देखकर ही, जो कुछ भी आपने कहा उसे सहनकर अपने क्रोध को रोक रहा हूँ। हमारे कुल की यह परंपरा है कि हम देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय, इन सभी परवीरता नहीं दिखाया करते, क्योंकि इन्हें मारने से पाप लगता है और इनसे हार जाने पर अपकीर्ति अथवा अपयश (बदनामी) होताहै।इसीलिए आप मारें तो भी, हमें आपके पैर पकड़ने चाहिए।हे महामुनि! आपका तो एक - एकवचन ही करोड़ों वज्रों के समान कठोर है। आपने व्यर्थ में ही फरसा और धनुष - बाण धारण किया हुआ है।
आपके धनुष बाण और कुठार (फरसे) को देखकर अगर मैंने कुछ अनुचित कह दिया हो तो हे मुनिवर ! आप मुझे क्षमा कीजिए।लक्ष्मण के यह व्यंग्य - वचन सुनकर भृगुवंशी परशुराम क्रोध में आकर गंभीर स्वर में बोलने लगे।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. राम-लक्ष्मण-परशुरामसंवाद- रामचरितमानस के किस कांड से लिया गया है?

(क) लंका कांड (ख) बाल कांड (ग) सुन्दर कांड (घ) अयोध्या कांड

2. मुनि परशुराम जी के गुरु कौन थे?

(क) भगवान शिव (ख) भगवान विष्णु (ग) भगवान द्रोण (घ) भगवान श्रीकृष्ण

3. राम-लक्ष्मण-परशुरामसंवाद में- किस भाषा का प्रयोग हुआहै?

(क) अवधी (ख) ब्रज (ग) राजस्थानी (घ) खड़ीबोली

4. **सहस्रबाहु की भुजाओ को किसने काट डाला था?**

(क) इंद्र ने (ख) रावण ने (ग) मुनि परशुराम जी ने (घ) श्री रामचन्द्र जी ने

5. **सीता स्वंयवर के अवसर पर मुनि परशुराम जी के क्रोध का मूलकारण क्या था?**

(क) लक्ष्मण जी द्वारा व्यंग्य बाण चलाना

(ख) शिवधनुष का टूटना

(ग) राजा जनक द्वारा शिवधनुष को सभा में लाना

(घ) श्री राम चन्द्र जी द्वारा शिवधनुष का अपमान करना

6. **मुनि परशुराम जी ने सेवक किसे कहा है?**

(क) जो सम्मान करे (ख) जो कुछ भी न करे

(ग) जो आज्ञा का पालन करे (घ) जो सेवा करे

7. **'हे नाथ! शिवधनुष को तोड़ने वाला तुम्हारा ही कोई दास होगा।" यह शब्द किसने? किससे? कहा है?**

(क) राजा जनक ने मुनि परशुराम जी से (ख) श्री रामचन्द्र जी ने मुनि परशुराम जी से

(ग)लक्ष्मण जी ने श्री रामचंद्र जी से (घ) हनुमान ने राजा जनक से।

8. **मुनि परशुराम जी के सिर पर अभी किसका ऋण बाकी (शेष) है?**

(क) माता का (ख) पिता का (ग) गुरु का (घ) भाई का

9. **मुनि परशुराम जी के वचन किसके समान कठोर है?**

(क) लोहे के (ख) वज्र के (ग) पत्थर के (घ) इस्पात के

10. **"भगृकुलकेतु" शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है?**

(क) मुनि परशुराम के लिए (ख) महर्षि विश्वामित्र के लिए

(ग) लक्ष्मण जी के लिए (घ) महर्षि वशिष्ठ के लिए

11. **राम-लक्ष्मण-परशुराम- संवाद में किस रस की प्रधानता है?**

(क) करुणरस (ख) हास्यरस (ग) वीररस (घ) रौद्ररस

12. **मुनि परशुराम जी ने "कौशिक" कहकर किसे संबोधित किया है?**

(क) राजा दशरथ को (ख) राजा जनक को (ग) महर्षि वशिष्ठ को (घ) महर्षि विश्वामित्र को

13. **" गर्भन्ह के अर्भक दलन" – पंक्तिमें 'अर्भक' शब्द का क्या अर्थ है?**

(क) घोडा (ख) शत्रु (ग) बच्चे (घ) गधा

14. **देवता, ब्राहमण, भक्त और गाय पर किस कुल में वीरता नहीं दिखाई जाती थी?**

(क) रघुकुल में (ख) यादवकुल में (ग) भृगुकुल में (घ) आर्यकुल में

15. **मुनि परशुराम जी ने ' सूर्य का कलंक' किसे कहाहै**?

(क) श्री राम जी को (ख) महर्षि विश्वामित्र को (ग) लक्ष्मण जी को (घ) सीता जी को

उत्तरमाला

प्रश्नसंख्याउत्तर

1ख, 2क, 3क ,4ग, 5ख, 6घ, 7ख, 8ग, 9ख, 10क, 11ग, 12घ, 13 ग, 14 क,15ग

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

प्रश्न1.राम और लक्ष्मण सीता स्वयंवर में किस मुनि के साथ आए?

उत्तर: राम और लक्ष्मण सीता स्वयंवर में मुनिविश्वामित्र के साथ आए |

प्रश्न2. "राम लक्ष्मण परशुराम संवाद" किस ग्रंथ से लिया गया है?

उत्तर: "राम लक्ष्मण परशुराम संवाद" रामचरितमानस ग्रंथ से लिया गया है|

प्रश्न3. "राम लक्ष्मण परशुरामसंवाद"- में मुनि परशुराम जी ने शिवधनुष तोड़ने वाले को अपना शत्रु बताया है और उसकी तुलना किससे की है?

उत्तर: "राम लक्ष्मण परशुराम संवाद"-में मुनि परशुराम जी ने शिवधनुष तोड़ने वाले को अपना शत्रु बताया है और उसकी तलुना सहस्रबाहु से की है|

प्रश्न4. सहस्रबाहु सम सो रिपु मोरा-इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए -

उत्तर:सहस्रबाहु समसो रिपु मोरा-इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार उपमा है|

प्रश्न5. लक्ष्मण के अनुसार वीर पुरुष युद्ध- भूमि में शत्रु को सामने पाकर क्या नहीं करते है?

उत्तर:लक्ष्मण के अनुसार वीर पुरुष युद्ध- भूमि में शत्रु को सामने पाकर अपनी वीरता की प्रशंसा स्वयं नहीं करते हैं रणभूमि में अपनी वीरता दिखलाते है|

प्रश्न6 **लक्ष्मण. के अनुसार मुनि परशुराम जी के वचन किसके समान कठोर है?**

उत्तर:लक्ष्मण के अनुसार मुनि परशुराम जी के वचन वज्र के समान कठोर है|

प्रश्न7**. 'महीपकुमार' किसे कहा गयाहै?**

उत्तर: 'महीपकुमार' लक्ष्मण को कहा गया है |

प्रश्न8. **बालकों केगुण-दोषों पर कौन अधिक ध्यान नहीं देते है?**

उत्तर:बालकों के गुण-दोषों पर साधू लोग अधिक ध्यान नहीं देते है|

प्रश्न9. **मुनि परशुराम जी गुरु ऋण से किस प्रकार उऋण होना चाहते थे?**

उत्तर:शिवधनुष तोड़ने वाले का वध करके मुनि परशुराम जी गुरु ऋण से उऋण होना चाहते थे|

प्रश्न10. '**का छति लाभु जून धनु तोरें' - यहां 'जून' शब्दका क्या अर्थ है?**

उत्तर: 'का छति लाभु जून धनु तोरें'- यहां 'जून' शब्द का अर्थ पुराना है।

प्रश्न11.**लक्ष्मण जी ने परशुराम जी को अपने कुल की किस परंपरा का बोध कराया?**

उत्तर:लक्ष्मण जी ने परशुराम जी को अपने कुल की परंपरा का बोध कराते हुए कहा-रघुकुल के लोग देवता, ब्रहमा, भगवान के भक्त और गाय पर प्रहार नही करते | ये चारों उनके लिए पूजनीय है | इन्हें मारने से पाप लगता है और इनसे हार ने पर अपयश मिलता है|

प्रश्न12.**इहाँ कुम्हड़ बतिया कोऊ नाहीं।जे तरजनी देख मर जाहीं॥-इस उक्ति के द्वारा लक्ष्मण जी परशुराम जी से क्या कहना चाहते है?**

उत्तर:कुम्हड़े का फूल जो आकार में बहुत छोटा और कोमल होता है | तर्जनी को देखते ही वह मुरझा जाता है | लक्ष्मण जी यह कहना चाहते हैं कि वे भी कुठार और धनुष-बाण देख कर डरने वाले सामान्य बालक नहीं हैं | वे सूर्यवंशी और वीर हैं |

प्रश्न13.**लक्ष्मण जी ने मुनि परशुराम की क्रोधपूर्ण बातों को चुपचाप सहन करने का क्या कारण बताया ?**

उत्तर:लक्ष्मण जी ने मुनि परशुराम की क्रोधपूर्ण बातों को चुपचाप सहन करने का यह कारण बताया कि मुनि परशुराम भृगुवंशी है और यज्ञोपवित (जनेऊ) धारण करने वाले ब्राहमण हैं | यदि आप मुझे मारें तो भी मै आपके चरण ही पकडूँगा |

III. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2x3=6)

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी।अहो मुनी सु महाभट मानी।।

पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू।चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।

इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं।जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।

देखि कुठारु सरासन बाना।मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।

भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी।जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी।।
सुर महिसुर हरिजन अरुगाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई।।
बधें पापु अपकीरति हारें।मारत हूँ पाप रिअ तुम्हारें।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।
जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंस मुनि बोले गिरा गंभीर।।

1. **इहाँ कुम्हड़बतिआ कोउ नाहीं- पंक्ति से क्या आशय है?**
(क) यहाँ मूर्खों की तरह बातें करने वाला कोई नही है |
(ख) यहां कोई भी कुम्हड़े की बतिया के समान(निर्बल) नहीं है|
(ग) यहां कोई भी कुम्हार के घड़े के समान नहीं है|
(घ) यहां कोई भी मेरे जैसा शूरवीर नहीं है |
2) **लक्ष्मण जी ने मुनि परशुराम जी के किस स्वभाव पर व्यंग्य किया है?**
(क) चाटुकारिता (ख) आलसीपन (ग) मधुर (घ) बड़बोलापन
3) **कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।- अलंकार पहचानकर लिखिए?**
(क) उपमा और अनुप्रास अलंकार (ख) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार
(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार (घ) यमक
4) **किसके वश में आकर लक्ष्मण के मुंह से होश पूर्वक बातें नही निकल रहे हैं?**
(क) मोह (ख) काल (ग) लोभ (घ) डर
5) **राम- लक्ष्मण- परशुराम संवाद- में किस छन्द का प्रयोग हुआ है?**
(क) सवैया (ख) दोहा और चौपाई (ग) सोरठा (घ) रोला
2**) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए** **(3x2=6)**
१)राम लक्ष्मण परशुराम संवाद के आधार पर राम और लक्ष्मण की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए |

___

२)परशुराम के क्रोध का क्या कारणहै?

___

३)राम लक्ष्मण परशुराम संवाद के आधार पर तुलसी की भाषाशैली पर विचार कीजिए |

___

आत्मकथ्य - जयशंकरप्रसाद

कवि परिचय

जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 में वाराणसी में हुआ था। उन्होंने क्वींसकॉलेज, काशी में पढ़ाई शुरू की, परंतु परिस्थितियों के कारण वे आठवीं के बाद पढ़ाई जारी नहीं रख पाए।उन्होंने घर पर ही संस्कृत, हिंदी और फ़ारसी का अध्ययन किया। प्रसाद जी छायावादी काव्यप्रवृत्ति के प्रमुख कवियों में से एक थे और 1937 में उनका निधन हो गया।

उनकी प्रमुख काव्य-कृतियों में 'चित्राधार', 'कानन-कुसुम', 'झरना', 'आँसू', 'लहर' और 'कामायनी' शामिल हैं। 'कामायनी' को आधुनिक हिंदी की श्रेष्ठतम काव्य-कृति माना गया और इसके लिए उन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रसाद केवल कवि ही नहीं, बल्कि सफल गद्यकार भी थे।उनके नाटकों में 'अजातशत्रु', 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी' शामिल हैं।उन्होंने 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' जैसे उपन्यास भी लिखे, और 'आकाशदीप', 'आँधी' और 'इंद्रजाल' उनके कहानी संग्रह हैं।

प्रसाद की रचनाएँ न केवल उनकी कल्पनाशीलता का प्रतीक हैं, बल्कि वे उनके जीवन के अनुभवों और विचारों का गहन चित्रण भी करती हैं। उनके साहित्य में जीवन के विभिन्न पहलुओं को गहनता और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है, जो उन्हें हिंदी साहित्य के महान रचनाकारों में से एक बनाता है।

जीवन परिचय से संबंधित वीडियो-

https://youtu.be/MqGk9IT8e8Y?si=I0hAXFcFi_MoCZTZ

पाठ का सारांश

जयशंकर प्रसाद की कविता "आत्मकथ्य" प्रेमचंद द्वारा संपादित हंसपत्रिका के आत्मकथा विशेषांक (1932) में प्रकाशित हुई थी।उनके मित्रों ने उनसे आत्मकथा लिखने का आग्रह किया, लेकिन प्रसाद जी सहमत नहीं थे।इस असहमति के चलते उन्होंने यह कविता लिखी।

छायावादी शैली में रचित इस कविता में प्रसाद जी ने अपने जीवन के यथार्थ और कठिनाइयों को मार्मिक रूप से व्यक्त किया है। उन्होंने सुंदर और नवीन शब्दों एवं बिंबों का प्रयोग करके बताया कि उनका जीवन एक साधारण व्यक्ति का जीवन है, जिसमें कुछ भी महान या अत्यधिक रोचक नहीं है।

कवि कहता है कि यह जीवन नश्वर है। हर जीवन एक दिन मुरझाई पत्ती-सा झड़कर गिर जाता है। इस संसार में असंख्य लोगों ने अपने-अपने जीवन के इतिहास लिखे हैं।परंतु उनके जीवन इतिहास इस अनंत आकाश में कहीं खो गए हैं।

कवि को लगता है कि यदि उसने सच कहना शुरु कर दिया तो उसके मित्रजन ही स्वयं को अपराधी और दोषी मानने लगेंगे। कवि ने सदा सरलता का जीवन जिया है।उन्हें लगता है कि यदि वे आत्मकथा लिखेगा तो लोग उनकी सरलता का मज़ाक उड़ाएँगे।वे अपनी भूलों और मित्रों से खाए धोखों को दूसरों के सामने प्रकट नहीं करना चाहते थे।उन्होंने जीवन में प्रेम के जो क्षण जिए है वह उनके बारे में कुछ भीनहीं लिखना चाहते क्योंकि वह अपनी प्रिया को कभी पा नहीं सका।उसका प्रेम मिलते-मिलते रह गया।आज वे उन मधुर स्मृतियों के सहारे ही अपने जीवन को बिता रहे है।मित्र लोग आत्मकथा लिखवाकर उसकी कटु स्मृतियों को क्यों उधेड़ना चाहते हैं? अपनी कथा सुनाने से तो यही अच्छा हैं कि वह औरों के जीवन की कथाएँ मौन होकर सुनता रहे।उसकी भोली आत्मकथा सुनकर कोई क्या करेगा।वह नहीं चाहता है कि आत्मकथा लिखकर वह अपनी भूली हुई पीड़ाओं को फिर से जगाएँ।

इस कविता में कवि ने यथार्थ की स्वीकृति और विनम्रता का समावेश किया है, जो यह दर्शाता है कि वे एक महान कवि होने के बावजूद अपने जीवन को साधारण मानते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न.1कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है?

कवि आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहते है क्योंकि

(1) उन्हें लगता था कि उनके जीवन में ऐसा कुछ भी विशेष या रोचक नहीं है जिसे आत्मकथा में लिखा जाए। जयशंकर प्रसाद का मानना था कि उनका जीवन एक साधारण व्यक्ति का जीवन है, जिसमें न तो कोई महान घटनाएँ घटी हैं और नही कोई विशेष उपलब्धियाँ हैं जिनके बारे में लोग पढ़कर वाह-वाह करेंगे।

(2)आत्मकथा लिखने के लिए अपने मन की दुर्बलताओं, कमियों का उल्लेख करना पड़ता है।

(3) अपनी सरलता के कारण कवि ने कई बार धोखा भी खाया है ।वह अपने जीवन की बातें बताकर या दूसरों की कमियों को उजागर करके अपने व्यक्तिगत जीवन काउपहास नहीं बनाना चाहता था।

(4) जीवन में बहुत सारी पीडादायक घटनाएँ हुई हैं, कवि उन घटनाओं को याद नहीं करना चाहता।

(5) प्रेमिका के साथ बिताए मधुर पलों को सार्वजनिक करने की कठिनाई।

प्रश्न 2. जयशंकर प्रसाद ने "आत्मकथ्य" कविता क्यों लिखी? और इस कविता से हमें क्या-2 शिक्षा मिलती हैं।

उत्तरःजयशंकर प्रसाद की कविता "आत्मकथ्य" का सृजन उस समय हुआ जब प्रेमचंद के संपादन में हंस पत्रिका का आत्मकथा विशेषांक प्रकाशित होने वाला था।उनके मित्रों ने उनसे आत्मकथा लिखने का आग्रह किया, लेकिन प्रसाद जी ने इसे अस्वीकार कर दिया।उनका मानना था कि उनके जीवन में कुछ भी ऐसा नहीं है जो आत्मकथा में लिखा जाए।इस असहमति के तर्क से प्रेरित होकर उन्होंने "आत्मकथ्य" कविता लिखी।

इस कविता में उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों, कष्टों, और साहित्यिक यात्रा का वर्णन किया है। यह कविता उनके आंतरिक संघर्षों, मानसिक द्वंद्वों, और आत्मनिरीक्षण का परिणाम है। अतः कविता से हमें धैर्य और साहस से परिस्थितियों का सामना करने की प्रेरणा, सत्य और ईमानदारी की समझ,अपने भीतर झाँकने और आत्मविश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहन मिलता हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न- 1 आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर- कवि को लगता है कि आत्मकथा लिखने का अभी उचित समय नहीं है, क्योंकि:

1. कवि का जीवन कठिनाइयों और अभावों से भरा रहा है। वह मुश्किल से अपनी पुरानी वेदनाओं से उबर पाया है और आत्मकथा लिखने से उन दबे हुए कष्टों को फिर से याद कर, दुःखी नहीं होना चाहता।
2. कवि को ऐसा महसूस होता है कि अभी उसके पास ऐसी कोई बड़ी उपलब्धि नहीं है जिसे वह लोगों के सामने प्रेरणास्वरूप प्रस्तुत कर सके।

प्रश्न.2. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर-पाथेय' का अर्थ है यात्रा के दौरान सहारा या भोजन। स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का आशय है कि वह अपनी यादों के सहारे जीवन जीना चाहता है। कवि की प्रेयसी उससे दूर हो गई है और उसके मन-मस्तिष्क में केवल उसकी स्मृतियाँ ही बची हैं।कवि इन स्मृतियों को अपने जीवन का सहारा बनाना चाहता है, जैसे-यात्री के लिए पाथेय सहारा होता है।

प्रश्न.3. भाव स्पष्ट कीजिए-

(1)"मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देख कर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुस्कराकर जो भाग गया।"

उत्तर-कवि कहना चाहता है कि जिस प्रेम के उसने सपने देखे थे, वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ। जिस सुख की उसने कल्पना की थी, वह उसे नहीं मिला, और उसका जीवन हमेशा उस सुख से वंचित रहा। इस दुनिया में सुख एक छलावा मात्र है, जो स्वप्न की तरह जल्दी ही समाप्त हो जाता है।कवि ऐसा इसलिए

कह रहे हैं क्योंकि उनका तीन बार विवाह हुआ था तथाउ नकी पहली दो पत्नियों की असामयिक मृत्यु हो गई थी।

(1) "जिसके अरुण कपोलों कीमत वाली सुंदरछाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।"

उत्तर-कवि अपनी प्रेयसी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि प्रेममयी भोर अर्थात् सुबह की वेला भी अपनी मधुर लालिमा उसके गालों से लेती थी। उसकी प्रेमिका का मुख सौंदर्य ऊषाकालीन लालिमा से भी बढ़कर था।

प्रश्न 4. 'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की' कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर-कवि कहना चाहता है कि अपनी प्रेयसी के साथ चाँदनी रातों में बिताए गए सुखदायक क्षण किसी उज्ज्वल गाथा की तरह पवित्र हैं। ये क्षण उसके अंधकारमय जीवन में आगे बढ़ने का एकमात्र सहारा बन गए हैं।वह इन मधुर स्मृतियों को सबके सामने प्रस्तुत कर अपनी हँसी नहीं उड़ाना चाहता, बल्कि इन्हें अपने तक ही सीमित रखना चाहता है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न एवं बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर-

मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझा कर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत नीलिमा में असंख्य जीवन- इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य मलिन उपहास
तब भी कहते हो-कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे ,देखोगे यह गागर रीती।
किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले-
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

प्रश्न. 1.प्रस्तुत कविता में, कवि ने मधुप शब्द का प्रयोग किसके लिए किया हैं? और वह किस तरह की कहानी सुना रहा है?

उत्तर- प्रस्तुत कविता में, कवि ने मधुप शब्द का प्रयोग मन रूपी भंवरे के लिए किया हैं वह गुनगुनाकर अपनी आप बीती सुना रहा है।

प्रश्न.2.कवि ने मुरझाकर गिरने वाली पत्तियों के माध्यम से क्या संकेत किया हैं?

उत्तर-कवि ने मुरझा कर गिरने वाली पत्तियों के माध्यम से संकेत किया है कि जीवन क्षणभंगुर अर्थात एक दिन सभी को मृत्यु का ग्रास बनना हैं।

प्रश्न 3. 'गंभीर अनंत नीलिमा' से कवि का क्या अभिप्राय है?

1) गहरे समुद्र की नीलिमा
2) गहरे, विस्तृत अंतहीन आकाश की नीलिमा
3) पहाड़ों की नीली छाया
4) जंगल की गहराई

उत्तर(2) गहरे, विस्तृत अंतहीन आकाश की नीलिमा

प्रश्न. 4 'व्यंग्य-मलिन उपहास' से क्या तात्पर्य है?

1) प्रेम का इज़हार

2) प्रशंसा

3) खराब ढंग से निंदा करना और मज़ाक उड़ाना

4) गहरे सम्मान का प्रदर्शन

उत्तर(3)- खराब ढंग से निंदा करना और मज़ाक उड़ाना

प्रश्न 5. 'तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे - यह गागर रीती' का क्या अर्थ है?

1) तुम सुनकर दुखी हो जाओगे

2) तुम सुनकर और देखकर सुख का अनुभव करोगे

3) तुम सुनकर और देखकर पाओगे कि यह घड़ा खाली है।

4) तुम सुनकर और देखकर घड़े को भर लोगे

उत्तर(3) तुम सुनकर और देखकर पाओगे कि यह घड़ा खाली है

नोट- यहाँ खाली घड़े से अभिप्राय, कवि के दुखी जीवन से हैं।

- **अति लघुउत्तरीय प्रश्न एवं बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर-**

उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।सीवन को उधेड़कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?
छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ? सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा? अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

प्रश्न.1.'उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की' में 'पाथेय' का क्या अर्थ है?

1) रास्ते का भोजन या सहारा

2) प्रेम का प्रतीक

3) यात्रा का अंत

4) संगी साथी

उत्तर-(1) रास्ते का भोजन या सहारा

प्रश्न. 2 'सीवन' को उधेड़ने का अर्थ क्या है ?

1) हृदय को चीर कर दिखाना

2) दिल को ठेस पहुँचाना

3) मन में छिपी पुरानी बातों को फिर सेयाद करना

4) दूध का दूध,पानी का पानी कर देना

उत्तरः (3) मन में छिपी पुरानी बातों को फिर से याद करना

प्रश्न. 3 'कंथा' का प्रयोग कवि ने किसके लिए किया है? और कंथा का शाब्दिक अर्थ क्या हैं?

1) अपने मित्रों के लिए , रास्ता

2) अपने जीवन इतिहास के लिए, प्रियतम

3) अपने अंतर्मन के लिए,गुदड़ी यानि रज़ाई या चादर

4)इनमें से कोई नहीं

उत्तर-3) अपने अंतर्मन के लिए,गुदड़ी यानि रज़ाई या चादर

प्रश्न.4.आत्म कथ्य कविता में किस भाषा का प्रयोग हुआ हैं।

उत्तर- आत्मकथ्य कविता में तत्सम शब्दावली से युक्त सहज खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न.5. कवि अपनी कंथा की सीवन उधेड़कर क्यों नहीं दिखाना चाहता?

उत्तर- क्योंकि कवि अपने जीवन की कमजोरियों को प्रकट नहीं करना चाहता।

उत्साह ,अट नहीं रही
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

कवि परिचय

इनका जन्म बंगाल के महिषादल में सन में हुआ था। ये मूलतः गढ़ाकोला 1899, जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश के निवासी थे। इनकी औपचारिक शिक्षा नवीं तक महिषादल में ही हुई। इन्होने स्वंय अध्ययन कर संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का ज्ञान अर्जित किया। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की विचारधारा ने इनपर गहरा प्रभाव डाला। सन में इनकी मृत्यु हुई। 1961

काव्य अनामिका **-रचनाएं-**, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता और नए पत्ते।

उत्साह'

प्रस्तुत कविता एक आह्वाहन गीत है। इसमें कवि बादल से घनघोर गर्जन के साथ बरसने की अपील कर रहे हैं। बादल बच्चों के काले घुंघराले बालों जैसे हैं। कवि बादल से बरसकर सबकी प्यास बुझाने और गरज कर सुखी बनाने का आग्रह कर रहे हैं। कवि बादल में नवजीवन प्रदान करने वाला तथा सब कुछ तहस कर देने वाला वज्रपात दोनों देखते है इसलिए वह बादल से अनुरोध करते है वह अपने कठोर वज्रशक्ति को अपने भीतर छुपाकर सब में नयी स्फूर्तिऔर नया जीवन डालने के लिए मूसलाधार बारिश करे | आकाश में उमड़ते घुमड़ते बादल को देखकर कवि को लगता है के वे बेचैन हैं |तभी उन्हे याद आता हैं की समस्त धरती भीषण गर्मी से परेशान हैं इसलिए काले काले बादल पूरी तपती हुई धरती को शीतलता प्रदान करने के लिए बेचैन हो रहे है |कवि आग्रह करते है की बादल खूब गरजे और बरसे और सारी धरती को तृप्त करे |

अट नहीं रही

प्रस्तुत कविता में कवि ने फागुन का मानवीकरण चित्र प्रस्तुत किया है। फागुन यानी फ़रवरी मार्च के महीने में वसंत ऋतू का आगमन होता है। इस ऋतू में पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और नए पते आते हैं। रंगबिरंगे फूलों की बहार छा जाती है और उनकी सुगंध से सारा वातावरण महक उठता है। कवि को ऐसा ब जगह सुगंधपर स प्रतीत होता है मानो फागुन के सांस लेनेफैल गई हो वह चाहकर भी अपनी आँखे इस प्राकृतिक सुंदरता से हटा नही सकते।

इस मौसम में बाग़बगीचों-, वन-पौधे नए-उपवनों के सभी पेड़- नए पत्तों से लद गए हैं, कहीं यहीं लाल रंग के हैं तो कहीं हरे और डालियाँ अनगिनत फूलों से लद गए हैं जिससे कवि को ऐसा लग रहा है जैसे प्रकृति देवी ने अपने गले रंग बिरंगे और सुगन्धित फूलों की माला पहन रखी हो। इस सर्वव्यापी सुंदरता का कवि को कहीं ओऱछोर नजर नही आ रहा है इसलिए कवि कहते हैं की फागुन की सुंदरता अट नही - रही है।

उत्साह

बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुंघराले,
बाल कल्पना के से पाले,
विद्युत छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो
बादल गरजो!

भावार्थ-कवि बादल के गर्जन में नवचेतना और सृजनात्मक उत्साह का स्वर सुनता है। वह बादल से - गरजने का आग्रह करता है। कवि कहता है है बादल !

गरज कर सारे विस्तृत आकाश में छा जाओ सुंदर काले घुँघराले केशों जैसे रूप वाले बालकों के जैसे बादल ! तुम गरजो। तुम एक कवि के समान हृदय में बिजली की चमक जैसे उत्साह से पूर्ण हो । तुम संसार में नए जीवन का संचार करने वाले हो। अपनी वज् जैसी विध्वंसक शक्ति को छिपाए रखो और मेरे हृदय में एक नई कविता को जन्म दो । हे बादल ! तुम गरजते रहो ।

पद्यांश आधारित प्रश्नोत्तर

कवि बादल में से किसका स्वर सुनता है ?

(क) क्रांति (ख) रुदन (ग) वेदना (घ) इनमे से कोई नहीं

उ क्रांति

" .घेर घेर घोर गगन में अलंकार बताइए "?

(क) उत्प्रेक्षा (ख) रूपक (ग) अनुप्रास (घ) उपमा

उ अनुप्रास

३ कवि अपने आह्वान गीत में किसका संबोधन कर रहा है .?

(क) बादल का (ख) बिजली

उ बादल का

४है कविता में बादल किसका प्रतीक .?

(क) भावनाओ का (ख) सुखो का (ग) दुखो का (घ) क्रांति का

उ सुखो का

५' .धाराधर किसके लिए प्रयुक्त हुआ है '?

(क) पृथ्वी (ख) आकाश (ग) बादल (घ) समुद्र

उ बादल

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो - बादल, गरजो!

भावार्थ: - हो -संसार के सारे लोग ग्रीष्म की तपन से व्याकुल और अनमन रहे है |कवि कहता है -हे बादल! ऐसे समय में अज्ञात दिशा से आकर तुम अनंत आकाशं में छा गए हो । अब अपनी शीतल जल-वर्षा से इस तपती हुई धरती को भिगोकर इसका ताप दूर कर दो ।

१.कवि ने "निदाघ" अर्थात भीषण गर्मी से किस और इशारा किया है ?'

(क) अधिक गर्मी (ख) सांसारिक कष्ट (ग) असफलता (घ) इनमे से कोई नहीं

उ सांसारिक कष्ट

२.तप्त धरा अर्थ क्या है का सांकेतिक '?

(क)सूखी धरती (ख) गरम धरती (ग) दुखो से पीड़ित धरती (घ) इनमे से कोई नहीं

उ दुखों से पीड़ित धरती (ग) .

३ कविता में जल का बरसना किसका प्रतीक है?

(क) बारिश होना (ख) शांति और सुख की स्थापना (ग) प्यास बुझना (घ) इनमे से कोई नहीं

उ शांति और सुख की स्थापना

'४.विकल का अर्थ बताइए '?

(क) सफल (ख) उत्सुक (ग) व्याकुल (घ) प्रसन्न

उ व्याकुल (ग)

५ ..सूर्यकांत त्रिपाठी निराला किस काल के कवि रहे हैं?

(क) आधुनिक काल (ख) छायावाद काल (ग) भक्ति काल (घ) प्रगतिवाद काल

उ छायावाद काल (ख).

<u>अट नहीं रही</u>

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है ।
कहीं साँस लेते हो,
घरघर भर देते हो-,
उड़ने को नभ में तुम
परपर कर देते हो-,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है ।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंदमाल-पुष्प-गंध-,
पाटश्री-पाट शोभा-
पट नहीं रही है ।

भावार्थ- कवि वसंत ऋतु में आने वाले फागुन मास की प्राकृतिक शोभा का वर्णन कर रहा है । कवि कहता है कि फागुन मास का यह असीम प्राकृतिक सौन्दर्य इतना विविध और व्यापक है कि यह आँखों में समा नहीं पा रहा है । लगता है प्रकृति के शरीर में न समाने वाली यह कान्तिमय शोभा बाहर निकली पड़ रही है ।फागुन की सुगंधित वायु का एक झोंका घरघर को मा-दक गंध से भर रहा है । वासंती मस्ती से उड़ान भरते पक्षियों के कारण सारा आकाश पंखमय हो रहा है । फागुनी शोभा इतनी आकर्षक है कि उस पर से दृष्टि हटाए नहीं हट रही है ।

कहीं हरे और लाल पत्तों से डालियाँ लदी हैं और कहीं मंदसुंदर-मंद गंध वाले फूलों के समूह प्रकृति-ी के कंठ में पड़ी पुष्प माला जैसी प्रतीत हो रही है | पेड़ पौधे खिले हुए सुगन्धित फूलों से लद जाते है|एस प्रकार जगह जगह फागुन का सौंदर्य बिखरा हुआ है की वह सौंदर्य समां नहीं पा रहा है|

पद्यांश आधारित प्रश्नोत्तर

१ .किसकी आभा हट नहीं रही है ?

(क) उड़ने वाले पक्षियों की (ख) फागुन की (ग) घर की (घ) नायिका की

उ फागुन की (ख) .

२" .घर घर और पर पर में कौन सा अलंकार हैं ?

(क)मानवीकरण (ख) श्लेष (ग) यमक (घ) पुनरुक्तिप्रकाश

उ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

३. 'कहीं सांस लेते हो घर पंक्ति का क्या अर्थ है 'घर भर देते हो-?

(क) बादलों का साँस लेना

(ख) कवि फागुन की हरियाली को महसूस करता है |

(ग) पेड़ों पर नए पते आये हैं |

(घ) फागुन की साँस का सुगन्धित झोंका वातावरण को सुगन्धित करता है |

उत्तर (घ) फागुन की साँस का सुगन्धित झोंका वातावरण को सुगन्धित करता है

४' .कही साँस लेते हो में कौन सा अलंकार हैं ?

(क) उपमा (ख) यमक (ग) उत्प्रेक्षा (घ) मानवीकरण

उ मानवीकरण (घ)

५प्रस्तुत पद्यांश के कवि का नाम बताइए। .

(क) नागार्जुन (ख) सूरदास (ग) तुलसीदास (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

उ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ..

लघु उत्तरीय प्रश्न-

१ प्रस्तुत गीत में बादलों की तुलना बाल कल्पना से क्यों की गई है.?

उ बच्चों की कल्पनाएं मधुर होती हैं एवं बदलती रहती हैं। बादल बार बार अपना रूप बदलते रहते हैं। इसलिए कवि ने बादल की तुलना बाल कल्पना से की है।

२ कैसे किया है कवि ने बादलों के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में .?

उ बादल सुंदर , काले काले घुंघराले बालों वाले हैं । वे अपने हृदय में बिजली छुपाए हुए तथा पीड़ित - जान को नया जीवन प्रदान करने वाले हैं ।

३.कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा गया है ?

उ.३. कवि ने गीत में बादलों के माध्यम से लोगों में उत्साह का सृजन करने को कहा है| वह लोगों को क्रान्ति लाने के लिए उत्साहित करना चाहते हैं इसलिए कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है।

४. कविता में बादल किन अर्थों की और संकेत करता है ?

उ कविता में बादल निम्न अर्थों की ओर संकेत करता है -

- है और सुखी बनाता है पानी बरसा कर सबकी प्यास बुझाता|
- गर्जन कर क्रांतिकारी चेतना जागृत करता है|
- नवनिर्माण कर नवजीवन प्रदान करता है|

५ .कवि ने नवजीवन का प्रयोग बादलों के लिए भी किया है क्यों?

उ .५. कवि बादलों को कल्याणकारी मानता है। बादल विविध रूपों में जनकल्याण करते हैं। वे अपनी वर्षा से लोगों की बेचैनी दूर करते हैं और तपती धरती का ताप शीतल करके मुरझाई- सी धरती में नया जीवन फूँक देते हैं। वे धरती को फ़सल उगाने योग्य बनाकर लोगों में नवजीवन का संचार करते हैं।

६. कवि ने क्रांति लाने के लिए किसका आह्वान किया है और क्यों ?

उ कवि ने क्रांति लाने के लिए बादलों का आह्वान किया है। कवि का मानना है कि बादल क्रांतिदूत हैं। उनके अंदर घोर गर्जना की शक्ति है जो लोगों को जागरूक करने में सक्षम है। इसके अलावा बादलों के हृदय में बिजली छिपी है।

७ कवि बादल से फुहार ., रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए कहता है', क्यों?

उ .७. कवि ने बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के लिए नहीं कहता बल्कि 'गरजने के लिए कहता हैं क्योंकि कवि बादलों को क्रांति का सूत्रधार मानता है। विद्रोह 'गरजना'का प्रतीक है। कवि बादलों से पौरुष

दिखाने की कामना करता है। कवि ने बादल के गरजने के माध्यम से कविता में नूतन विद्रोह का आह्वान किया है।

८‘ .कहीं साँस लेते हो ऐसा कवि ने किसके लिए कहा है और क्यों ’?

अथवा

कवि ने फागुन का मानवीकरण कैसे किया है ?

उ फागुन महीने में तेज हवाएँ चलती हैं जिनसे पत्तियों की सरसराहट के बीच साँयसाँय की आवाज़ आती - है। इसे सुनकर ऐसा लगता है, मानो फागुन साँस ले रहा है। कवि इन हवाओं में फागुन के साँस लेने की कल्पना कर रहा है। इस तरह कवि ने फागुन का मानवीकरण किया है।

९‘ .उड़ने को नभ में तुम पर ’पर कर देते हो- फागुन लोगों के मन को किस के आलोक में बताइए कि तरह प्रभावित करता है?

उ ‘ .९.उड़ने को नभ में तुम पर से ज्ञात होता है कि फागुन में चारों ओर इस तरह सौंदर्य फैल जाता है जैसे रंग-बिरंगे फूलों से वातावरण मनोरम हो जाता है| फूलों की खुशबु से वातावरण सुगन्धित हो उठता हैं| ऐसे में लोगों का मन कल्पनाओं में खोकर उड़ान भरने लगता है।

१० ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है फागुन में .?

उ . फागुन में प्रकृति की शोभा अपने चरम पर होती है| पेड़पौधें नए पत्तों-, फल और फूलों से लद जाते हैं, हवा सुगन्धित हो उठती है। आकाश साफ स्वच्छ होता है। पक्षियों के समूह आकाश में विहार करते दिखाई देते हैं। बाग बगीचों और पक्षियों में उल्लास भर जाता हैं। इस तरह फागुन का सौंदर्य बाकी ऋतुओं से भिन्न है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

१.उत्साह कविता का मूल भाव क्या है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।

उ मूल भाव यह है कि जीवन एक संघर्ष के समान है कविता का , जिसे कवि अग्निपथ मानता है। इस मार्ग पर आत्मविश्वास के साथ मनुष्य को आगे बढ़ना है। मनुष्य को चाहिए कि वह इन चुनौतियों से ... न घबराए। कष्टों से विचलित नहीं होते हुए भी अपने पुरुषार्थ पर भरोसा करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहे।

२‘ .**अट नहीं रही है कविता में चारों ओर छाई सुंदरता देखकर ’कवि** है **क्या करना चाहता** ?

उ‘ . अट नहीं रही है ’ कविता में चारों तरफ छाई सुंदरता को देखकर कवि का मन अभिभूत है। हरियाली का वातावरण अनुपम दृश्य की सृष्टि कर रहा है |फागुन माह में पृथ्वी पल्लव पुष्पों से सुशोभित हो गई हैं| कवि इस सौंदर्य से अपनी दृष्टि हटा पाने में असमर्थ है। वह इस सौंदर्य को निरंतर निहारता जा रहा है। इस सौंदर्य दर्शन से वह तृप्त नहीं होता है।

३ . **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला प्रकृति प्रेमी कवि है अपनी पाठ्यपुस्तक के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उ हमारी पाठ्य पुस्तक क्षितिज में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की उत्साह और अट नहीं रही है दो कविताएं . दी गई है। कवि ने दोनों कविताओं में ही बादल और फाल्गुन मास जैसे प्राकृतिक अवयवों का प्रयोग किया है। कवि ने प्रकृति के तत्वों से ही कविता में रस भरा है। फाल्गुन मास के प्राकृतिक सौंदर्य व बादल के माध्यम से नवजीवन भरने की कला कवि के प्रकृति प्रेम को स्पष्ट करती है।

यह दंतुरित मुसकान, फसल

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

तुम मुझे नहीं पाए पहचान?
देखते ही रह गए अनिमेष।
थक गए हो?
आंख लूं मैं फ़ेर
क्या हुआ यदि हो सके परिचित न पहली बार?
यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज
मैं न सकता देख
मैं न पाता जान
तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!

प्रi. **तुम मुझे 'पाए नहीं पहचान'? शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ?**

क.i. माँ ख. बेटा ग. पिता घ. नहीं

ii.**शिशु किस कारण थक गया होगा?**

क. खेलने से ख. सोने से ग. जागने से घ. अजनबी को लगातार देखने से

iii. **कवि ने शिशु की मां को धन्यवाद क्यों दिया होगा?**

क. उनकी सुंदरता के कारण ख. घर संभालने के कार

ग. भोजन बनाने के कारण घ.शिशु से मिलवाने के कारण

iv **शिशु की मां यदि माध्यम में बनी होती तो कवि किस से वंचित रह जाता?**

क) शिशु को देखने से ख) शिशु की मुस्कान से ग) पिता के एहसास से घ) उपरोक्त सभी सही हैं

v. **कथन और कारण पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए**

कथन: शिशु के सफ़र से शेफालिका के फूल झड़ने लगते हैं।

कारण: शिशु बहुत नटखट है

विकल्प

क. कथन सही है किंतु कारण गलत है।

ख.कथन गलत है किंतु कारण सही है।

ग. कथन और कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

घ. कथन के लिए कारण सही व्याख्या नहीं है

उत्तरमाला - i. ग, ii. घ, iii. घ, iv. घ, v. क

1. **'यह दंतुरित मुसकान" को स्पष्ट करते हुए बताइए कि यह मरे हुए व्यक्ति में भी जान कैसे डाल देती है?**

उ) यह मुसकान इतनी मनोहर होती है कि मरे हुए व्यक्ति में जान डाल देती है अर्थात जीवन से निराश, हताश तथा उदासीन व्यक्ति के मन को खुशी से भर देती है।

2. **नए निकले हुए दांतों वाले बच्चे कि मुसकान देखकर कवि को क्या लगता है?**

उ) कवि को लगता है कि बच्चे कि मुसकान मरे हुए व्यक्ति को जीवित करने की क्षमता रखती है। यह मुसकान इतनी मधुर और मोहक है कि इसमे कठोर हृदय को भी पिघला देने की शक्ति है।

3. **बच्चा किसी कों घूरकर क्यों देखता है? कवि बच्चे की ओर से आँख फेर लेने को क्यों कहता है?**

उ) बच्चा जब पहली बार किसी को देखता है, उसे पहचान न पाने के कारण घूरता है।कवि बच्चे की ओर से आँख फेर लेने के लिए कहता है क्योंकि बच्चा घूरता घूरता थक जाएगा।

4. **मधुपर्क से क्या तात्पर्य है? इसका प्रयोग किस लिए हुआ है?**

उ) मधुपर्क दही , घी, शहद, जल और दूध के मिश्रण को कहा जाता है। कविता में इसका प्रयोग बच्चे को जीवन देने वाला आत्मीयता की मिठास से युक्त माँ के प्यार के रूप में हुआ है।

5. **अनिमेष देखने से क्या तात्पर्य ?तथा छोटे बच्चे ऐसा क्यों करते है, लिखें**

उ) अनिमेष से तात्पर्य बिना पलक झपकाए एक ओर देखते रहना है , तथा जब छोटे बच्चे किसी को पहली बार मिलते हैं तो उसे पहचानने और जानने के लिए ऐसा करते हैं।

दीर्घ उतरीय प्रश्न

1.कवि ने शिशु की मुस्कान को दंतुरित मुस्कान क्यों कहा है? कवि के मन पर उस मुस्कान का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- कवि ने शिशु की मुसकान को दंतुरित मुसकान कहा है क्योंकि उसकी मुसकान बहुत भोली, सरल व निश्छत होती है। बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। उन्हें लगता है कि मानो मृतक शरीर में प्राणों का संचार हो गया हो, कमल तालाब छोड़कर उनकी झोंपड़ी में खिल उठे हो, पत्थर हृदय पिघलकर जलधारा में बदल गया हो और बबूल या बाँस के वृक्षों से शेफालिका के फूल झरने लगे हों।

2. **'छू गया तुमसे कि झरने लगे शेफालिका के फूल' उक्त पंक्ति का आशय नागार्जुन की कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- कवि नागार्जुन ने अपनी इस कविता में बच्चे की मधुर, मोहक और जीवनदायिनी मुस्कान का उल्लेख किया है। उनके अनुसार बच्चे की दंतुरित मुसकान मृतक में भी प्राणों का संचार कर सकती है। इस पंक्ति का आशय है कि बच्चे का स्पर्श करने से ऐसा लगता है कि बाँस और बबूल से भी शेफालिका के फूल झरने लगे हों। अर्थात कठोर और नीरस हृदय भी भोले-भाले, अबोध शिशु के स्पर्श से सरस और आनंदित हो उठता है।

3. **'यह दंतुरित मुस्कान' के आधार पर मुस्कान की दो विशेषताएँ समझाइए ।**

उत्तर- इस कविता के द्वारा कवि ने बच्चे की सरल, भोली तथा मनमोहक मुस्कान का चित्रण किया है। उसकी मुस्कान अत्यंत मधुर है, जो मृतक में भी प्राणों का संचार कर सकती है। यह मुस्कान स्वाभाविक है, जिसमें किसी प्रकार का कोई बनावटीपन अथवा दोष नहीं है।

<u>फ़सल</u>

कवि ने अनेक तत्वों का उल्लेख किया है, जिसके सहयोग से फसल का निर्माण होता है। किसान की भूमिका और परिश्रम के साथ-साथ मिट्‌टी, जल, सूर्य, हवा आदि सभी के योगदान को बताया है। प्रकृति और मनुष्य के परस्पर सहयोग से फ़सल बनता है ।

एक के नहीं,
दो के नहीं
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू;
एक के नहीं,
दो के नहीं,
लाख लाख कोटि कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा:

एक की नहीं,
दो की नहीं,
हजार हजार खेतों की मिट्टी का गुणधर्म :
फसल क्या है ?
और तो कुछ नहीं है
वह नदियों के पानी का जादू है वह हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी- काली -संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रुपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।

प्रश्न 1. फसल के लिए पानी कहाँ से आता है?
(क) तालाब से (ख) समुद्र से (ग) नदियों से (च) उपरोक्त सभी से

प्रश्न 2. लाख लाख कोटि कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा" से कवि का अभिप्राय है-
(क) आधुनिक मशीने (ख) पालतू पशु (ग) सभी खेतिहर किसान (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3. धान और गेहूं की फसल के लिए मिट्टी' कैसी होनी चाहिए ?
(क) एक जैसी ही (ख) अलग अलग प्रकार की (ग) उपरोक्त दोनो (घ) कोई भी सही उतर नहीं

प्रश्न 4. कथन और कारण पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए
कथन:- फ़सल सिर्फ तालाब के पानी से तैयार होती हैं।
कारण:- फसल ढेर सारी नदियों के पानी का जादू है।
विकल्प
(क) कथन सही है, किन्तु कारण गलत है।
(ख) कथन गलत है, किन्तु कारण सही है।
(ग) कथन और कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।
(घ) कथन के लिए कारण सही व्याख्या नहीं है।

प्रश्न 5. कवि ने बाँस और बबूल को किसके प्रतीक के रूप में बताया है?
(क) नम्र, प्रेमी और सुहृदय लोगों के (ख) नीरस, शुष्क और कठोर स्वभाव वाले लोगों के
(ग) मोटे लोगों के (घ) काले और लंबे लोग

उत्तरमाला- 1. ग, 2. ग,, 3. ख, 4. ख, 5. ख

लघुउत्तरीय प्रश्न

1.कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्वों की बात कि गई है।वे आवश्यक तत्व कौन-कौन से है?

उत्तर: फसल को उगाने में प्राकृतिक तत्व जैसे नदियों का जल, खेतों की भूरी, काली, संदली मिट्टी,सूर्य की किरणें, हवा तथा मानवीय संपर्क (जैसे हाथों का स्पर्श और कठोर परिश्रम आदि)आवश्यक तत्व है।

2. भाव स्पष्ट कीजिए-
रुपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।
उत्तर: पंक्तियों का भाव है कि फसल के उगने में सूरज की किरणों अर्थात ताप तथा हवा की थिरकन अर्थात आनुपातिक नमी का भी योगदान है।सूरज की किरणों का रूपांतरण ही भोजन के रूप में

फसलबनकर संचित होता है ।इसी से वे बढ़ती है,विकसित होती है। इसी प्रकार हवा के स्पर्श से फसलें अपनासंकोच त्यागकर फलने-फूलने लगती है।

3.फसल' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते है ?

उत्तर: 'फसल' कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि मानव और प्रकृति के सहयोग सेसृजन संभव है। फसल का नाम सुनते ही लहराती फसल और श्रमिक का श्रम आँखों के समक्ष डोलने लगता है।

4. कवि ने फसल के पैदा होने में प्रकृति से ज्यादा महत्व किसान को क्यों महत्व दिया है?

उत्तर- फसल उगाने में प्रकृति और किसान दोनों का ही योगदान है परन्तु किसान का महत्व अधिक है क्योंकि किसान कठिन परिश्रम करके खेतों में जोतना, बोना ,सींचना तथा उसमें खाद आदि डालकर उसकी देखभाल और रखवाली करता है ।

5. फसल को नदियों के पानी का जादू क्यों कहा है?

उत्तर- फसल को नदियों के पानी का जादू बताया गया है ।इसका कारण यह है की मिट्टी के अंदर बोये बीज पर नदियों का पानी जादू सा असर दिखा करता है इससे वह अंकुरित होकर धरती को फोड़ कर बाहर निकल आता है जिस प्रकार जादूगर अपने जादू से किसी चीज को अचानक प्रकट कर देता है, बीज का अंकुरण और धरती से बाहर निकलना भी जादू के समान प्रतीत होता है।

6.'फसल' कविता में 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' किसे कहा गया है?

उत्तर- 'फसल' कविता में किसानों द्वारा खेतों में किए गए परिश्रम को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' कहा गया है। किसान को खेतों में अपनी फसल उगाने में हाथों से काम करना पड़ता है। उसके हाथों का अथक परिश्रम सराहना का पात्र है। खेतों की फसल किसान-मजदूरों के हाथों का प्यार भरा स्पर्श पाकर ही फलती-फूलती है।

7.फसल' कविता में फसल किसे कहा गया

उत्तर : कवि नागार्जुन के अनुसार फसल नदियों के पानी जादू, मनुष्य के हाथों के स्पर्श की महिमा, भूरी-काली सी मिट्टी का गुण धर्म, सूरज की किरणों का रूपांतरण और हवा थिरकन का सिमटा हुआ संकोच है अर्थात् फसल के उगने में नदियों के पानी, उपजाऊ मिट्टी, मनुष्य का परिश्रम, सूर्य की किरणें किरणों और हवा का सामूहिक योगदान होता है। फसल इन सबका परिणाम होता है।

संगतकार

मंगलेश डबराल

कविता का सार

संगतकार हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि श्री मंगलेश डबराल की एक प्रसिद्ध रचना है। इस कविता में उन व्यक्तियों के योगदान को रेखांकित किए गया है जो पर्दे के पीछे रहकर अपनी भूमिका को बखूबी अंजाम देते है।

संगतकार कविता गायन के मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार के महत्व और उसकी अनिवार्यता की ओर संकेत करती है। जब मुख्य गायक अपनी भारी भरकम आवाज में गाता है तो उसका संगतकार अपनी कमजोरी कांपती हुई आवाज से उसका साथ देता है। कई बार ऐसा होता है कि मुख्य गायक का गला बैठ जाता है या उसका उत्साह फीका पड़ने लगता है तब निराशा के इन क्षणों में संगतकार उसके स्वर को संभालता है। जब कभी मुख्य गायक किसी अंतरे को गाते - गाते जटिल तानों में उलझ जाता है या अपनी सरगम को लांघकर ऊंचे अनहद स्वर में भटक जाता है, तब संगतकार ही स्थाई पंक्तियों को पकड़े रहता है। जब कभी मुख्य गायक तार सप्तक गाते - गाते स्वर को बहुत ऊंचा उठा देता है और उसकी आवाज भी कांपने लगती है तब वह उसकी आवाज में अपनी आवाज को मिलाकर उसे बल प्रदान करता है और उसके खोए विश्वास को वापस लौटा ले आता है तथा फिर उसे गाने की प्रेरणा देता है। वह हमेशा कोशिश करता है कि कहीं उसकी आवाज मुख्य गायक की आवाज से अधिक प्रभावशाली न हो जाए। उसकी इस कोशिश को उसकी असफलता नहीं, मनुष्यता समझा जाना चाहिए यह उसका त्याग है।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मुख्य गायक को चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज सुंदर कमजोर कांपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला कोई दूर का रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी गूंज मिलाता आया है प्राचीन काल से

क. उपर्युक्त पंक्तियों के रचयिता है-
1) नागार्जुन 2) ऋतु राज 3) मंगलेश डबराल 4) गिरिजा कुमार माथुर

ख. मुख्य गायक की आवाज कैसी है ?
1) चट्टान की तरह भारी 2) कमजोर 3) कांपती हुई 4) सुंदर

ग. कवि ने इन पंक्तियों में किसके महत्व को बताया है?
1) संगीतकार की 2) संगतकार की 3) गीतकार की 4) तबला वादक की

घ. संगतकार और मुख्य गायक का रिश्ता है -
1) छोटा भाई 2) दूर का रिश्तेदार 3) शिष्य 4) कुछ भी हो सकता है

ड. मुख्य गायक के भारी स्वर का साथ देती आवाज किसकी है ?
1) कवि की 2) संगतकार की 3) संगीतकार की 4) इनमें से कोई नहीं

उत्तर - क. (3), ख.(1), ग.(2), घ.(4), ड(2)

2. गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लांघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को संभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था ।

प्रश्न 1 - पंक्ति में 'अनहद' का अर्थ स्पष्ट कीजिए -
उत्तर - 'अनहद' का अर्थ है -सीमा से परे , असीम या दिव्य लोक जहां स्वर्गिक आनंद की अनुभूति हो ।

प्रश्न 2 - अंतरे की तानों को जंगल क्यों कहा गया है ?
उत्तर - अंतरे की तानों को जंगल कहा गया है क्योंकि गाते वक्त गायक अंतरे में ही उलझकर रह जाता है और स्थायी को भूल जाता है।

प्रश्न- 3 -स्थायी का क्या अर्थ होता है ?
उत्तर - स्थायी का अर्थ है किसी भी गाने की मुख्य पंक्ति या टेक, जो गीत को गाते वक्त बीच-बीच में दोहराई जाती है ।

प्रश्न 4 - संगतकार क्या कार्य करता है ?
उत्तर - जब मुख्य गायक अपने गीत में ही डूब जाता है तब संगतकार उसे वापस मूल स्वर में ले आता है और उसे भटकने नहीं देता ।

प्रश्न 5 - कवि एवं कविता का नाम लिखिए ।
उत्तर- मंगलेश डबराल एवं संगतकार ।

लघुत्तरीय प्रश्न
क. संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?
उत्तर: संगतकार के माध्यम से कवि किसी भी कार्य अथवा कला में लगे सहायक कर्मचारियों और कलाकारों की ओर संकेत कर रहा है। वे सहायक कलाकार स्वयं को महत्व न देकर मुख्य कलाकार और मुख्य व्यक्ति के महत्व को बढ़ाने में अपनी शक्ति लगा देते हैं।

ख. संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?
उत्तर: संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा बड़े-बड़े नेताओं, अभिनेताओं, संतों- महात्माओं के साथ भी इसी प्रकार सहयोग करते हैं। नेताओं के इर्द-गिर्द रहने वाले सभी सहायक उपनेता अपने बड़े नेता के महत्व को बढ़ाने में लगे रहते हैं।

ग. संगतकार अपने स्वर को ऊंचा न उठाने का प्रयास क्यों करता है?
उत्तर: संगतकार अपने स्वर को ऊंचा न उठाने का प्रयास इसलिए करता है ताकि मुख्य गायक की श्रेष्ठता बनी रहे। संगतकार भी संगीत में अत्यंत प्रवीण होता है,परंतु गायक की गरिमा को ध्यान में रखकर मानवीयता दर्शाते हुए अपने स्वर को धीमा रखता है।

घ. तार सप्तक में गाते समय गायक का गला बैठने लगता है, उस समय उसकी किस प्रकार की मन: स्थिति हो जाती है?

उत्तर: तार सप्तक में गाते समय जब गायक का गला बैठने लगता है, उस समय उसकी प्रेरणा उसका साथ छोड़ने लगती है, उसका उत्साह समाप्त होने लगता है। उस समय ऐसा लगता है जैसे उसकी आवाज से राख की तरह से कोई चीज गिर रही हो। अर्थात गायक की आवाज बुझने लगती है और वह निराश हो जाता है।

ङ सफलता के चरम शिखर पर पहुंचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाते हैं तब उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं?

उत्तर: जब कोई व्यक्ति सफलता के चरम शिखर पर पहुंचकर अचानक लड़खड़ा जाता है तो उसके सहयोगी ही उसे बल ,उत्साह, शाबाशी और साथ देकर संभालते हैं। वह अपनी शक्ति उसके लिए लगा देते हैं। वे उसकी कमी को पूरा करने का भरसक प्रयास करते हैं।

च. संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक - गायिकाओं की मदद करते हैं?

उत्तर: वे गायक द्वारा और कहीं गहरे चले जाने पर उसकी स्थायी पंक्ति को पकड़े रखते हैं तथा मुख्य गायक को वापस मूल स्वर पर ले आते हैं। वे मुख्य गायक की थकी हुई, टूटती बिखरती आवाज को बल देकर सहयोग देते हैं। उन्हें अकेला नहीं पड़ने देते, बिखरने नहीं देते।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

क. **संगतकार कविता में संगतकार त्याग की मूर्ति है कैसे**?

उत्तर: संगतकार त्याग की मूर्ति है क्योंकि उसका संपूर्ण जीवन मुख्य गायक के लिए अर्पित हो जाता है वह सर्वथा सक्षम होते हुए अपनी सामर्थ्य मुख्य गायक की सफलता के लिए अर्पित कर देता है। वह नहीं चाहता कि मुख्य गायक से आगे निकल जाए। त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में उस दायित्व का निर्वाह करते हुए प्रसन्न होता हुआ ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे गुरु अपने शिष्य की सफलता पर प्रसन्न हो रहा है। यह भाव तभी रहता है जब मुख्य गायक संगतकार के प्रति सम्मानीय भाव रखता है इसलिए संगतकार त्याग की भी प्रतिमूर्ति होता है।

ख. मुख्य गायक और संगतकार के मध्य में एक 'अपनत्व' की कड़ी दोनों को जोड़े रहती है। उसके टूटने के क्या परिणाम हो सकते हैं? अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर - कवि संगतकार की परोपकार और त्याग की भावना मुख्य गायक को ऊंचाई तक ले जाती है। संगतकार मुख्य गायक का साथ नहीं छोड़ता है। साथ-साथ बने रहने में दोनों के मध्य में जो भाव होता है अपनत्व का होता है। यदि अपनत्व की भावना समाप्त हो जाती है तो परोपकार और त्याग की भावना भी स्वाभाविक समाप्त हो जाती है। अपनत्व समाप्त होने पर साथ-साथ रहना विवशता हो सकती है। इससे तारतम्य बिगड़ जाता है। तारतम्य बिगड़ने पर मुख्य गायक की सफ़लता खटाई में पड़ जाती है।

अतः मुख्य गायक और संगतकार के मध्य अपनत्व की भावना जितनी मजबूत होती है उतना ही परिणाम भी श्रेयस्कर होता है अन्यथा सब कुछ बिखर कर रह जाता है।

ग- संगतकार जैसे व्यक्ति की जीवन में क्या उपयोगिता होती है ? स्पष्ट रूप में समझाइए।

उत्तर - संगतकार जैसे व्यक्ति सच्चे अर्थों में सहायक होते हैं । वे स्वयं के लिए कुछ नहीं करते अपितु अपने स्वामी के प्रभाव को बढ़ाने में अपना सहयोग देते हैं। ऐसा करते हुए वे कभी मुख्य गायक का स्थान नहीं लेना चाहते । वे सदा अपने स्वामी के प्रभाव को बढ़ाने के लिए स्वयं को दबाकर ही रखते हैं।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

क. संगतकार की आवाज की क्या विशेषता थी?

उत्तर - संगतकार की आवाज मनोरम, कमजोर तथा कांपती हुई थी।

ख. 'जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान' में कौन सा अलंकार है?

उत्तर - उत्प्रेक्षा अलंकार

ग. संगतकार किन कठिन परिस्थितियों में मुख्य गायक का साथ देता है?

उत्तर - मुख्य गायक जब गाते गाते मुख्य लय और स्वर को छोड़कर किसी और लय में भटक जाता है, तब संगतकार ही स्थायी पंक्ति को पकड़े रहता है और मुख्य गायक को भटकने से बचा लेता है।

घ- संगतकार 'नौसिखिए' का साथ क्यों देता है?

उत्तर - संगतकार अपनी भूमिका को समझता है और वह मुख्य गायक नहीं है बल्कि मुख्य गायक के गायन को सुंदर, मोहक और प्रभावशाली बनाने के लिए समर्पित है। इसलिए वह अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है।

ड़- कवि ने मुख्य गायक के कैसे बचपन की बात कही है ?

उत्तर - मुख्य गायक भी कभी बचपन में नौसिखिया था। तब वह लय और तान की अनेक भूलें करता था। कवि ने मुख्य गायक के उसी नौसिखिए बचपन की बात याद कराई है।

च- 'तार सप्तक' किसे कहते हैं?

उत्तर सरगम के उच्च स्वर को तारसप्तक कहते हैं।

छ- ' राख जैसा' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर - जब गायक उच्च स्वर में गाता है तो थकावट या खिंचाव के कारण उसका गला जवाब देने लगता है। उसकी गायन शक्ति मंद पड़ने लगती है तब यों लगता है मानो उसके गले से राख सी गिरने लगी हो।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 -संगतकार कविता में कवि क्या संदेश देना चाहते हैं ?

उत्तर कवि की संगतकार के प्रति सहानुभूति है उसकी दृष्टि में संगतकार मुख्य गायक के समान ही सराहनीय है मुख्य गायक की सफलता में संगतकार का श्रेय काम करके नहीं देखना चाहिए। यद्यपि मुख्य गायक के बिना संगतकार का अस्तित्व नहीं है किंतु मुख्य गायक की सफलता संगतकार के सफल सहयोग पर निर्भर है। मुख्य गायक के निराश होने पर, विश्वास लड़खड़ाने पर, स्वर बिगड़ने पर उसके तार सप्तक में चले जाने पर संगतकार ही उसे संभलता है ।संगतकार के बिना मुख्य गायक की सफलता शंका में रहती है ,अतः मुख्य गायक की सफलता में दोनों ही समान रूप से सामान्य और प्रशंसनीय है ।

प्रश्न 2 -संगतकार किन-किन परिस्थितियों में स्थाई को संभालता है ?

उत्तर -जब मुख्य गायक अंतरे को गाते समय अपने स्वर को बहुत ऊंचा स्वर में गाते हैं तब संगतकार उनके स्वर को संभालने के लिए स्थाई का स्वर पकड़ कर रखता है ।

प्रश्न 3. मुख्य गायक और संगतकार की परंपरा के औचित्य पर विचार प्रकट कीजिए ।

उत्तर: मुख्य गायक और संगतकार की परंपरा सदैव से चली आ रही है । यह परंपरा चली आ रही है और अब तक जीवंत है और रहेगी भी । इस परंपरा को समाप्त नहीं किया जा सकता है, तो अवश्य ही इस परंपरा का महत्व है । इस परंपरा के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता है। अतः यह परंपरा उचित परंपरा है । यह उचित परंपरा तब और अधिक उचित और महत्वपूर्ण हो जाती है जब मुख्य गायक और संगतकार का ध्येय,जीत- हार प्रशंसा एक दूसरे की पूरक बनी रहती है । ऐसा न होने पर छिन्न तार की तरह तार-तार होने पर उपहास का कारण बन जाती है । परंपरा का औचित्य दोनों की भावना पर निर्भर है।

नेताजी का चश्मा

स्वयं प्रकाश

पाठ के मुख्य बिंदु-

1- 'नेताजी का चश्मा' लेखक-स्वयं प्रकाश जी द्वारा लिखी एक प्रेरणास्पद कहानी है।बोलचाल की भाषा के सहज,स्वाभाविक प्रयोग से कहानी जीवंत बन गयी है और देशभक्ति के प्रति समाज की भिन्न-भिन्न सोच को उजागर करती है।

2- देश के लिए लड़ाई लड़ना ही मात्र देशभक्ति नहीं है बल्कि जो जहाँ है वहीं अपने-अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करते हुए देशभक्ति का परिचय दे सकता है। हर छोटा-बड़ा कार्य महत्त्वपूर्ण है यदि उसके पीछे की भावना अच्छी है- यह कहानी हमें यही संदेश देती है।

देश में अनगिनत लोग हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से देश को अपना योगदान देते हैं, बिना किसी स्वार्थ के। उनके द्वारा किए गए कार्य किसी न किसी के लिए प्रेरणा का काम कर जाते हैं। 'कैप्टन' नामक कहानी का मुख्य पात्र इसी वर्ग का है।

3- एक कस्बे के बाजार के चौराहे के बीच में स्थापित बिना चश्मे वाली नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की मूर्ति को कहानी का विषय बनाया गया है।

4- कहानी में हालदार साहब, पानवाला, कैप्टन तथा काल्पनिक मोतीलाल मास्टर एवं अदृश्य रूप में सांकेतिक बच्चे तथा नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मूर्ति-कहानी के पात्र हैं।

5 - कहानी में देशभक्ति का संदेश तो है ही, साथ ही देशभक्त लोगों का मजाक उड़ाने वाले और अपने स्वार्थ के लिए किसी भी हद तक जाने वाले लोगों पर व्यंग्य भी है।

6- कहानी में तीन वर्ग के लोग सामने आते हैं-

(क) देशभक्त- इसमें नेताजी सुभाष चंद्र बोस हैं जो कि अपना सब कुछ देश के लिए समर्पित कर देते हैं। और साथ ही 'कैप्टन' जैसे लोग भी आते हैं जो चुपचाप ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से अपना काम करते रहते हैं।

(ख) देशभक्तों की प्रशंसा करने वाले- इसमें हालदार साहब आते हैं।यह लोग स्वयं तो कुछ नहीं करते।हाँ, जो देशभक्त हैं उनकी सराहना करते हैं, उनके कार्यों को देखकर भावुक हो जाते हैं, प्रशंसा करते हैं।

(ग) देश के गद्दार या देशभक्ति का मजाक उड़ाने वाले- इसमें पानवाला आता है।

यह हमेशा देशभक्ति या सच्चाई, ईमानदारी पर चलने वाले लोगों की हँसी उड़ाने वाला वर्ग है- जो ना तो खुद कुछ करेगा ना किसी को करने देगा।

7- कहानी का उद्देश्य देशभक्ति उत्पन्न करना एवं देशभक्त लोगों के प्रति सम्मान की भावना रखना है। बड़ों के कार्यों का अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों पर प्रभाव पड़ता है। जो चीज़ हम बच्चों में देखना चाहते हैं उन्हें हमें स्वयं में करके दिखाना होगा; क्योंकि कथनी से अधिक करनी का महत्त्व होता है।

कैप्टन के मरने के बाद बच्चों द्वारा सरकंडे का चश्मा बनाकर मूर्ति पर लगा दिया जाना- इसी बात को सिद्ध करता है। कैप्टन ने किसी से कुछ नहीं कहा;लेकिन उसका मूर्ति पर रोज चश्मा लगाने का कार्य अनजाने ही बच्चों के अंदर देशभक्ति की भावना को उत्पन्न कर गया।

और यही नहीं बल्कि पान वाला जैसा व्यक्ति भी अंत में उसके लिए भावुक हो जाता है और आँखों में आँसू भर लाता है। अच्छे कार्यों का असर कभी ना कभी देखने को अवश्य मिलता है, भले ही देर से क्यों ना मिले।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

1- नेताजी की आँखों पर कैप्टन ने कौन-सा चश्मा लगाया?

(क) चौकोर वाला

(ख) धूप वाला

(ग) गोल वाला

(घ) सभी प्रकार के बदल-बदलकर

2- निम्नलिखित में से क्या काम नगरपालिका नहीं करती थी?

(क) स्कूल बनवाना

(ख) सड़क पक्की बनाना

(ग) पेशाब घर बनवाना

(घ) लोगों के लिए घर बनवाना

3- मूर्ति किसने बनाई होगी?

(क) मोतीलाल जी ने

(ख) बनवारी लाल जी ने

(ग) गोपाल जी ने

(घ) मोहन जी ने

4- निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

(क) मूर्ति फ़ौजी वर्दी में थी

(ख) मूर्ति पूरे आकार की थी

(ग) मूर्ति संगमरमर की थी, चश्मा सचमुच का था

(घ) मूर्ति में नेताजी मासूम और कमसिन लग रहे थे

5- हालदार साहब किस चीज़ के बारे में सोच रहे थे कि वह मज़ाक की चीज़ होती जा रही है?

(क) चश्मा

(ख) कैप्टन

(ग) देशभक्ति

(घ) पान

6- आजाद हिंद फ़ौज का संबंध किस स्वतंत्रता सेनानी से है?

(क) चंद्रशेखर आजाद

(ख) सुभाष चंद्र बोस

(ग) वल्लभ भाई पटेल

(घ) भगत सिंह

7- “वो लंगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में।” - यहाँ लंगड़ा किसके लिए आया है?

(क) पान वाले के लिए

(ख) कैप्टन के लिए

(ग) हालदार साहब के लिए

(घ) कस्बे के आदमी के लिए

8- पान वाला किस चीज़ के बारे में और बात करने को तैयार नहीं था?

(क) मूर्तिकार के बारे में

(ख) कैप्टन के बारे में

(ग) कैप्टन के नाम के बारे में

(घ) चश्मे के बारे में

9- चौराहे की अधिकांश दुकानें क्यों बंद थी?

(क) सार्वजनिक अवकाश के कारण

(ख) सप्ताह में एक दिन बंद होने के कारण

(ग) कैप्टन की मृत्यु के कारण
(घ) इनमें से कोई भी नहीं

....

उत्तर-
1- (घ)
2- (घ)
3- (क)
4- (ख)
5- (ग)
6- (ख)
7- (ख)
8- (ग)
9- (ग)

लघूत्तरीय प्रश्न-
1- अगर आप सुभाष चंद्र बोस जी की बिना चश्मे की मूर्ति देखते तो आप क्या करते और आप चश्मा पहनाते तो मूर्ति पर कैसा चश्मा पहनाते?
2- पाठ में नगर पालिका के कार्यों का वर्णन है। आपके शहर में या गाँव में भी नगर पालिका होगी वह क्या-क्या कार्य करती है उसके कार्यों का वर्णन कीजिए।
3- आज के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि कैप्टन के कार्य को देखकर लोग क्या-क्या कहते या क्या करते?
4- कैप्टन की मृत्यु के बाद उसकी हँसी उड़ाने वाला पान वाला भी भावुक होकर रो देता है। इस प्रसंग से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?
5- कैप्टन के द्वारा मूर्ति पर चश्मा लगाने के कार्य को देखकर बच्चों के अंदर भी देशभक्त की भावना उत्पन्न हो गई और उन्होंने कैप्टन के मरने के बाद सरकंडे का चश्मा बनाकर मूर्ति पर लगा दिया। इस प्रसंग के आधार पर बताएँ कि हम अपने आचार-व्यवहार और कार्यों के द्वारा बच्चों के अंदर किस-किस चीज़ को विकसित कर सकते हैं?
उत्तर-1- अगर हम सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति को बिना चश्मे का देखते, तो हम एक सचमुच का चश्मा खरीद कर उस मूर्ति पर फैवीक्विक से चिपका देते।चश्मा हम वैसा ही खरीदते जैसा कि सुभाष चंद्र बोस जी पहनते थे।

2- सड़क बनवाना,नाली बनवाना,सीवर लाइन बनाना,पौधे लगाना,कूड़ा उठवाना और घर-घर से ले जाना,मच्छर मारने के लिए धुआँ करवाना,दवा का छिड़काव,पेशाबघर बनवाना,सड़क-नालियों की सफाई आदि कार्य नगरपालिका करती है।

3- आज चूँकि शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो चुका है,तो लोग शायद ही कैप्टन की हँसी उड़ाते;बल्कि इस समस्या का स्थायी समाधान उसे बताते या स्वयं कर देते कि एक नेताजी के चश्मे जैसा चश्मा खरीदकर मूर्ति पर फैवीक्विक से चिपका देते।कैप्टन की तारीफ ही करते।कुछ बच्चे वगैरहा भले ही उसकी हँसी उड़ा सकते थे।

4- कैप्टन की मृत्यु के बाद पानवाले के रोने से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि अच्छाई का असर कभी न कभी अवश्य होता है।हम कुछ भी सही कर रहे हैं,तो भले ही लोग आज हँसी उड़ाएँ,लेकिन कभी न कभी

वह उस कार्य के महत्व को समझ ही जाते हैं,अतः हमें विचलित नहीं होना चाहिए।अच्छे कार्य देर से ही सही,पर प्रेरणा का काम करते हैं।

5- हम अपने आचार-व्यवहार और कार्यों के माध्यम से बच्चों में अच्छी आदतें विकसित कर सकते हैं और जीवन-मूल्यों का विकास कर सकते हैं।उनमें सीखने के प्रति उत्साह उत्पन्न कर सकते हैं।उन्हें जीवनोपयोगी कार्य सिखा सकते हैं और विभिन्न परिस्थितियों में और भिन्न-भिन्न मनुष्यों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए-सिखा सकते हैं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न-

1- निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए-

जैसा कि कहा जा चुका है, मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट।और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फ़ौजी वर्दी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो...' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज़ की कसर थी जो देखते ही खटकती थी। नेता जी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे और चौराहे पर पान खाने रुके तभी उन्होंने इसे लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुकभरी मुस्कान फैल गई। वाह भई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल!

(1) मूर्ति किस पत्थर की बनी थी?

(क) संगमरमर की (ख) लाल पत्थर की (ग) काले पत्थर की (घ) सीमेंट की

(2) मूर्ति में नेताजी कैसे दिख रहे थे?

(क) मासूम (ख) कमसिन (ग) सुंदर (घ) उपर्युक्त तीनों

(3) मूर्ति में क्या कमी थी?

(क) टोपी नहीं थी (ख) बटन नहीं थे (ग) चश्मा नहीं था (घ) कोट नहीं था

(4) हालदार साहब के चेहरे पर क्या चीज़ देखकर कौतुकभरी मुस्कान फैल गई?

(क) मूर्ति का आकार देखकर (ख) मूर्ति का रंग देखकर

(ग) मूर्ति की टोपी देखकर (घ) मूर्ति का चश्मा देखकर

(5) मूर्ति को देखते ही किनके नारे याद आने लगते?

(क) गांधी जी के (ख) नेताजी के (ग) नेहरू जी के (घ) भगत सिंह के

2- निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए-

हालदार साहब की आदत पड़ गई, हर बार कस्बे से गुजरते समय चौराहे पर रुकना, पान खाना और मूर्ति को ध्यान से देखना। एक बार जब कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा तो पानवाले से ही पूछ लिया,

"क्यों भई! क्या बात है? यह तुम्हारे नेताजी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है? पानवाले के खुद के मुँह में पान ठुसा हुआ था। वह एक काला, मोटा और खुशमिज़ाज़ आदमी था। हालदार साहब का प्रश्न सुनकर वह आँखों ही आँखों में हंसा उसकी तोंद थिरकी। पीछे घूमकर उसने दुकान के नीचे पान थूका और अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाकर बोला, "कैप्टन चश्मेवाला करता है।"

(1) 'बत्तीसी दिखाना' से क्या अभिप्राय है?

(क) ज़ोर से हँसते हुए बोलना (ख) मुसकुराना

(ग) दाँत पीसना (घ) बात करना

(2) हालदार साहब ने पानवाले से क्या पूछा?

(क) मूर्ति के बारे में (ख) चश्मा हर बार बदलने के बारे में

(ग) पान के बारे में (घ) चौराहे के बारे में

(3) हालदार साहब को क्या आदत पड़ गई थी ?

(क) पान खाने की (ख) मूर्ति को ध्यान से देखने की

(ग) चौराहे पर रुकने की (घ) सभी विकल्प सही हैं

(4) हालदार साहब का कौतूहल दुर्दमनीय क्यों हो उठा ?

(क) वह बार-बार बदलते चश्मों का कारण जानना चाहते थे। (ख) उनका मन चंचल था।

(ग) वह स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पा रहे थे। (घ) इनमें से कोई नहीं।

(5) पानवाला कैसा व्यक्ति था ?

(क) वह एक खुशमिजाज व्यक्ति था। (ख) वह एक मूर्ख व्यक्ति था।

(ग) वह बहुत उदास व्यक्ति था । (घ) वह एक ईर्ष्यालु व्यक्ति था।

उत्तर-

1-

(1)- क, (2)- घ, (3)- ग, (4)- घ, (5)- ख

2-

(1)- क, (2)- ख, (3)- ख, (4)- क, (5)- क

<u>बोर्ड परीक्षा में पूछे गए प्रश्न</u> -

1- सेनानी ना होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे

2- पान वाले का एक रेखा चित्र प्रस्तुत कीजिए।

3- “वो लंगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल।” -कैप्टन के प्रति पानवाले की टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

4- “बार-बार सोचते क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।”

-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

5- सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देश प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी रूप में देश प्रेम प्रकट करते हैं -'नेताजी का चश्मा' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

बालगोबिन भगत

रामवृक्ष बेनी पुरी

लेखक परिचय

जीवन-आधुनिक युग के निबंधकारों में श्री रामवृक्ष बेनीपुरी का महत्त्वपूर्ण स्थान है | इनका जन्म मुजफ्फरपुर जिले(बिहार) के “बेनीपुर” गाँव में सन 1899 ई० में हुआ था | बचपन में ही इनके सिर से माता-पिता का साया उठ गया था | सन 1920 ई० में गाँधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन प्रारंभ होने पर ये अध्ययन छोड़कर राष्ट्र-सेवा में लग गए| गाँधी जी के दर्शन में इनकी विशेष आस्था थी | “रामचरितमानस” के पठान-पाठन नें इन्हें साहित्य की ओर प्रेरित किया | स्वतंत्रता संग्राम में सक्रीय भाग लेने के कारण इन्हें अनेक बार जेल की यातनाएं भी सहनी पड़ी | सन 1668 ई० में इनका देहावसान हो गया |

रचनाएँ-

उपन्यास	-	पतितों के देश में, कैदी और पत्नी
कहानी संग्रह	-	चिता के फूल, लालतारा
रेखाचित्र	-	माती की मूरतें, नेत्रदान, मन और विजेता
नाटक	-	अंबपाली
निबंध	-	गेहूँ और गुलाब, वन्दे वाणी विनायकी, मशाल
यात्रा वर्णन	-	पैरों में पंख बाँधकर
संस्मरण	-	जंजीरें और दीवारें

पत्र-पत्रिकाओं का संपादन - बालक, तरुण भारत, किसान मित्र, नई धरा आदि

भाषा-शैली- रामवृक्ष बेनीपुरी की भाषा में सरलता सुबोधता तथा औज गुण की प्रधानता है उनकी भाषा की ख़ास विशेषता है छोटे-छोटे वाक्यों में शब्दों का सटीक प्रयोग |

अध्याय का संक्षिप्त परिचय

यह अध्याय एक ऐसे मनुष्य कि कहानी है,जो गृहस्थ जीवन जीते हुए भी उच्चतम श्रेणी का संन्यासी है | ”भागवत गीता” के कर्मयोग को व्यावहारिक जीवन में कैसे रूपायित किया जा सकता है, इसका जीवंत उदाहरण है - बालगोबिन भगत | रेखचित्र शैली में लिखित अध्याय “बालगोबिन भगत” के माध्यम से लेखक ने एक ऐसे विलक्षण चरित्र का उद्घाटन किया है जो मनुष्यता, लोक संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है | लेखक का मानना है कि बाहरी वेशभूषा या कर्मकांड से कोई व्यक्ति संन्यासी नहीं हो जाता| संन्यास का आधार तो जीवन के मानवीय सरोकार होते हैं | लेखक को इसी आधार पर बालगोबिन भगत संन्यासी लगते हैं | यह अध्याय वर्ण व्यवस्था और सामाजिक रूढ़ियों पर भी प्रहार करता है | इस रेखाचित्र की एक विशेषता यह है कि बालगोबिन भगत के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सजीव झाँकी देखने को मिलती है |

निम्नलिखित पठित गद्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए -

(1) आषाढ़ की रिमझिम है | समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ा है | कहीं हल चल रहे है, कहीं रोपनी हो रही है | धन के पानी-भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं | औरतें कलेवा लेकर मेंड़ पर बैठी हैं | आसमान बादल से घिरा,धुप का नाम नहीं,ठंडी पुरवाई चल रही है| ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर-तरंग झंकार-सी कर उठती है | यह क्या है-यह कौन है ? यह पूछना न पड़ेगा | बालगोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े, अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं | उनकी एक-एक ऊँगली धान के पौधे को, पंक्तिबद्ध, खेत में बिठा रही है | उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगो के कानों की ओर ! बच्चे खेलते हुए

झूम उठते हैं, मेंड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं, वे गुनगुनाने लगती हैं, हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं, रोपनी करने वालों की उँगलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगती हैं!बालगोबिन भगत का यह संगीत है या जादू !

(क) गद्यांश के आधार पर बताइए कि भगत के संगीत के जादू का प्रभाव किस पर और क्या पड़ता है?

उत्तर (1) हलवाहों के पैर संगीत की लय पर उठने लगते हैं (2) बच्चे खेलते हुए झूमने लगते हैं

(3) मेंड़ खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं (4) ये सभी ✓

(ख) गद्यांश के अनुसार बालगोबिन भगत इस समय क्या कार्य कर रहे हैं ?

उत्तर (1) मेंड़ पर बैठकर गीत गा रहे हैं

(2) अपने खेत में धान की रोपनी कर रहे हैं ✓

(3) अपने खेत में पानी दे रहे हैं

(4) अपने खेत में हल चला रहे हैं

(ग) बालगोबिन भगत के संगीत की क्या विशेषता है ?

उत्तर (1) उनका संगीत लय-तालबद्ध नहीं है

(2) उनका संगीत सामान्य जन को प्रभावित नहीं कर पाता

(3) उनका संगीत प्रत्येक व्यक्ति को रोमांचित व् मुग्ध कर देता है ✓

(4) उनके संगीत में मन को हरने वाली शक्ति नहीं है

(घ) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?इसके लेखक का नाम बताइए |

उत्तर (1) नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश) (2) बालगोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी) ✓

(3) लखनवी अंदाज़ (यशपाल) (4) एक कहानी यह भी (मन्नू भंडारी)

(ड़) भगत अपने संगीत का प्रभाव बढ़ने के लिए क्या करते थे ?

उत्तर (1) स्वर को ऊँचा करते थे (2) स्वर को नीचा करते थे

(3) स्वर को ऊँचा-नीचा करते थे ✓ (4) इनमे से कोई नहीं

(2) खेती बारी करते, परिवार रखते भी, बालगोबिन भगत साधु थे- साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले | कबीर को "साहब" मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्ही के आदेशों पर चलते | कभी झूठ नहीं बोलते , खरा व्यवहार रखते | किसी से भी दो टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखा झगड़ा मोल लेते | किसी की चीज को नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते | इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगो को कुतूहल होता | कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते| वह गृहस्थ थे, लेकिन उनकी सब चीज साहब की थी| जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लड़कर पहले साहब के दरबार में ले जाते- जो उनके घर से चार कोस दूरी पर था-एक कबीर पंथी मठ से मतलब! वह दरबार में "भेंट" रूप रख लिया जाकर "प्रसाद" रूप में जो उन्हें मिलता,उसे घर लाते और उसी से गुजर चालते |

(क) लेखक के अनुसार बालगोबिन भगत साधु क्यों थे ?

उत्तर (1) क्योंकि वह साधु की तरह दीखते थे

(2) क्योंकि वे मोह-माया से दूर रहते थे

(3) क्योंकि वे सच्चे साधुओं की तरह आचार-विचार रखते थे ✓

(4) क्योंकि वे किसी से लड़ते नहीं थे

(ख) बालगोबिन भगत का कौन-सा कार्य-व्यवहार लोगों के लिए आश्चर्य का विषय था ?

उत्तर (1) जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का गहराई से अपने आचरण में पालन करना ✓

(2) गीत गाते रहना

(3) किसी से झगड़ा न करना

(4) अपना काम स्वयं करना

(ग) बालगोबिन भगत कबीर के आदर्शों पर ही चलते थे, क्योंकि

उत्तर (1) कबीर भगवान् का रूप थे (2) वे कबीर की विचारधारा से प्रभावित थे ✓

(3) कबीर उनके गाँव के मुखियां थे (4) कबीर उनके मित्र थे

(घ) बालगोबिन भगत के खेत में जो कुछ पैदा होता, उसे वे सर्वप्रथम किसे भेंट कर देते ?

उत्तर (1) गरीबों में (2) घर में

(3) मंदिर में (4) कबीर पंथी मठ में ✓

(ङ) "वह गृहस्थ थे, लेकिन उनकी सब चीज साहब की थी |" यहाँ "साहब" से क्या आशय है ?

उत्तर (1) गुरु (2) मुखिया

(3) कबीर ✓ (4) भगवान्

(3) घर में पतोहू रो रही है जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही हैं, किन्तु बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं ! हाँ, गाते-गाते कभी-कभी पतोहू के नजदीक भी जाते और रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते | आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात ? मैं कभी-कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गए, किन्तु नहीं, वह जो कुछ कर रहे थे उसमें उनका विश्वास बोल रहा था- वह चरम विशवास,जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है | बेटे की क्रिया-कर्म में तूल नहीं किया; पतोहू से ही आग दिलाई उसकी | किन्तु ज्यों ही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई,पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना | इधर पतोहू रो-रोकर कहती- मैं चली जाऊँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा, बीमार पड़े तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा ? मैं पैर पड़ती हूँ, मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए | लेकिन भगत का निर्णय अटल था | तू जा, नहीं तो मैं ही इस घर को छोड़कर चल दूँगा -यह थी उनकी आखिरी दलील और इस दलील के आगे बेचारी की क्या चलती ?

(क) भगत जी द्वारा किया गया कौन-सा कार्य सामाजिक परम्परा के विरुद्ध था ?

उत्तर (1) अपनी पतोहू से बेटे की चिता को आग दिलाना ✓

(2) पतोहू को मायके भेजना

(3) बेटे का श्राद्ध करना

(4) बेटे की मृत्यु का उत्साव मनाना

(ख) भगत जी की बात सुनकर लेखक को कभी-कभी क्या लगता था ?

उत्तर (1) भगत जी कितने बुद्धिमान हैं

(2) भगत जी कितने ज्ञानी हैं

(3) कहीं भगत जी पागल तो नहीं हो गए ✓

(4) भगत जी कितने अज्ञानी हैं

(ग) भगत जी की पतोहू अपने मायके क्यों नहीं जाना चाहती थी ?

उत्तर (1) भगत जी की बुढ़ापे में सेवा करने के कारण ✓

(2) दूसरी शादी नहीं करने के कारण

(3) सामाजिक प्रताड़ना के कारण

(4) गरीबी के कारण

(घ) भगत जी द्वारा लिया गया कौन-सा निर्णय अटल था ?

उत्तर (1) बेटे का श्राद्ध करने का

(2) पतोहू को घर में न रखने का

(3) प्रातःकाल प्रभात गाने का

(4) अपनी पतोहू को उसके मायके भेजने का ✓

(ङ) "यह थी उनकी आखरी दलील" प्रस्तुत गद्यांश में भगत जी की आखिरी दलील है

उत्तर (1) प्रातःकाल प्रभात गाने की

(2) पतोहू के न जाने पर स्वयं घर छोड़ने की ✓

(3) पुत्र का श्राद्ध न करने की

(4) पतोहू के भाई को बुलाने की

(4) कार्तिक आया नहीं की बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरू हुईं, जो फागुन तक चला करतीं | इन दिनों वह सवेरे ही उठते | न जाने किस वक्त जगकर वह नदी-स्नान को जाते- गाँव से दो मिल दूर ! वहाँ से नहा-धोकर लौटते और गाँव के बाहर ही पोखरे के ऊँचे भिंडे पर, अपनी खँजड़ी ले कर जा बैठते और अपने गाने टेरने लगते | मैं शुरू से ही देर तक सोने वाल हूँ, किन्तु एक दिन, माघ की उस दाँत किटकिटाने वाली भोर में भी, उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था | अभी आसमान के तारों के दीपक बुझे नहीं थे | हाँ, पूरब में लोही लग गई थी, जिसकी लालिमा को शुक्र तारा और बढ़ा रहा था | खेत, बगीचा, घर-सब पर कुहासा छा रहा था | सारा वातावरण अजीब रहस्य से आवृत मालूम पड़ता था| उस रहस्यमय वातावरण में एक कुश की चटाई पर पूरब मुँह, काली कमली ओढ़े,बल्गोबिन भगत अपनी खँजड़ी लिए बैठे थे | उनके मुँह से शब्दों का ताँता लगा था, उनकी उँगलियाँ खँजड़ी पर लगातार चल रही थीं | गाते-गाते इतने मस्त हो जाते,इतने सुरूर में आते, उत्तेजित हो उठते कि मालूम होता, अब खड़े हो जाएँगें | कमली तो बार-बार सिर से नीचे सरक जाती | मैं जाड़े से कँपकँपा रहा था, किन्तु तारे की छाँव में भी उनके मस्तक से श्रमबिंदु जब-तब चमक ही पड़ते |

(क) गद्यांश के आधार पर बताइए कि बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ कब आरम्भ हो जाती थी ?

उत्तर (1) फागुन के महीने में

(2) कार्तिक के महीने में ✓

(3) चैत्र के महीने में

(4) इनमें से कोई नहीं

(ख) वातावरण को रहस्यमय क्यों कहा गया हैं ?

उत्तर (1) कोहरे की ओट में स्पष्ट दिखाई न देने के कारण ✓

(2) स्पष्ट दिखाई देने के कारण

(3) कँपकँपी सर्दी के कारण

(4) इनमें से कोई नहीं

(ग) गद्यांश के आधार पर बताइए कि रहस्यमय वातावारण में बालगोबिन भगत क्या कर रहे थे ?

उत्तर (1) कुश की चटाई पर बैठे थे

(2) काली कमली ओढ़ी थी

(3) पूरब दिशा की ओर मुँह करकर गा रहे था

(4) ये सभी ✓

(घ) बालगोबिन भगत की प्रभाती कार्तिक मास से आरम्भ होकर कब तक चलती थी ?

उत्तर (1) कार्तिक मास तक

(2) फागुन मास तक ✓

(3) चैत्र मास तक

(4) इनमे से कोई नहीं

(ङ) "मैं जाड़े से कँपकँपा रहा था" में 'मैं' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

उत्तर (1) लेखक के लिए ✓

(2) बालगोबिन भगत के लिए

(3) पतोहू के लिए

(4) इनमे से कोई नहीं

(5) बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया, जिस दिन उनका इकलौता बेटा मरा | इकलौता बेटा था वह ! कुछ सुस्त और बौदा-सा था, किन्तु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी मानते | उनकी समझ में ऐसे आदमियों पर ही ज्यादा नज़र रखनी चाहिर या प्यार करना चाहिए, क्योंकि ये निगरानी और मोहब्बत के ज्यादा हकदार होते हैं | बड़ी साध से उसकी शादी कराई थी, पतोहू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी | घर की पूरी प्रबंधिका बनकर भगत को बहुत कुछ दुनियादारी से निवृत्त कर दिया था उसने | उनका बेटा बीमार है, इसकी खबर रखने की लोगों को कहाँ फुर्सत ! किन्तु मौत तो सबका ध्यान अपनी ओर खीच कर ही रहती है |

बेटे के क्रिया-कर्म को तूल नहीं किया | पतोहू से ही आग दिलाई उसकी | किन्तु ज्यों ही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई, पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना | इधर पतोहू रो-रोकर कहती - मैं चली जाऊँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा, बीमार पड़े, तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा ? मैं पैर पड़ती हूँ, मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए |

(क) गद्यांश के आधार पर बताइए कि बालगोबिन भगत की पतोहू कुशल प्रबंधिका किस प्रकार था ?

उत्तर (1) सभी कार्यों में निपुण थी
(2) उसने भगत को दुनियादारी से काफी हद तक निवृत्त कर दिया था
(3) (1) और (2) दोनों ✓
(4) सुस्त व् आलसी प्रवृत्ति के कारण

(ख) बालगोबिन भगत अपने बेटे से प्यार क्यों करते थे ?

उत्तर (1) क्योंकि उनका बेटा सुस्त और कम बुद्धि वाला था ✓
(2) बेटा बहुत चालाक था
(3) बेटा बहुत अहंकारी था
(4) इनमें से कोई नहीं

(ग) बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष किस दिन देखा गया ?

उत्तर (1) जिस दिन उनके पुत्र की मृत्यु हो गई थी ✓
(2) जिस दिन उनका पुत्र बीमार था
(3) जिस दिन पहोहू का विवाह था
(4) इनमें से कोई नहीं

(घ) गद्यांश के आधार पर बताइए कि श्राद्ध की अवधि पूरी होने पर बालगोबिन भगत ने पतोहू के साथ कैसा व्यावहार किया?

उत्तर (1) घर से जाने को कहा
(2) दूसरा विवाह करने का आदेश दिया ✓
(3) अपनी सेवा करने को कहा
(4) इनमें से कोई नहीं

(ड़) बालगोबिन भगत की पतोहू ने भाई के साथ उनके घर से न जाने के लिए क्या प्रार्थना की ?

उत्तर (1) उनके साथ रहकर उनकी सेवा करने की ✓
(2) वहाँ से चले जाने की
(3) दूसरा विवाह करने की
(4) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न

प्रश्न-1 बालगोबिन भगत किसको अपना “साहब” मानते थे ? अपने साहब के किन आदर्शों पर चलते थे ?

उत्तर: बालगोबिन भगत कबीर को अपना "साहब" मानते थे| वे कबीर के द्वारा बनाए गए आदर्शों का पूर्ण रूप से पालन करते थे | कबीर के गीतों को गाकर परमात्मा की आराधना करते थे | बालगोबिन भगत झूठ नहीं बोलते और उनका व्यवहार खरा (साफ) होता था | किसी से झगड़ा नहीं करते थे तथा किसी की कोई भी वस्तु वह नहीं लेते थे | धार्मिक आडम्बरों का विरोध करते, परन्तु सभी से समान व्यवहार रखते थे | भौतिक संसार को सारहीन समझते हुए एक त्यागी के समान अपना जीवन व्यतीत करते थे |

प्रश्न-2 भादों की आधी रात में बालगोबिन भगत द्वारा गाए जाने वाले गीतों में क्या सन्देश निहित रहता था ?

उत्तर: भादों की आधी रात में जब मूसलाधार वर्षा ख़त्म हो जाती,बादलों की गरज और विजली कि तड़प थम जाती, तब बालगोबिन भगत की स्वरलहरी गूँज उठती - "गोदी में पियवा,चमक उठे सखिया, चिहुँक उठे ना" | इस गीत के माध्यम से वे सन्देश देते कि प्रियतम रुपी परमात्मा सदैव हमारे पास ही है, परन्तु हम समझते है कि हम अकेले हैं | वे पुन: गाते - "तेरी गठरी में लागा चोर मुसाफिर जाग जरा" | बालगोबिन भगत अपने इस गीत के माध्यम से सन्देश देते है कि मोह-माया आदि हमारी बुराइयाँ चोर की भाँति ईश्वरीय प्रेम रूपी गठरी को चुराने में लग गई हैं | हमें सचेत हो जाना चाहिए |

प्रश्न-3 माघ की कँपकँपाती भोर में लेखक गाँव के बाहर पोखरे पर किसलिए गया था ? वहाँ उसने क्या दृश्य देखा ?

उत्तर: माघ की कँपकँपाती भोर में लेखक को बालगोबिन भगत का मधुर संगीत सुनाई दिया | लेखक अपने आपको रोक न सका और संगीत सुनने के लिए घर से निकल पड़ा | जब वह पोखरे पर पहुँचा तो उसने देखा कि कुहासामय रहस्यपूर्ण वातावरण में एक कुश की चटाई पर काली कमली ओढ़े बालगोबिन भगत खँजड़ी बजाते हुए गा रहे हैं | वे गाते-गाते मस्त हो जाते, लगता कि अब खड़े हो जाएँगे |भादों के माह में सर्दी होने के कारण लेखक ठंड से काँप रहा था, परन्तु भगत के माथे पर श्रमबिंदु चमक रहे थे |

प्रश्न-4 मृत्यु की पूर्व संध्या पर बालगोबिन भगत का गीत कैसा लगा ?

उत्तर: मृत्यु की पूर्व संध्या पर भी बालगोबिन भगत ने अपना गीत गाया| उस गीत को सुनकर लगा कि जैसे तागा (जीवनक्रम) टूट गया हो, माला के दाने बिखर रहे हों अर्थात वह गीत बिखरा-बिखरा प्रतीत होता था | यही उनका अंतिम गीत था| भोर में लोगों नें उनका गीत नहीं सुना क्योंकि उनकी मृत्यु हो चुकी थी|

प्रश्न-5 बालगोबिन भगत की मृत्यु किस प्रकार हुई ?

उत्तर   बालगोबिन भगत हर वर्ष की भाँति गंगास्नान को पैदल चलकर गए थे | तीस कोस का रास्ता था| चार दिन लगे| घर से खाकर चले थे, रास्ते में कहीं नहीं खाया, प्यास लगने पर पानी अवश्य पिया | बुढ़ापा आ गया था, किन्तु टेक वही जवानी वाली | इस बार लौटे तो सुस्ती थी, थोड़ा बुखार आने लगा था| लोगों ने नहाने से मना किया,पर माने नहीं ? अंतिम दिन भी संध्या में गीत गाए, किन्तु गीत में दम न था, लगता था जीवन-माला बिखर रही है | वह वही अंतिम गीत था | प्रात:काल का गीत लोगों नें नहीं सुना| उनकी मृत्यु रात्रि में ही हो गई थी|

प्रश्न-6 हर वर्ष गंगा स्नान को जाते समय बालगोबिन भगत के मन में क्या विचार होते थे ?

उत्तर   बालगोबिन भगत हर साल गंगास्नान के लिए जाते थे | वे गंगास्नान पर उतनी आस्था नहीं रखते थे,जितना लोकदर्शन और संत समागम पर| तीस कोस की इस यात्रा में उनके मन में ये विचार होते थे कि साधु को किसी से माँगकर भीख नहीं लेनी चाहिए | वे घर से खाकर चलते थे और फिर लौटकर घर पर ही खाते थे | वे गाते-बजाते चलते जाते थे |

प्रश्न-7 बालगोबिन भगत प्रतिवर्ष गंगा-स्नान करने क्यों जाते थे ? अध्याय के आधार पर लिखिए |

उत्तर   बालगोबिन भगत प्रतिवर्ष गंगा-स्नान के लिए जाते थे | गंगास्नान पर उनकी उतनी आस्था नहीं थी, जितनी लोक-दर्शन और संत-समागम पर | वे गंगास्नान के अवसर को साधु-संतों से भेंट करने का

अवसर मानते थे | वे इस यात्रा को पैदल ही करते थे | वे अपने नियमों का का जीवनपर्यंत पालन करते रहे |

प्रश्न-8 बालगोबिन भगत के जीवन को संगीत का जादू क्यों कहा गया है ?

उत्तर बालगोबिन भगत के जीवन को संगीत का जादू इसलिए कहा गया है क्योंकि उनका संगीत सभी आयु वर्ग के लोगो पर जादू के समान असर करता था | उनके मधुर गायन को सुनकर बड़े-बच्चे सभी झूम उठते थे | यहाँ तक की खेतों की मेंडों पर खड़ी औरतों के होंठ भी गुनगुना उठते थे | हलवाहों के पैर ताल देने लगते थे | रोपनी करने वालों की उँगलियाँ भी संगीत के शब्दों के क्रम से चलने लगती थीं | इस प्रकार सभी उपस्थित लोग भगत के संगीत के जादु के प्रभाव के क्षेत्र में आ जाते थे |

प्रश्न-9 गर्मियों की उमस भरी शाम को भी बालगोबिन भगत किस प्रकार शीतल कर देते थे ?

उत्तर गर्मियों की शाम उमस भरी होती थी | पर बालगोबिन भगत उसे अपने संगीत से शीतल कर देते थे | वे अपने घर के आँगन में आसन जमाकर बैठ जाते और वहाँ अन्य संगीत-प्रेमी आ जुटते थे | करतालों और खंजड़ियों की भरमार हो जाती थी| भगत गाते जाते और संगीत प्रेमी मंडली उसे दोहराती जाती | धीरे-धीरे तन पर मन हावी हो जाता | सारा आँगन संगीत लहरियों से शीतल हो जाता |

प्रश्न-10"बालगोबिन भगत" अध्याय के माध्यम से लेखक ने क्या कहना चाहा है ?

उत्तर बालगोबिन भगत अध्याय के माध्यम से लेखक ने एक ऐसे विलक्षण चरित्र का उद्घाटन किया है जो मनुष्यता, लोक-संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है | वेश-भूषा या वाह्य अनुष्ठानों से कोई संन्यासी नहीं होता, संन्यास का आधार जीवन के मानवीय सरोकार होते है |बालगोबिन भगत इसी आधार पर लेखक को संन्यासी लगते हैं | यह वर्ण-व्यवस्था की अमानवीयता और सामाजिक रूढ़ियों पर भी प्रहार करता है | इस पाठ (रेखाचित्र)की एक विशेषता यह है कि बालगोबिन भगत के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सजीव चित्रण देखने को मिलता है |

प्रश्न-11"बालगोबिन भगत" अध्याय के आधार पर कबीर पंथ के अनुसार जीवन की विशेषताएँ बताइए |

उत्तर कबीर पंथ मनुष्य को गृहस्थ बने रहने को बुरा नहीं बताता|इसके साथ-साथ वह सांसारिक प्रलोभनों से दूर रहने की प्रेरणा देता है | कबीर पंथ में सच बोलने और खरा व्यवहार रखने पर बल दिया जाता है | कबीर पंथी लोग व्यर्थ में झगड़ा नहीं करते, दूसरे व्यक्ति की वस्तु को नहीं छूते, बिना पूछे किसी की वस्तु को अपने प्रयोग में नहीं लाते| अपनी उपज अथवा कमाई(धनार्जन)को पहले कबीर साहब के दरबार में ले जाते हैं, वहाँ से जो कुछ मिलता है उसे भेंट स्वरुप स्वीकार करते हैं |

प्रश्न-12बालगोबिन भगत की जीविका का साधन क्या था ?

उत्तर बालगोबिन भगत के पास कुछ खेत थे | खेतों में ही वे कुछ अन्न उपजा लेते थे | खेत में जो कुछ पैदा होता उसे सिर पर लादकर पहले कबीर पंथी मठ ले जाते थे | वहाँ से प्रसाद स्वरुप में जो मिलता, उसे घर लाते और उसी से अपनी जीविका चलाते |

प्रश्न-13बालगोबिन भगत के जीवन की उन बातों का उल्लेख कीजिए जो सभी को प्रभावित करती हैं |

उत्तर बालगोबिन भगत की निम्नलिखित बाते सभी को प्रभावित करती हैं-

1.बालगोबिन भगत का रहन-सहन इतना सादा और सरल था कि उसका प्रभाव सभी पर पड़ता था| उनमें दिखावा करने वाली प्रवृत्ति नहीं थी |

2.बालगोबिन भगत कथनी और करनी में विश्वास रखते थे | वे आदर्शवादी बनने का ढोंग नहीं करते थे |

3.बालगोबिन भगत के संगीत का प्रभाव सभी पर समान रूप से पड़ता था |

4.बालगोबिन भगत समाज सुधारक थे | वे गलत परम्पराओं का विरोध करते थे |

5.बालगोबिन भगत कबीर पंथी थे, वे पंथ के नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करते थे |

प्रश्न-14 उनका बेटा बीमार है, इसकी खबर रखने की लोगों को कहाँ फुर्सत'-कथन द्वारा लेखक क्या कहना चाहते है ?

उत्तर   बालगोबिन भगत का इकलौता बेटा बोदा(कमजोर) और सुस्त था| वह अक्सर बीमार रहता था, परन्तु उसके बीमार रहने की खबर गाँव के लोगो को नहीं थी | वे सभी अपने-अपने कामों में व्यस्त रहते थे | उन्हें भगत के बेटे की बीमारी की खबर रखने की फुर्सत नहीं थी |

प्रश्न-15पुत्र की मृत्यु पर बालगोबिन भगत ने पतोहू को गीत गाकर उत्सव मनाने को क्यों कहा ?

उत्तर   बालगोबिन भगत ने पुत्र की मृत्यु पर पतोहू को रोने के बदले गीत गाकर उत्सव मनाने के लिए कहा | उनका कहना था कि आत्मा परमात्मा के पास चली गई है,विरहिणी अपने प्रेमी से जा मिली है अत: यह अवसर दुःख का न होकर उत्सव मनाने का है | इस अवसर पर गीत गाने चाहिए |

प्रश्न-16 भगत की पुत्रवधू को ससुराल छोड़कर क्यों जाना पड़ा ?

उत्तर   बालगोबिन भगत की पुत्रवधू का पति (बालगोबिन भगत का बेटा) मर गया था | उसकी क्रिया-कर्म के उपरान्त बालगोबिन भगत का सख्त आदेश था कि वह अपने भाई के साथ अपने घर चली जाए और पुनर्विवाह कर ले | पुत्रवधू ने अपने ससुर (बालगोबिन भगत) से उन्हें अकेला छोड़कर मायके जाने से मना कर दिया, परन्तु ससुर की जिद (हठ) करने के कारण मजबूर होकर उसे ससुराल छोड़कर अपने मायके जाना पड़ा |

प्रश्न-17 बालगोबिन भगत द्वारा पुत्रवधू का विवाह करना समाज की किस समस्या के समाधान की ओर संकेत करता है ?

उत्तर   बालगोबिन भगत द्वारा पुत्रवधू का विवाह करना, समाज में विधवा-विवाह की समस्या का निराकरण था | क्योंकि , यदि बालगोबिन भगत अपनी विधवा बहु का पुनर्विवाह करवा सकते है, तो समाज के अन्य सभ्य प्राणी भी ऐसा कर सकते |

बहु विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1 बालगोबिन भगत किसको साहब मानते थे ?

उत्तर (क) कबीर को ✓
(ख) रैदास को
(ग) तुलसी को
(घ) दादू दयाल को

प्रश्न-2 बालगोबिन भगत के व्यवहार में क्या था ?

उत्तर (क) झठ न बोलना
(ख) दो-टूक बातें करना
(ग) किसी की चीज न छूना
(घ) उपर्युक्त सभी ✓

प्रश्न-3 बालगोबिन भगत क्या थे ?

उत्तर (क) गृहस्थ
(ख) साधु
(ग) (क)-(ख) दोनों ✓
(घ) सामान्य व्यक्ति

प्रश्न-4 बालगोबिन भगत किसे साहब की चीज मानते थे ?

उत्तर (क) अपने खेत की पैदावार को ✓
(ख) अपने घर को
(ग) अपने सब साधनों को
(घ) किसी को नहीं

प्रश्न-5 “कौतूहल” शब्द कैसा है ?

उत्तर (क) तत्सम ✓

(ख) तद्भव

(ग) देशज

(घ) विदेशी

प्रश्न-6 बालगोबिन भगत ने किस में तूल नहीं किया ?

उत्तर (क) बेटे के क्रिया-कर्म में ✓

(ख) बेटे के विवाह में

(ग) पतोहू की शादी में

(घ) सभी में

प्रश्न-7 भगत की जाति में कौन-सी बात नई नहीं थी ?

उत्तर (क) बेटे का क्रिया-कर्म

(ख) पुनर्विवाह ✓

(ग) श्राद्ध करना

(घ) जाति-प्रथा

प्रश्न-8 पतोहू का क्या आग्रह था ?

उत्तर (क) वह भगत की सेवा-बंदगी करेगी ✓

(ख) वह पुनर्विवाह कर लेगी

(ग) वह विधवा बनकर जिएगी

(घ) वह अपने भाई के साथ चली जाएगी

प्रश्न-9 बालगोबिन भगत का पतोहू के पुनर्विवाह के पक्ष में क्या तर्क था/थे ?

उत्तर (क) अभी पतोहू जवान है |

(ख) वासनाओं पर काबू रखना आसान नहीं है |

(ग) इससे ऊँच-नीच हो सकती हैं

(घ) उपर्युक्त सभी ✓

प्रश्न-10 "बुढ़ापा" व्याकरण में क्या है ?

उत्तर (क) जातिवाचक संज्ञा

(ख) भाववाचक संज्ञा ✓

(ग) विशेषण

(घ) सर्वनाम

प्रश्न-11 भगत ने बेटे की मृत्यु पर क्या क्या ?

उत्तर (क) उसे आँगन में एक चटाई पर लिटाया

(ख) उसके शरीर को सफ़ेद कपड़े से ढँका

(ग) उस पर कुछ फूल बिखेर दिए

(घ) उपर्युक्त सभी काम किए ✓

प्रश्न-12 उस समय भगत की क्या दश थी ?

उत्तर (क) वे गीत गा रहे थे ✓

(ख) वे रो रहे थे

(ग) वे चुप थे

(घ) सुभावस्था में थे

प्रश्न-13 भगत पतोहू को क्या करने को कहते थे ?

उत्तर (क) रोने के लिए

(ख) चुप रहने के लिए

(ग) उत्सव मनाने को ✓

(घ) कुछ नहीं

प्रश्न-14भगत का क्या कहना था ?

उत्तर (क) आत्मा परमात्मा के पास चली गई है

(ख) यह स्थिति तो आनंद मनाने की है

(ग) (क)-(ख) दोनों ✓

(घ) कुछ नहीं

प्रश्न-15 "मृत्यु" शब्द कैसा है?

उत्तर (क) तत्सम ✓

(ख) तद्भव

(ग) देशज

(घ) विदेशी

प्रश्न-16 कार्तिक मास के आते ही भगत का क्या काम शुरू हो जाता था ?

उत्तर (क) प्रभातियाँ ✓

(ख) गंगा स्नान

(ग) गायन

(घ) संगीत

प्रश्न-17 लेखक को भगत का संगीत कहाँ खीच ले जाता था ?

उत्तर (क) खेतों तक

(ख) पोखरे तक ✓

(ग) गंगा-तट तक

(घ) चौपाल तक

प्रश्न-18गाते समय भगत की क्या दशा हो जाती थी ?

उत्तर (क) उँगलियाँ खँजड़ी पर चलती रहती थी

(ख) उनकी कमली बार-बार खिसक जाति थी

(ग) वे अत्यधिक उत्तेजित हो जाते थे

(घ) उपर्युक्त सभी ✓

प्रश्न-19"श्रमबिंदु" शब्द कैसा है ?

उत्तर (क) तत्सम ✓

(ख) तद्भव

(ग) देशज

(घ) विदेशी

प्रश्न-20आसाढ़ मास में क्या हो रहा है ?

उत्तर (क) रिमझिम वर्षा हो रही है

(ख) खेतो में हल चल रहे हैं

(ग) धान के खेतों में बच्चे उछल रहे हैं

(घ) उपर्युक्क्त सभी ✓

प्रश्न-21भगत की आस्था किस पर अधिक थी ?

उत्तर (क) गंगा-स्नान पर

(ख) संत-समागम पर

(ग) लोकदर्शन पर

(घ) (ख)-(ग) दोनों ✓

प्रश्न-22 मरने से पहले दिन भगत ने संध्या समय क्या किया ?

उत्तर (क) गीत गाए ✓

(ख) व्रत किया

(ग) खँजड़ी बजाई

(घ) सोए

प्रश्न-23भगत के गीत में “पियवा” कहाँ है ?

उत्तर (क) परदेश में

(ख) नायिका की गोद में ✓

(ग) आकाश में

(घ) कहीं नहीं

प्रश्न-24 कभी-कभी भगत खँजड़ी बजाते हुए क्या करने लगते थे ?

उत्तर (क) नाचने लगते थे ✓

(ख) गाने लगते थे

(ग) रोने लगते थे

(घ) हँसने लगते थे

प्रश्न-25 भगत कबीर को क्या मानते थे ?

उत्तर (क) साहब ✓

(ख) भगवान

(ग) संत

(घ) गायक

प्रश्न-26 कबीर पंथी मठ कहाँ हैं ?

उत्तर (क) घर से चार कोस दूर ✓

(ख) घर के पास

(ग) खेतो के निकट

(घ) गाँव के बाहर

प्रश्न-27भगत अपने घर क्या लाते थे ?

उत्तर (क) दरबार से मिला प्रसाद ✓

(ख) भेंट

(ग) मठ की चीज

(घ) अपनी चीज

प्रश्न-28भगत की संगीत-साधना का उत्कर्ष कब दिखाई दिया ?

उत्तर (क) जिस दिन उनका बेटा पैदा हुआ

(ख) जिस दिन उनका बेटा मरा ✓

(ग) जिस दिन खेतों में बुवाई हुई

(घ) कभी नहीं

प्रश्न-29 भगत का बेटा कैसा था ?

उत्तर (क) इकलौता

(ख) सुस्त

(ग) मोटा

(घ) उपर्युक्त सभी ✓

प्रश्न-30पतोहू ने भगत को क्या कर दिया था ?

उत्तर (क) दुनियादारी से निवृत्त ✓

(ख) गीत गाने वाला

(ग) सेवा-भावी

(घ) गृहस्थ

प्रश्न-31 बालगोबिन भगत कैसे थे ?

उत्तर (क) मँझोले कद के

(ख) गोर-चिट्टे

(ग) साठ साल के ऊपर के

(घ) उपर्युक्त सभी ✓

प्रश्न-32 भगत कितने कपड़े पहनते थे ?

उत्तर (क) अधिक

(ख) बहुत कम ✓

(ग) सामान्य

(घ) बिलकुल नहीं

प्रश्न-33 भगत कैसी टोपी पहनते थे ?

उत्तर (क) कबीर पंथियों जैसी कनपटी टोपी ✓

(ख) छोटी

(ग) बड़ी

(घ) सामान्य

प्रश्न-34जाड़े में भगत क्या ओढ़ते थे ?

उत्तर (क) काली कमली ✓

(ख) गरम चादर

(ग) सफ़ेद चादर

(घ) कुछ नहीं

प्रश्न-35 भगत कैसी माल पहनते थे ?

उत्तर (क) फूलों की

(ख) तुलसी की जड़ों की ✓

(ग) चन्दन की

(घ) सामान्य

प्रश्न-36 गर्मियों की संध्या में भगत क्या करते थे ?

उत्तर (क) घर के आँगन में आसन जमाते थे

(ख) खँजड़ी बजाते थे

(ग) गीत गाते थे

(घ) उपर्युक्त सभी ✓

लखनवी अंदाज - यशपाल

महान गद्यकार यशपाल द्वारा रचित 'लखनवी अंदाज़' पाठ यह साबित करता है कि बिना कथ्य के कहानी नहीं लिखी जा सकती परंतु एक स्वतंत्र कृति के रूप में इस रचना को पढ़ा जा सकता है। यशपाल उस पतनशील सामंती वर्ग पर कटाक्ष करते हैं जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन शैली का आदी है। कहना न होगा कि आज के समय में भी ऐसी परजीवी संस्कृति को देखा जा सकता है।

1-पठितगद्यान्श के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प लिखिए (1×5=5)

नमक-मिर्च छिड़क दिए जाने से ताजे खीरे की पनियाती फाँके देखकर पानी मुँह में जरूर आ रहा था ,लेकिन इंकार कर चुके थे | आत्म सम्मान निबाहना ही उचित समझा ,उत्तर दिया "शुक्रिया ,इस वक्त तलब महसूस नहीं हो रही , मेदा भी जरा कमजोर है , क़िबला शौक फरमाएँ '' | नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक -मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा |

खिड़की के बाहर देखकर दीर्घ नि:श्वास लिया | खीरे की एक फाँक उठाकर होठों तक ले गए | फाँक को सूँघा | स्वाद के आनंद में पलकें मूँद गईं | मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया , तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया | नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर , वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए |

क-लेखक ने क्या कहकर खीरा खाने से मना कर दिया ?

1-खीरा पसंद नहीं है 2-इस समय इसकी इच्छा महसूस नहीं हो रही है

3-मेरा मेदा भी जरा कमजोर है 4- 2 और 3 दोनों ही

ख -नवाब साहब ने खीरे की फाँकों को किस प्रकार देखा ?

1-सतृष्ण आँखों से 2-वितृष्ण आँखों से

3-तृष्णता से 4-इनमें से कोई नहीं

ग -नवाब साहब ने खीरे की फाँकों का स्वाद किस प्रकार लिया ?

1-देखकर 2-खाकर

3-सूँघकर 4-ये सभी

घ -नमक -मिर्च दिए गए खीरे की फाँकों को देखकर लेखक की क्या स्थिति थी ?

1-लेखक उन्हें फेंकने को लालायित हो रहे थे 2-लेखक उन्हें खाने को लालायित हो रहे थे

3-लेखक उन्हें सूंघने को लालायित हो रहे थे 4- इनमें से कोई नहीं

ड़॰-नवाब साहब ने न चाहते हुए भी खीरे को खिड़की से बाहर क्यों फेंका ?

1-वे पहले ही खीरा खाने से इंकार कर चुके थे 2- वे पहले ही खीरा खाने को हाँ कर चुके थे

3-वे पहले ही खीरा फेंकने को तैयार हो चुके थे 4-इनमें से कोई नहीं

उत्तर - क- 2 और 3 दोनों ही

ख-सतृष्ण आँखों से

ग- सूँघकर

घ-लेखक उन्हें खाने को लालायित हो रहे थे|

ड-॰वे पहले ही खीरा खाने से इंकार कर चुके थे |

ख -निम्न लिखित प्रश्नों के सही विकल्प लिखिए-

1-नवाब साहब ने अकेले डिब्बे में समय बिताने के लिए क्या किया?

1-दो ताजे खीरे खरीदे 2-दो व्यक्तियों का साथ लिया

3-कुछ किताबें साथ लीं 4-ये सभी

2-नवाब साहब ने गर्व से गुलाबी आँखों द्वारा लेखक की तरफ क्यों देखा ?

1-अपने झूठे अनुभव को व्यक्त करने के लिए 2-नवाबी शान को व्यक्त करने के लिए

3- 1 और 2 दोनों 4-अहंकारी दृष्टि व्यक्त करने के लिए

ग-वर्णनात्मक प्रश्न

1-एब्स्ट्रैक्ट ,शब्द किन -किन पर कटाक्ष करता है ? लेखक क्या कहना चाहता है ?

उत्तर -एब्स्ट्रैक्ट का अर्थ है -अशरीरी ; जिसका भौतिक स्वरूप न हो , केवल सूक्ष्म अस्तित्व हो | इस शब्द के माध्यम से लेखक ने नवाबों की काल्पनिक जीवन -शैली तथा नई कहानी के लेखकों की अति सूक्ष्म धारणाओं पर व्यंग्य किया है |

2-लखनवी अंदाज नामक व्यंग्य का क्या संदेश है ?

उत्तर -लखनवी अंदाज नामक व्यंग्य में लेखक कहना चाहता है की जीवन में स्थूल और सूक्ष्म दोनों का महत्त्व है | केवल गंध और स्वाद के सहारे पेट नहीं भर सकता | जो लोग इस तरह पेट भरने और संतुष्ट होने का दिखावा करते हैं , वे ढोंगी हैं , अवास्तविक हैं | इस व्यंग्य का दूसरा संदेश यह है कि कहानी के लिए कोई- न -कोई घटना ,पात्र और विचार अवश्य चाहिए | बिना घटना और पात्र के कहानी लिखना निरर्थक है |

3-लेखक के मुँह में पानी आने पर भी खीरा खाने से इंकार क्यों किया ?

उत्तर -लेखक के मुँह में खीरे को देखकर पानी आ गया था | वह उसे खाने के लिए ललचा उठे थे , परन्तु वे एक बार नवाब साहब को मना कर चुके थे ,अत: अपने इंकार को बनाए रखने के लिए या आत्मसम्मान को बचाए रखने के लिए उन्होंने खीरा खाने से इंकार कर दिया |

4-नवाब साहब ने गर्व से गुलाबी आँखों द्वारा लेखक की तरफ क्यों देखा ?

उत्तर -नवाब साहब ने खीरा खाने के बजाय उसे सूँघा और खिड़की के बाहर फेंक दिया | उसे लगा की इससे उसकी नवाबी शान में चार -चाँद लग गए हैं | इसी गर्व के कारण उसकी आँखों में नशा आ गया | उसने अपनी इसी शान को दिखाने के लिए लेखक की ओर गर्व से देखा |

5.बिना खीरा खाए नवाब साहब को डकार लेते देखकर लेखक क्या सोचने पर विवश हो गया ?

उत्तर-लेखक ने देखा कि नवाब साहब ने खीरों की फाँकों का रसास्वादन किया उन्हें मुँह के करीब ले जाकर सूंघा और बाहर फेंक दिया। इसके बाद नवाब साहब को डकार लेता देखकर लेखक यह सोचने पर विवश हो गया कि क्या इस तरह सूँघने मात्र से पेट भर सकता है।

6. लखनवी अंदाज़' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर-'लखनवी अंदाज़' शीर्षक के मूल में व्यंग्य निहित है। इस कहानी में वर्णित स्थान लखनऊ के आसपास का प्रतीत होता है। इसके अलावा नवाब साहब की शान, दिखावा, रईसी का प्रदर्शन, नवाबी ठसक, नज़ाकत आदि सभी लखनऊ के उन नवाबों जैसी है, जिनकी नवाबी कबकी छिन चुकी है पर उनके कार्य व्यवहार में अब भी इसकी झलक मिलती है। पाठ को पूरी तरह अपने में समेटे हुए यह शीर्षक 'लखनवी अंदाज़' पूर्णतया सार्थक एवं उपयुक्त है।

7. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उत्तर- हमारे मत में बिना विचार, घटना और पात्रों के बिना कहानी नहीं लिखी जासकती। ये तीनों बातें कहानी के आवश्यक तत्व होते हैं। जब तक कोई विचार नहीं आएगा, तब तक कहानी बन ही नहीं सकती। घटना कहानी की कथावस्तु को आगे बढ़ाती है और पात्रों के माध्यम से कहानी कही जाती है। यशपाल का कथन तो 'नई कहानी पर व्यंग्य है अर्थात् नई कहानी में विचार, घटना और पात्रों का अभाव रहता है तभी वह रोचक एवं उद्देश्यपूर्ण नहीं होती।

8. नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी करने का एक रेखाचित्र प्रस्तुत किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में प्रस्तुत करें।

उत्तर-नवाब साहब ने लखनऊ के बालम खीरे खरीदे। वे खीरे तौलिए पर रखे हुए थे। फिर उन्होंने खीरों को लोटे के पानी से खिड़की के बाहर करके धोया और फिर तौलिए से पोंछ लिया। इसके बाद जेब से चाकू निकाला और दोनों खीरों के सिर काट डाले। फिर उन्हें गोंदकर झाग निकाला ताकि उनका कड़वापन चला जाए। इसके बाद उन खीरों को बहुत सावधानी से छीला और काटकर फाँकें तैयार की। इसके बाद बहुत बारीक से खीरे की फाँकों पर जीरा मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी। अब खीरे खाने को तैयार थे पर नवाब साहब ने उन्हें केवल सूंघा और खिड़की से बाहर फेंक दिया।

9. खीरे के सम्बन्ध में नवाब साहब के व्यवहार को उनकी सनक कहा जा सकता है ?क्या सनक का कोई सकारात्मक रूप हो सकता है ?

उत्तर-खीरे के सम्बन्ध में नवाब साहब के व्यवहार की उनकी सनक ही कहा जा सकता है। उन्होंने बहुत यत्न के साथ खीरों को खाने के लायक तैयार किया और फिर अपनी सनक के कारण खिड़की से बाहर फेंक दिया। इसमें उनकी झूठी नवाबी शान की सनक थी। हाँ, सनक का सकारात्मक रूप भी हो सकता है। जितने भी समाज-सुधार या देशभक्ति के काम हुए है, वे सभी सनक के कारण ही सम्भव हुए हैं। सनकी व्यक्ति ही इन कामों को अंजाम तक पहुंचाते हैं।

10. नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए।' इस पंक्ति में छिपे व्यंग्य स्पष्ट करें।

उत्तर- इस पंक्ति में गहरा व्यंग्य छिपा है। लेखक कहना चाहता है कि लखनवी नवाबों की सारी जिंदगी छोटी-छोटी बातों में नजाकत दिखाने में बीत जाती है।वे सुबह उठने से लेकर रात सोने तक अपनी नवाबी शान को लिए-लिए फिरते हैं। वे अपने नखरे-भरे अंदाजों में ही जीवन गर्क कर लेते हैं। वे जीवन-भर ठोस कुछ भी नहीं करते। वे केवल कपोल कल्पनाओं में जीना चाहते हैं।

11. लेखक नवाब साहब को देखते ही उसके प्रति व्यंग्य से क्यों भर जाता है ?

उत्तर- लेखक के मन में लखनवी नवाबों के प्रति पूर्वधारणा है कि वे अपनी आन-बान-शान को बहुत महत्व देते हैं। वे हर चीज से नजाकत दिखाते हैं तथा स्वयं को औरों से अधिक शिष्ट, शालीन और कुलीन सिद्ध करना चाहते हैं। इस धारणा के कारण उसे नवाब के हर कार्य में नवाबी शान दिखाई दी। उसे नहीं पता कि नवाब साहब सेकंड क्लास में यात्रा क्यों कर रहे हैं, फिर भी वह उसमें खोट देखता है। उसका नवाब को 'लखनऊ की नवाबी नस्ल का सफेदपोश सज्जन' कहना ही उसकी पूर्वधारणा का प्रमाण है।

12. 'नई कहानी' और 'लखनवी अंदाज' में आपको क्या समानता दिखाई देती है ?

उत्तर- नई कहानी और लखनवी अंदाज दोनों अशरीरी, सूक्ष्म और काल्पनिक हैं। दोनों ठोस को नहीं, गंध को महत्व देते हैं। नवाब साहब बिना खीरा खाए पेट भरना चाहते हैं तो नए कहानीकार बिना घटना, पात्र और उद्देश्य के कहानी लिखना चाहते हैं। दोनों ही जीवन की वास्तविकता और यथार्थ की उपेक्षा करते हैं और सूक्ष्म की आराधना करते हैं।

'एक कहानी यह भी'
मन्नू भंडारी

पाठ का सारांश

एक कहानी यह भी' मन्नू भंडारी द्वारा आत्मपरक शैली में लिखी हुई आत्मकथ्य है। इस पाठ में यह बात बड़े ही प्रभावशाली ढंग से दर्शाई गई है कि बालिकाओं को किस तरह की पाबंदियों का सामना करना पड़ता है। अपने पिता से लेखिका के वैचारिक मतभेद का भी चित्रण हुआ है। प्रस्तुत आत्मकथा में लेखिका मन्नू भंडारी ने सिलसिलेवार आत्मकथा न लिखकर उन व्यक्तियों और घटनाओं का वर्णन किया है जिन्होंने उसके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओं के साथ-साथ अपने पिताजी, कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल के बारे में भी लिखा है। जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े है। लेखिका ने बड़े रोचक ढंग से एक साधारण लड़की के असाधारण बनने के पड़ावों का वर्णन किया है। सन् 46-47 की आज़ादी की आँधी ने मन्नू जी को अछूता नहीं छोड़ा। छोटा शहर की युवा होती लड़की ने आज़ादी की लड़ाईयों में जिस तरह भागीदारी की, इससे उसका उत्साह, ओज, संघटन क्षमता और विरोध करने की तरीका देखते ही बनता है। इन सब घटनाओं के साथ हो रहे अपने पिताजी के अंतर्विरोधों को भी लेखिका ने बखूबी उजागर किया है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए-

पाँच भाई-बहिनों में सबसे छोटी मैं। सबसे बड़ी बहिन की शादी के समय मैं शायद सात साल की थी और उसकी एक धुँधली - सी याद ही मेरे मन में है, लेकिन अपने से दो साल बड़ी बहिन सुशीला और मैंने घर के बड़े से आँगन में बचपन के सारे खेल खेले - सतोलिया, लँगड़ी टाँग, पकड़म - पकड़ाई, काली-टीलो... तो कमरों में गुड्डे गुड़ियों के ब्याह भी रचाए, पास - पड़ोस की सहेलियों के साथ। यों खेलने को हमने भाइयों के साथ गिल्ली डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

प्रश्न 1 - अपनी बड़ी बहन की शादी में लेखिका कितने साल की थी?

(क) छः (ख) सात (ग) पाँच (घ) चार

प्रश्न 2 - बड़ी बहिन सुशीला और लेखिका ने घर के बड़े से आँगन में बचपन के कौन से खेल खेले?

(क) सतोलिया, लँगड़ी - टाँग (ख) पकड़म - पकड़ाई

(ग) काली - टीलो (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 - भाइयों के साथ गिल्ली डंडा और पतंग उड़ाने , काँच पीसकर माँजा सूतने जैसे खेलों की सीमा लेखिका के लिए कहाँ तक थी?

(क) केवल घर तक (ख) घर के बाहर तक

(ग) पड़ोसियों के घर तक (घ) घर की छत तक

प्रश्न 4 - मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी क्यों नहीं थी?

प्रश्न 5 - अपनी ज़िदगी खुद जीने के आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को किस परंपरागत कल्चर को विच्छिन्न कर दिया है?

उत्तर - 1.(ख) सात , 2.(घ) उपरोक्त सभी ,3.(क) केवल घर तक , 4.क्योंकि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं, 5. पड़ोस-कल्चर को।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 2. पाठ के आधार पर निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए

1. लेखिका के पिता ने उसके व्यक्तित्व पर कब ध्यान देना शुरू किया?

(क) जब लेखिका के भाई-बहन घर से चले गए (ख) जब उनकी शादी हो गई।

(ग) जब वह बड़ी हो गई। (घ) जब वह क्रांतिकारी बन गई।

2. सन् 46-47 के दिनों में देश का माहौल कैसा था?

(क) देश को स्वतंत्र कराने का जोश उफान पर था। (ख) संविधान तैयार किया जा रहा था।

(ग) देश में युद्ध की स्थिति बनी हुई थी। (घ) स्वतंत्रता की तैयारी चल रही थी।

3. इस लेख में लेखिका का कौन-सा व्यक्तित्व सामने आया है?

(क) गुस्सैल (ख) स्वतंत्रता सेनानी (ग) उद्दंड (घ) शर्मीला

4. लेखिका के घर का वातावरण कैसा था?

(क) धार्मिक वातावरण (ख) राजनीतिक वातावरण

(ग) शैक्षिक वातावरण (घ) अतिथि सत्कार प्रिय वातावरण

5. लेखिका के पिता लेखिका को घर में होने वाली बहसों में बैठने को क्यों कहते थे?

(क) वे उसे बहस करना सिखाना चाहते थे (ख) वे उसे देश की स्थिति से परिचित कराना चाहते थे

(ग) औपचारिकता वश बैठने को कहते थे (घ) लेखिका की इच्छा के कारण

6. सन् 1942 के आंदोलन के बाद देश का वातावरण कैसा था?

(क) आजादी की प्रतीक्षा वाला (ख) अनिश्चितता का

(ग) मतभेदों से भरा (घ) स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वालों की होड़ भरा

7. लेखिका और उनके पिता के बीच टकराव का क्या कारण था?

(क) लड़ाई-झगड़ा (ख) विचारों की भिन्नता

(ग) उम्र की भिन्नता (घ) राजनीतिक कारण

8. महानगरीय जीवन कैसा है?

(क) आत्मीयतापूर्ण (ख) आत्मीयता विहीन (ग) उदार (घ) संकीर्ण

9. लेखिका के पिता द्वारा लिखे गए शब्दकोश से उन्हें किसकी प्राप्ति हुई ?

(क) यश और प्रतिष्ठा की (ख) धन एवं सम्पदा की

(ग) सरकार द्वारा सम्मान की (घ) मंगला पारितोष पुरस्कार की

10. मन्नू के पिता का स्वभाव शक्की क्यों हो गया ?

(क) अपनों के हाथों मिले विश्वासघात के कारण (ख) आर्थिक विवशताओं के कारण

(ग) उपेक्षा के कारण (घ) उपरोक्त सभी कारणों से

उत्तर-1. (क) जब लेखिका के भाई-बहन घर से चले गए। 2(क) देश को स्वतंत्र कराने का जोश उफान पर था 3.(ख) स्वतंत्रता सेनानी4. (घ) अतिथि सत्कार प्रिय वातावरण 5 .(ख) वे उसे देश की स्थिति से परिचित कराना चाहते थे 6.(घ) स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वालों की होड़ भरा7. (ख) विचारों की भिन्नता 8.(ख) आत्मीयता विहीन 9. (क) यश और प्रतिष्ठा की 10. (घ) उपरोक्त सभी कारणों से

वर्णनात्मक प्रश्न अभ्यास

1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

उत्तर -लेखिका के जीवन पर दो लोगों का विशेष प्रभाव पड़ाः पिता का प्रभाव लेखिका के जीवन पर पिताजी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे हीन भावना से ग्रसित हो गई। इसी के परिमाण स्वरुप उनमें आत्मविश्वास की भी कमी हो गई थी। पिता के द्वारा ही उनमें देश प्रेम की भावना का भी निर्माण हुआ था। शिक्षिका शीला अग्रवाल का प्रभाव- शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने एक ओर लेखिका के खोए आत्मविश्वास को पुनः लौटाया तो दूसरी ओर देशप्रेम की अंकुरित भावना को उचित माहौल प्रदान किया। जिसके फलस्वरूप लेखिका खुलकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने लगी।

2. इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

उत्तर-लेखिका के पिता का मानना कि रसोई का काम में लग जाने के कारण लड़कियों की क्षमता और प्रतिभा नष्ट हो जाती है। वे पकाने खाने तक ही सीमित रह जाती हैं और अपनी सही प्रतिभा का उपयोग नहीं कर पातीं। इस प्रकार प्रतिभा को भट्टी में झोंकने वाली जगह होने के कारण ही वे रसोई को 'भटियारखाना' कहकर संबोधित करते थे।

3. वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर-एक बार कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि लेखिका के पिताजी आकर मिलें और बताएँ की लेखिका की गतिविधियों के खिलाफ क्यों न अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाए। पत्र पढ़कर पिताजी गुस्से से भन्नाते हुए कॉलेज गए। इससे लेखिका बहुत भयभीत हो गई। परन्तु प्रिंसिपल से मिलने तथा असली अपराध के पता चलने पर लेखिका के पिता को अपनी बेटी से कोई शिकायत नहीं रही। पिताजी के व्यवहार में परिवर्तन देख लेखिका को न तो अपने आँखों पर भरोसा हुआ और न ही अपने कानों पर विश्वास हुआ।

4. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए |

उत्तर-लेखिका के अपने पिता के साथ अक्सर वैचारिक टकराहट हुआ करती थी-

(1) लेखिका के पिता यद्यपि स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी नहीं थे परन्तु वे स्त्रियों का दायरा चार दीवारी के अंदर ही सीमित रखना चाहते थे। परन्तु लेखिका खुले विचारों की महिला थी।

(2) लेखिका के पिता लड़की की शादी जल्दी करने के पक्ष में थे। लेकिन लेखिका जीवन की आकाँक्षाओं को पूर्ण करना चाहती थी।

(3) लेखिका का स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेकर भाषण देना उनके पिता को पसंद नहीं था।

(4) पिताजी का लेखिका की माँ के साथ अच्छा व्यवहार नहीं था। स्त्री के प्रति ऐसे व्यवहार को लेखिका अनुचित समझती थी।

(5) बचपन के दिनों में लेखिका के काले रंग रुप को लेकर उनके पिता का मन उनके लिए उदासीन रहा करता था।

5. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

उत्तर-सन् 1946-47 ई. में समूचे देश में 'भारत छोड़ो आंदोलन' पूरे उफ़ान पर था। । हर तरफ़ हड़तालें, प्रभात फेरियों, जुलूस और नारेबाजी हो रही थी। घर में पिता और उनके साथियों के साथ होनेवाली गोष्ठियों और गतिविधियों ने लेखिका को भी जागरूक कर दिया था। प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से जोड़ दिया। जब देश में नियम - कानून और मर्यादाएँ टूटने लगीं, तब पिता की नाराजगी के बाद भी वे पूरे उत्साह के साथ आंदोलन में कूद पड़ीं। उनका उत्साह, संगठन क्षमता और विरोध करने का तरीक़ा देखते ही बनता था। वे चौराहों पर बेझिझक भाषण, नारेबाजी और हड़तालें करने लगीं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भी सक्रिय भूमिका थी।

6. लेखिका ने बचपन में में अपने भाइयों के साथ गिल्ली डंडा तथा पतंग उड़ाने जैसे खेल भी खेले किंतु लड़की होने के का उनका दायरा घर की चारदीवारी तक सीमितथा। क्या आज भी लड़कियों के लिए स्थितियाँ ऐसी ही हैं या बदल गई हैं, अपने परिवेश के आधार पर लिखिए।

उत्तर-अपने समय में लेखिका को खेलने तथा पढ़ने की आज़ादी तो थी लेकिन अपने पिता द्वारा निर्धारित गाँव की सीमा तक ही। परन्तु आज स्थिति बदल गई है। आज लड़कियाँ एक शहर से दूसरे शहर शिक्षा ग्रहण करने तथा खेलने जाती हैं। ऐसा केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आज भारतीय महिलाएँ विदेशों तक, अंतरिक्ष तक जाकर दुनिया में अपने देश का नाम रौश कर रही हैं। परन्तु इसके साथ दूसरा पहलू यह भी है की आज भी हमारे देश में कुछ लोग स्त्री स्वतंत्रता के पक्षधर नहीं हैं।

7. मनुष्य के जीवन में आस-पड़ोस का बहुत महत्व होता है। परंतु महानगरों में रहने वाले लोग प्रायः 'पड़ोस कल्चर' से वंचित रह जाते हैं। इस बारे में अपने विचार लिखिए।

उत्तर-आज मनुष्य के सम्बन्धों का क्षेत्र सीमित होता जा रहा है, मनुष्य आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है। उसे अपने सगे सम्बन्धियों तक के बारे में अधिक जानकारी नहीं होती है। यही कारण है कि आज के समाज में पड़ोस कल्चर लगभग लुप्त होता जा रहा है। लोगों के पास समय का अभाव होता जा रहा है। मनुष्य के पास इतना समय नहीं है कि वो अपने पड़ोसियों से मिलकर उनसे बात-चीत करें।

नौबतखाने में इबादत- यतीन्द्र मिश्र

लेखक परिचय

यतीन्द्र मिश्र- इनका जन्म 1977 में अयोध्या, उत्तर प्रदेश में हुआ। इन्होने लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से हिंदी में एम.ए किया। ये आजकल स्वतंत्र लेखन के साथ अर्धवार्षिक सहित पत्रिका का सम्पादन कर रहे हैं। सन् 1999 में साहित्य और कलाओं के संवर्धन और अनुशलीन के लिए एक सांस्कृतिक न्यास 'विमला देवी फाउंडेशन' का संचालन भी कर रहे हैं।

प्रमुख रचनाएँ-

काव्य संग्रह - यदा-कदा, अयोध्या तथा अन्य कविताएँ, ड्योढ़ी पर आलाप।

पुस्तक - गिरिजा

पुरस्कार - भारत भूषण अग्रवाल कविता सम्मान, हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार, ऋतुराज पुरस्कार आदि।

सार

अम्मीरुद्दीन उर्फ बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म बिहार में डुमराँव के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। इनके बड़े भाई का नाम शम्सुद्दीन था जो उम्र में उनसे तीन वर्ष बड़े थे। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के निवासी थे। इनके पिता का नाम पैग़म्बरबख्श खाँ तथा माँ मिट्ठन थीं। पाँच-छह वर्ष होने पर वे डुमराँव छोड़कर अपने ननिहाल काशी आ गए। वहाँ उनके मामा सादिक हुसैन और अलीबख्श तथा नाना रहते थे जो कि जाने माने शहनाईवादक थे। वे लोग बाला जी के मंदिर की ड्योढ़ी पर शहनाई बजाकर अपनी दिनचर्या का आरम्भ करते थे। वे विभिन्न रियासतों के दरबार में बजाने का काम करते थे।

ननिहाल में 14 साल की उम्र से ही बिस्मिल्लाह खाँ ने बाला जी के मंदिर में रियाज़ करना शुरू कर दिया। उन्होंने वहाँ जाने का ऐसा रास्ता चुना जहाँ उन्हें रसूलन और बतूलन बाई की गीत सुनाई देती जिससे उन्हें खुशी मिलती। अपने साक्षात्कारों में भी इन्होनें स्वीकार किया की बचपन में इन लोगों ने इनका संगीत के प्रति प्रेम पैदा करने में भूमिका निभायी। भले ही वैदिक इतिहास में शहनाई का जिक्र ना मिलता हो परन्तु मंगल कार्यों में इसका उपयोग प्रतिष्ठित करता है अर्थात यह मंगल ध्वनि का सम्पूरक है। बिस्मिल्लाह खाँ ने अस्सी वर्ष के हो जाने के बावजूद हमेशा पाँचों वक्त वाली नमाज में शहनाई के सच्चे सुर को पाने की प्रार्थना में बिताया। मुहर्रम के दसों दिन बिस्मिल्लाह खाँ अपने पूरे खानदान के साथ ना तो शहनाई बजाते थे और ना ही किसी कार्यक्रम में भाग लेते। आठवीं तारीख को वे शहनाई बजाते और दालमंडी से फातमान की आठ किलोमीटर की दूरी तक भीगी आँखों से नोहा बजाकर निकलते हुए सबकी आँखों को भिगो देते।

फ़ुरसत के समय वे उस्ताद और अब्बाजान को कम याद कर अपनी पसंद की सुलोचना गीताबाली जैसी अभिनेत्रियों की देखी फिल्मों को याद करते थे। वे अपनी बचपन की घटनाओं को याद करते कि कैसे वे छुपकर नाना को शहनाई बजाते हुए सुनता तथा बाद में उनकी 'मीठी शहनाई' को ढूँढ़ने के लिए एक-एक कर शहनाई को फेंकते और कभी मामा की शहनाई पर पत्थर पटककर दाद देते। बचपन के समय वे फिल्मों के बड़े शौक़ीन थे, उस समय थर्ड क्लास का टिकट छः पैसे का मिलता था जिसे पूरा करने के लिए वो दो पैसे मामा से, दो पैसे मौसी से और दो पैसे नाना से लेते थे फिर बाद में घंटों लाइन में लगकर टिकट खरीदते थे। बाद में वे अपनी पसंदीदा अभिनेत्री सुलोचना की फिल्मों को देखने के लिए वे बालाजी मंदिर पर शहनाई बजाकर कमाई करते। वे सुलोचना की कोई फिल्म ना छोड़ते तथा कुलसुम की देसी घी वाली दूकान पर कचौड़ी खाना ना भूलते।

काशी के संगीत आयोजन में वे अवश्य भाग लेते। यह आयोजन कई वर्षों से संकटमोचन मंदिर में हनुमान जयंती के अवसर हो रहा था जिसमे शास्त्रीय और उपशास्त्रीय गायन-वादन की सभा होती है। बिस्मिल्लाह खाँ जब काशी के बाहर भी रहते तब भी वो विश्रनाथ और बालाजी मंदिर की तरफ मुँह करके बैठते और अपनी शहनाई भी उस तरफ घुमा दिया करते। गंगा, काशी और शहनाई उनका जीवन थे। काशी का स्थान

सदा से ही विशिष्ट रहा है, यह संस्कृति की पाठशाला है। बिस्मिल्लाह खाँ के शहनाई के धुनों की दुनिया दीवानी हो जाती थी।

सन् 2000 के बाद पक्का महाल से मलाई-बर्फ वालों के जाने से, देसी घी तथा कचौड़ी-जलेबी में पहले जैसा स्वाद ना होने के कारण उन्हें इनकी कमी खलती। वे नए गायकों और वादकों में घटती आस्था और रियाजों का महत्व के प्रति चिंतित थे। बिस्मिल्लाह खाँ हमेशा से दो कौमों की एकता और भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहे। नब्बे वर्ष की उम्र में 21 अगस्त 2006 को उन्होंने दुनिया से विदा ली। वे भारतरत्न, अनेकों विश्वविद्यालय की मानद उपाधियाँ व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा पद्मविभूषण जैसे पुरस्कारों से जाने नहीं जाएँगे बल्कि अपने अजेय संगीतयात्रा के नायक के रूप में पहचाने जाएँगे।

बहुविकल्पीय प्रश्न उत्तर

1.बिस्मिल्ला खाँ संगीत के रियाज के लिए कहाँ जाते थे?

(क) नाना के घर (ख) काशी विश्वनाथ मन्दिर (ग) बालाजी के मंदिर (घ) घर के छत पर

► (ग) बालाजी के मंदिर

2. रसूलन और बतलून के गाने पर किसे ख़ुशी मिलती है?

(क) बच्चों को (ख) बिस्मिल्ला खाँ को (ग) अमीरूद्दीन को (घ) श्रोताओं को

► (ग) अमीरूद्दीन को

3. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म स्थान कहाँ है?

(क) काशी (ख) डुमराँव (ग) पटना (घ) इनमें से कोई नहीं

► (ख) डुमराँव

4. अमीरूद्दीन का ननिहाल कहाँ है?

(क) काशी (ख) डुमराँव (ग) कानपुर (घ) लखनऊ

► (क) काशी

5. बिस्मिल्लाह खाँ शहनाई और काशी को इस धरती पर क्या मानते थे?

(क) बोझ (ख) जन्नत (ग) नरक (घ) इनमें से कोई नहीं

► (ख) जन्नत

निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिकाशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं, उसी तरह मुहर्रम-ताजिया और होली-अबीर, गुलाल की गंगा-जमुनी संस्कृति भी एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही कुछ इतिहास बन चुका है। अभी आगे कुछ इतिहास बन जाएगा। फिर भी कुछ बचा है जो सिर्फ काशी में है। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है। काशी आनंदकानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाई-चारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

1. गंगा-जमुनी संस्कृति का लक्षण नहीं है-

   i. गंगा और यमुना दोनों में स्नान ii. बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ

iii. मुहरम और होली दोनों मनाना iv. हिंदू और मुसलमान दोनों में मेल-जोल

2. काशी का इतिहास नहीं रचा गया है-

i. निरंतर संगीत-साधना से ii. काशी को आनन्दमयता की भूमि बनाने से

iii. मृत्यु को मंगलमय मानने से iv. धर्म एवं जातिगत वैमनस्य से

3. काशी में मरण को भी क्या माना गया है?

i. नरक का मार्ग ii. अपशकुन iii. दुर्भाग्य iv. मंगलमय

4. लेखक ने बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ को एक-दूसरे का बताया है-

i. विरोधी ii. प्रेमी iii. नायक iv. पूरक

5. काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है- वाक्य का भेद है-

i. सरल वाक्य ii. संयुक्त वाक्य iii. साधारण वाक्य iv. मिश्र वाक्य

6. बिस्मिल्ला खाँ खुदा से क्या माँगते थे?

i. दौलत ii. सच्चा सुर iii. इबादत iv. रियाज़

7. डुमराँव में कौन-सी नदी बहती है?

i. सोन ii. बेतवा iii. कोसी iv. गंगा

8. दक्षिण भारत का मंगल वाद्य क्या है?

i. शहनाई ii. नागस्वरम् iii. मुरली iv. सुषिर-वाद्य

9. किस भाषा के लोकगीतों में शहनाई का उल्लेख मिलता है?

i. भोजपुरी ii. ब्रज भाषा iii. अवधी भाषा iv. छत्तीसगढ़ी

10. बिस्मिल्ला खाँ को भारत रत्न से कब सम्मानित किया गया ?

i. 2003 में ii. 2008 में iii. 2001 में iv. 2006 में

उत्तर

1.(a) गंगा और यमुना दोनों में स्नान.

2.(d) धर्म एवं जातिगत वैमनस्य से

3.(d) मंगलमय

4.(d) पूरक

5.(ii) संयुक्त वाक्य

6.(b) सच्चा सुर

7.(a) सोन

8.(b) नागस्वरम्

9.(c) अवधी भाषा

10.(c) 2001 में

लघु-उत्तरीय प्रश्न (20-30 शब्दों में)____दो अंक स्तरीय

प्रश्न 1. बिस्मिल्ला खाँ सजदे में किस चीज के लिए गिड़गिड़ाते थे? इससे उनके व्यक्तित्व का कौन-सा पक्ष उद्घाटित होता है?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ जब इबादत में खुदा के समाने झुकते तो सजदे में गिड़गिड़ाकर खुदा से सच्चे सुर का वरदान माँगते । इससे पता चलता है कि खाँ साहब धार्मिक, संवेदनशील एवं निरभिमानी थे। संगीत-साधना हेतु समर्पित थे। अत्यन्त विनम्र थे ।

प्रश्न 2. सुषिर वाद्य किन्हें कहा जाता है? 'शहनाई' शब्द की व्युत्पत्ति किस प्रकार हुई है?

उत्तर- सुषिर वाद्य ऐसे वाद्य हैं, जिनमें नाड़ी (नरकट या रीड) होती है, जिन्हें फूंककर बजाया जाता है। अरब देशों में ऐसे वाद्यों को 'नय' कहा जाता है और उनमें शहनाई को 'शाहनेय' अर्थात् 'सूषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि दी गई है, क्योंकि यह वाद्य मुरली, शृंगी जैसे अनेक वाद्यों से अधिक मोहक है।.

प्रश्न 3. 'संगीतमय कचौड़ी' का आप क्या अर्थ समझते हैं?

उत्तर- कुलसुम हलवाइन की कचौड़ी को संगीतमय कहा गया है। वह जब बहुत गरम घी में कचौड़ी डालती थी, तो उस समय छन्न से आवाज उठती थी जिसमें अमीरुद्दीन को संगीत के आरोह-अवरोह की आवाज सुनाई देती थी। इसीलिए कचौड़ी को 'संगीतमय कचौड़ी' कहा गया है।

प्रश्न 4. डुमराँव की महत्ता किस कारण से है?

उत्तर- डुमराँव की महत्ता शहनाई के कारण है। प्रसिद्ध शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ का जन्म डुमराँव में हुआ था। शहनाई बजाने के लिए जिस 'रीड' का प्रयोग होता है, जो एक विशेष प्रकार की घास 'नरकट' से बनाई जाती है, वह डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है।

प्रश्न 5. बिस्मिल्ला खाँ जब काशी से बाहर प्रदर्शन करते थे तो क्या करते थे? इससे हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ जब कभी काशी से बाहर होते तब भी काशी विश्वनाथ को नहीं भूलते। काशी से बाहर रहने पर वे उस दिशा में मुँह करके थोड़ी देर तक शहनाई अवश्य बजाते थे। इससे हमें धार्मिक दृष्टि से उदारता एवं समन्वयता की सीख मिलती है। हमें धर्म को लेकर किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं रखना चाहिए।

प्रश्न 6. पठित पाठ के आधार पर बिस्मिल्ला खाँ के बचपन का वर्णन करें।

उत्तर- अमीरुद्दीन यानी उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ चार साल की उम्र में ही नाना की शहनाई को सुनते और शहनाई को ढूँढते थे। उन्हें अपने मामा का सान्निध्य भी बचपन में शहनाईवादन की कौशल विकास में लाभान्वित किया। 14 साल की उम्र में वे बालाजी के मंदिर में रियाज़ करने के क्रम में संगीत साधना करते और आगे चलकर महान कलाकार हुए।

प्रश्न 7. पठित पाठ के आधार पर मुहर्रम पर्व से बिस्मिल्ला खाँ के जुड़ाव का परिचय दें।

उत्तर- मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ का अत्यधिक जुड़ाव था । मुहर्रम के महीने में वे न तो शहनाई बजाते थे और न ही किसी संगीत-कार्यक्रम में सम्मिलित होते थे। मुहर्रम की आठवीं तारीख को बिस्मिल्ला खाँ खड़े होकर ही शहनाई बजाते थे। वे दालमंडी में फातमान के लगभग आठ किलोमीटर की दूरी तक रोते हुए नौहा बजाते पैदल ही जाते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (50-60)__3 अंक

प्रश्न 1.अमीरुद्दीन के मामा की दिनचर्या की शुरुआत कैसे होती थी?

उत्तर-अमीरुद्दीन के मामा देश के जाने-माने शहनाई वादक थे। उनकी दिनचर्या की शुरुआत बालाजी के मंदिर से होती थी। वे सर्वप्रथम इसी मंदिर की ड्योढ़ी पर आ बैठते और रोज बदल-बदलकर मुल्तानी, कल्याण, ललित और कभी भैरव राग सुनाते रहते थे। इसके बाद ही वे विभिन्न रियासतों के दरबार में शहनाई बजाने जाया करते थे।

प्रश्न 2.रीड क्या है? शहनाई के लिए इसकी क्या उपयोगिता है?

उत्तर-रीड, एक प्रकार की घास 'नरकट' से बनाई जाती है। यह बिहार के डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है। रीड अंदर से पोली खोखली होती है। इसी के सहारे शहनाई में हवा फेंकी जाती है। इसी की मदद से शहनाई बजती है। यदि रीड न हो तो शहनाई बजना कठिन हो जाएगा।

प्रश्न 3.बिस्मिल्ला खाँ बालाजी मंदिर क्यों जाया करते थे? वे किस रास्ते से मंदिर जाया करते थे?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के रियाज़ के लिए प्रतिदिन नियमित रूप से बालाजी मंदिर जाया करते थे। वे मंदिर तक पहुँचने के लिए रसूलनबाई और बतूलनबाई के घर के पास से जाने वाले रास्ते का प्रयोग करते थे। उन्हें इस रास्ते से जाना अच्छा लगता था। इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल-बनाव कभी ठुमरी, कभी दादरा, कभी टप्पे आदि सुनते हुए वे मंदिर पहुँचते थे।

प्रश्न 4.इतिहास में शहनाई का उल्लेख किस तरह मिलता है?

उत्तर-वैदिक इतिहास में शहनाई का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। संगीत शास्त्रों में इसे सुषिर वाद्य के रूप में गिना जाता है। अरब देश में नरकट या रीड वाले वाद्य यंत्रों को नय कहा जाता है। शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि प्रदान की गई है। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तानसेन द्वारा रचित बंदिश में शहनाई आदि का उल्लेख मिलता है।

प्रश्न 5.बिस्मिल्ला खाँ अपने खुदा से सजदे में क्या माँगते हैं? इससे उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ अपनी संगीत कला को समर्पित कलाकार थे। वे अपनी संगीत कला में निखार लाने के लिए खुदा से सच्चे सुर की नेमत माँगा करते थे। वे सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते थे और बार-बार सच्चे सुर की माँग करते। थे। इससे बिस्मिल्ला खाँ की विनम्रता और सीखने की ललक जैसी विशेषताओं का पता चलता है।

प्रश्न 6.बिस्मिल्ला खाँ की तुलना कस्तूरी मृग से क्यों की गई है?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ अपनी सफलता और उपलब्धियों से संतुष्ट होने वाले व्यक्ति न थे। वे सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचकर भी अपने कदम ज़मीन पर रखे हुए थे। जिस तरह हिरन अपनी ही कस्तूरी की महक से परेशान होकर उसे जंगल भर में खोजता फिरता है, उसी प्रकार बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के सुर सम्राट होकर भी यही सोचते थे कि उन्हें सुरों को बरतना अभी तक क्यों नहीं आया।

प्रश्न 7.बिस्मिल्ला खाँ अपनी जवानी के दिनों की किन यादों में खो जाते हैं?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ अपनी जवानी के दिनों की निम्नलिखित यादों में खो जाते हैं| वे अपने युवावस्था में रियाज को कम जुनून को अधिक याद करते हैं। वे पक्का महाल की कुलसुम हलवाइन की कचौड़ी वाली दुकान को याद करते हैं। वे गीताबाली एवं अपनी पसंदीदा अभिनेत्री सुलोचना की यादों में खो जाते हैं।

प्रश्न 8.बिस्मिल्ला खाँ फ़िल्म देखने के अपने शौक को किस तरह पूरा किया करते थे?
उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ फ़िल्म देखने के जुनूनी थे। उस समय थर्ड क्लास का टिकट छह पैसे का मिलता था। वे दो पैसे मामू से, दो पैसे मौसी से और दो पैसे नानी से लेते थे और घंटों लाइन में लगकर टिकट हासिल किया करते थे। वे सुलोचना की। नई फ़िल्म सिनेमाहाल में आते ही बालाजी मंदिर पर शहनाई बजाने से होने वाली आमदनी लेकर फ़िल्म देखने चल पड़ते थे।

प्रश्न 9.उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ काशी विश्वनाथ जी के प्रति अपार श्रद्धा रखते हैं, स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जिस तरह अपने धर्म के प्रति समर्पित थे, उसी प्रकार काशी विश्वनाथ जी के प्रति अपार श्रद्धा रखते थे। वे जब भी काशी से बाहर रहते थे, तब विश्वनाथ एवं बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते थे और थोड़ी देर के लिए ही सही पर, शहनाई उन्हें समर्पित कर बजाते थे। उनके मन की आस्था बालाजी और बाबा काशी विश्वनाथ में लगी रहती थी।

प्रश्न 10.उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ काशी छोड़कर अन्यत्र क्यों नहीं जाना चाहते हैं?
उत्तर-उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ काशी से असीम लगाव रखते हैं। बाबा विश्वनाथ और बालाजी में उनकी गहन आस्था है। उनके पूर्वजों ने काशी में रहकर शहनाई बजाई । बिस्मिल्ला खाँ काशी में ही रहकर शहनाई बजाना सीखा और संस्कार अर्जित किए। उनके नाना और मामा का जुड़ाव भी काशी से रहा है, इसलिए वे कोशी छोड़कर अन्यत्र नहीं जाना चाहते हैं।

प्रश्न 11.आज के युवाओं को बिस्मिल्ला के चरित्र से क्या सीख लेनी चाहिए?
उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ अत्यंत सादगी से जीवन जीते थे। वे सफलता के शिखर पर पहुँचने के बाद भी घंटों रियाज किया करते थे। वे बनाव-सिंगार पर ध्यान न देकर लक्ष्य प्राप्ति में जुटे रहे। उनके चरित्र से युवाओं को फैशन एवं सिंगार से दूर रहकर सफलता या लक्ष्य प्राप्ति की ओर ध्यान लगाने, परिश्रमी बनने तथा निरंतर अभ्यास करने की सीख लेनी चाहिए।

प्रश्न 12.'नौबतखाने में इबादत' नामक पाठ में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-'नौबतखाने में इबादत' नामक पाठ में एक ओर सादगीपूर्ण जीवन जीने का संदेश निहित है तो दूसरी ओर निरंतर अभ्यास करने के अलावा धार्मिक कट्टरता त्यागकर धार्मिक उदारता बनाए रखने, दूसरे धर्मों का आदर करने, अभिमान न करने, सफलता मिलने पर भी जमीन पर पाँव टिकाए रखने तथा ईश्वर के प्रति कृतज्ञता बनाए रखने का संदेश निहित है।

संस्कृति

प्रश्न -1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए|

आग के आविष्कार में कदाचित पेट की ज्वाला की प्रेरणा एक कारण रही। सुई-धागे के आविष्कार में शायद शीतोष्ण से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा। अब कल्पना कीजिए उस आदमी की जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढँका है, लेकिन जब वह खुले आकाश के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है, तो उसको केवल इसलिए नींद नहीं आती, क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है?

पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है। पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता। हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही मिला है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव प्रधान रहा है, किंतु उसका कुछ हिस्सा हमें मनीषियों से भी मिला है। जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है। रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला मनीषी हमारे आज के ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्ता था।

I) आग के आविष्कार के पीछे की प्रेरणा क्या रही होगी?

क) जानवर से बचने के लिए। ख) ठंड से बचने के लिए

ग) पेट की ज्वाला। घ) रौशनी करने की।

II) संस्कृति की जननी का कारण नहीं है?

क) पेट भरने की । ग) क और ख दोनो है

ख) तन ढकने की। घ) कोई भी नहीं।

III) लेखक ने 'मोती भरा थाल' का प्रयोग किसके लिए किया है?

क) तारों से भरे आकाश के लिए ग) अनाज से भरे खेतो के लिए

ख) फलों से लदे पेड़ के लिए घ) मोती से भरे समुद्र के लिए

IV) हमारी सभ्यता का बड़ा अंश कैसे व्यक्तियों से मिला है?

क) सभ्य व्यक्तियों से ग) समझदार व्यक्तियों से

ख) संस्कृत एवं मनीषियों से घ) अविष्कारक व्यक्तियों से

V) मनुष्यों ने तथ्य विशेष को कैसे प्राप्त किया है?

क) भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकरख) तार्किक शक्ति के कारण

ग) बुद्धिमत्ता के बल परघ) सहज संस्कृति के कारण

उत्तर:- I). पेट की ज्वाला

II) क और ख दोनों है

III) तारों से भरे आकाश के लिए

IV) संस्कृत एवं मनीषियों से

V) सहज संस्कृति के कारण

प्रश्न -2 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए|

भौतिक प्रेरणा, ज्ञानेप्सा-क्या ये दो ही मानव संस्कृति के माता-पिता हैं? दूसरे के मुँह में कौर डालने के लिए जो अपने मुँह का कौर छोड़ देता है, उसको यह बात क्यों और कैसे सूझती है? रोगी बच्चे को सारी रात गोद में लिए जो माता बैठी रहती है, वह आख़िर ऐसा क्यों करती है? सुनते हैं कि रूस का

भाग्यविधाता लेनिन अपनी डैस्क में रखे हुए डबल रोटी के सूखे टुकड़े स्वयं न खाकर दूसरों को खिला दिया करता था। वह आख़िर ऐसा क्यों करता था?

संसार के मज़दूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुःख में बिता दिया और इन सब से बढ़कर आज नहीं, आज से ढाई हज़ार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने अपना घर केवल इसलिए त्याग दिया कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके।

I) मानव संस्कृति के जनक कौन हैं?

क) भौतिक प्रेरणा　　ख) ज्ञानेप्सा

ग) क व ख दोनो ही।　　घ) सभ्यता और संस्कृति

II) इच्छाओं के वशीभूत दुखी मनुष्यों को किसने सुख से रहना सिखाया?

क) लेनिन　　ख) कार्ल मार्क्स

ग) सिद्धार्थ　　घ) गांधी

III) कार्ल मार्क्स किनके अधिकारों के लिए लड़ता था?

क) मजदूरों के लिए　　ख) बेज़ुबान जानवरों के लिए

ग) गरीबों के लिए　　घ) महिलाओं के लिए

IV) भाग्यविधाता किस देश का रहने वाला था?

क) फ्रांस　　ख) जर्मनी

ग) इंग्लैंड　　घ) रूस

V) तृष्णा का पर्यायवाची शब्द बताइये

क) इच्छा　　ख) कामना

ग) दुःख　　घ) क व ख दोनो ही

उत्तर:- I) क व ख दोनो ही

II) सिद्धार्थ

III) मजदूरों के लिए

IV) रूस

V) क व ख दोनों ही

प्रश्न-3I)कथन- कारण प्रश्नोत्तर-

निम्नलिखित प्रश्नों में दो कथन दिए गए हैं : कथन (A) तथा कारण (R) | इस प्रश्न का उत्तर निम्नलिखित में से कोई एक विकल्प चुनकर कीजिए |

कथन (A): किसी सिद्धांत को परिमार्जित करने वाले को संस्कृत मानव नही कहा जा सकता।

कारण (R): मनुष्य पूर्व आविष्कृत सिद्धांत को ही आगे बढ़ा रहा है।

क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

ख) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनो गलत है।

घ) कथन (A) सही है,लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

उत्तर　क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

II)　कथन (A): सभ्यता साधन है जबकि संस्कृति साध्य है|

कारण (R): सभ्यता बताती है कि 'हमारे पास क्या है|' और संस्कृति बताती है कि 'हम क्या है|'

'संस्कृति' पाठ के आधार पर उपर्युक्त कथनों के लिए सही विकल्प चुनिए|

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनो गलत है।

(ख) कथन (A) गलत है किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है तथा कारण (R) उसकी सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) सही है तथा कारण (R) उसकी गलत व्याख्या है।

उत्तर (ग) कथन (A) सही है तथा कारण (R) उसकी सही व्याख्या है।

III) कथन (A): सभ्यता का अर्थ मानव कल्याण से होता है ।

कारण(R): (i) संस्कृति द्वारा किए गए आविष्कारों को मानव हित के लिए काम में लाना ।

कारण(R): (ii) केवल आदर्शवादी बनकर रहना।

कथन के अनुसार कारण (R) (i) सही है।

कथन के अनुसार कारण (R) (ii) सही है।

कथन के अनुसार दोनों कारण (R) (i), (R) (ii) सही हैं

कथन के अनुसार दोनों कारण (R) (i), (R) (ii) गलत हैं।

उत्तर (क) कथन के अनुसार कारण (R) (i) सही है।

IV) कथन (A): संस्कृत व्यक्ति नई चीज की खोज करता है

कारण(R): बुद्धि व विवेक से नए तथ्य का दर्शन करने वाला संस्कृत व्यक्ति है।

कथन (A) सही है।

कारण (R) सही है।

कथन (A) कारण (R) की सही व्याख्या है।

कथन (A) कारण (R) की सही व्याख्या नहीं है।

उत्तर (ग) कथन (A) कारण (R) की सही व्याख्या है।

V) कथन:

नई खोज करने वाला व्यक्ति संस्कृत कहलाता है।

न्यूटन से अधिक जाने वाला विद्यार्थी सभ्य है।

सभ्य मानव संस्कृत मानव नहीं होता है ।

कथन (i) कथन (ii) पर निर्भर है ।

कथन (iii) कथन (i) और (ii) पर निर्भर है।

कथन (i) और (iii) कथन (ii) पर निर्भर है ।

कथन (ii) तथा (iii) सही नहीं हैं ।

उत्तर (ख) कथन (iii) कथन (i) और (ii) पर निर्भर है।

केस स्टडी प्रश्न

संस्कृति शब्द का संबंध संस्कार से है जिसका अर्थ है - "संशोधन करना, उत्तम बनाना" । मानव के यही संस्कार उनकी संस्कृति कहलाते हैं। जलवायु के अनुकूल रहन-सहन की विधियाँ विचार तथा परंपराएँ लोगों में रचनात्मक तरीके से ढल जाती हैं। वही बाद में उनके संस्कार बन जाते हैं। संस्कृति का बाह्य पक्ष भी होता है और आंतरिक भी। हमारे बाह्य आचार हमारे विचारों और मनोवृत्तियों के परिचायक होते हैं। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता उसकी संस्कृति की उपज होती है। हमारा रहन-सहन व पोशाक आदि सभी संस्कार देश के वातावरण, परिस्थिति व रुचि के अनुकूल ही निश्चित हो जाते हैं। ज़मीन पर बैठना, हाथ से खाना, नहाकर खाना व पहनावा ये सभी अचारण किसी भी स्थान के लोगों की मान्यताओं से संबंधित हैं। इस प्रकार वातावरण और रुचियों के अनुकूल ही उचित आचरणों का विधान किया गया है। मनुष्य में सौंदर्योपासना की प्रवृत्ति अनादि है । सौन्दर्य जिज्ञासा की इस प्रवृत्ति ने ही संस्कृति और सभ्यता को जन्म दिया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मानव संस्कृति और सभ्यता के विकास में कला का सर्वाधिक योगदान रहा है। इस केस स्टडी में उत्तराखंड की सांस्कृतिक लोक कला का अध्ययन किया गया है। हिमालय के मध्यवर्ती भाग का एक अञ्चल है उत्तराखंड है, जिसे भौगोलिक रूप से मध्य हिमालय कहा

जाता है। महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य के मंगल श्लोक में हिमालय की वंदना कर नगाधिराज को देवतात्मा एवं पृथ्वी का मानदंड कहा है।

प्रश्न 1)संस्कार का सामान्यतः क्या अर्थ लिया जाता है?

उत्तर संशोधन करना, उत्तम बनाना।

प्रश्न 2 उत्तराखंड हिमालय के किस भाग का अञ्चल है?

उत्तर मध्यवर्ती भाग का।

प्रश्न 3 पृथ्वी का मानदंड किसे कहा गया है?

उत्तर हिमालय को।

प्रश्न 4 संस्कृति के कितने पक्ष होते हैं?

उत्तर दो पक्ष - आंतरिक और बाह्य।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 परिष्कृत का क्या अर्थ होता है?

उत्तर शुद्ध किया हुआ।

प्रश्न 2 आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने अपना घर क्यों छोड़ दिया था?

उत्तर ताकि तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके।

प्रश्न 3 संस्कृति असभ्यता कब बन जाती है?

उत्तर जब संस्कृति कल्याणकारी नहीं रहती।

प्रश्न 4 वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति किसे कहा जा सकता है?

उत्तर जो किसी नई चीज की खोज करता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. न्यूटन और आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी में क्या अंतर है?

उत्तर न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था । वर्तमान युग में भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत से तो परिचित है ही, साथ ही उसे अन्य बातों का भी ज्ञान प्राप्त है जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही थे। ऐसा होने पर आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थियों को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य तो कह सकते हैं, पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते हैं।

प्रश्न 2 . आग की खोज बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?

उत्तर आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज है क्योंकि आग की खोज से पहले घर घर में चूल्हा नहीं जलता था। मानव समाज का अग्नि देवता के साथ साक्षात्कार नहीं हुआ था । मनुष्य पेट की भूख को चबकर ही पेट की भूख शांत करता था। वह पशु तुल्य भोजन करता था। अतः आग के आविष्कार के पीछे की प्रेरणा का मुख्य स्त्रोत पेट की ज्वाला ही रही होगी।

प्रश्न 3. आपकी दृष्टि में मानव हित में निरंतर परिवर्तनशीलता का नाम संस्कृति है?

उत्तर मानव की योग्यता और आवश्यकता ही साधनों का आविष्कार करती है। यही साधन मानव कल्याण की भावनाओं से जुड़ा होता है। हम जैसे जैसे विकास की ओर बढ़ते हैं, हमारी संस्कृति सभ्यता का रूप ले लेती है जो समाज में मानवता की भलाई के लिए इस्तेमाल होती है।

माता का अंचल

शिवपूजन सहाय

पाठ का सारांश

शिवपूजन सहाय द्वारा इस पाठ में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति को चित्रित गया है| इसमें लेखक ने अपनी बाल्यावस्था का मोहक वर्णन किया है | अपने साथियों के साथ खेले जाने वाले विविध प्रकार के खेलों के विस्तृत वर्णन के साथ ही अपने माता-पिता के वात्सल्य को भी प्रदर्शित किया है | जगह -जगह तुकबंदी का प्रयोग किया है और अंत में यह भी दर्शाया है कि बच्चे अपने पिता से जितना भी लगाव रखें विपदा के समय अपनी माँ के अंचल में ही अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं |

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्र.1 इस पाठ में माँ के प्रति अत्यधिक लगाव न होते हुए भी भोलानाथ माँ के अंचल में ही प्रेम और शांति पाता है | इसका आप क्या कारण पाते हैं ?

उ. पाठ के आधार पर यह पता चलता है कि भोलानाथ का अपने पिता से ज्यादा लगाव था लेकिन विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर अपनी माँ की शरण लेता है इसका कारण यह है कि बच्चा अपने पिता से जितना भी प्रेम करे दुःख व परेशानी में वह माँ के अंचल में ही अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है क्योंकि वह जानता है कि माँ उसके दुःख को सबसे अधिक महसूस कर सकती है |

प्र.2 आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है ?

उ. यह बच्चों की स्वभावगत विशेषता होती है कि वह अपने साथियों के साथ ही खेलना पसंद करते हैं भोलानाथ भी अपने साथियों के साथ मिलकर तरह-तरह के खेल खेला करता था | उनके साथ तरह-तरह की शरारतें भी किया करता था इसलिए वह उन्हें देखकर सिसकना भूल जाता है |

प्र.3 भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न हैं ?

उ. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री हमारे खेल और खेलने की सामग्री से निम्नलिखित प्रकार से भिन्न हैं -

1.भोलानाथ और उसके साथियों के खेलने की सामग्री प्रकृति आधारित या स्वयं निर्मित होते थे जबकि आज खेल की सामग्री खरीदी जाती हैं |

2 .आज के समय में प्लास्टिक और इलेक्ट्रोनिक्स के खेल सामग्री का प्रचलन है |

3 .भोलानाथ और उसके साथी शादी -विवाह, खेती-बाड़ी, हाट-बाज़ार जैसे खेल खेला करते थे जबकि हम क्रिकेट ,बैडमिंटन, कबड्डी,शतरंज आदि आधुनिक खेल खेलते हैं |

4 .उस समय खेल सामूहिक रूप से मिलकर खेले जाते थे और खेल खेलने की स्वच्छंदता थी लेकिन अब सुरक्षित माहौल न होने के कारण इसकी समय -सीमा भी तय की जाती है |

प्र.4 माता का आँचल पाठ में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है | आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं ?

उ.आज की ग्रामीण संस्कृति में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाई देते हैं :-

1 .सूर्योदय से पूर्व उठकर नहा-धोकर पूजा-पाठ करना व रामायण पढ़ना आज के समय में यह चलन कम ही दिखाई देता है |

2 .भोलानाथ और उसके साथियों के द्वारा खेले जाने वाले खेलों के स्थान पर अब बच्चे टेलीविजन और मोबाइल फोन को अपने मनोरंजन का साधन बना बैठे हैं|

3 .पहले भोजन में गोरस की प्रधानता थी लेकिन अब उसके स्थान पर फ़ास्ट फ़ूड का चलन बढ़ गया है |

4 .खेलों में शामिल लोकगीत आदि अब समाप्त हो चुके हैं |

प्र.5 पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों ?

उ. इस पाठ में ऐसे निम्न प्रसंग हैं जो हमारे दिल को छू जाते हैं -

1 .माँ द्वारा भोलानाथ को चिड़ियों के बनावटी नाम से कौर बनाकर खिलाना |

2 .माँ के द्वारा भोलानाथ के सिर में चुल्लू भर कड़वा तेल डाल देना,नाभि और माथे पर काजल की बिंदी लगाना,चोटी गूंथकर कन्हैया के जैसा बनाना |

3 .बच्चों के खेल के बीच भोलानाथ के पिताजी का आ जाना और उनका शर्मा कर खेल छोड़कर भाग जाना|

4 .चूहे के बिल से सांप का निकलना और भोलानाथ का डरकर अपनी माँ के आंचल में छिप कर रोना |

प्र.6 'माता का अंचल'शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए |

उ. पाठ के अंत के प्रसंग में भोलानाथ अपने पिता से ज्यादा लगाव रखते हुए भी विपदा के समय पिता की अपेक्षा अपनी माँ के पास अपने आप को अधिक सुरक्षित महसूस करता है |अपने पिता के द्वारा बुलाए जाने पर भी वह उनके पास नहीं जाता है | इसके अनुसार यह शीर्षक उपयुक्त है |
इसके लिए अन्य शीर्षक हो सकते हैं -' माँ का वात्सल्य' आदि |

प्र.7 बच्चे अपने माता -पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं ?

उ. बच्चे अपने माता- पिता के प्रति अपने प्रेम को निम्न प्रकार से अभिव्यक्त करते हैं-

1 .उनकी सिखाई हुई बातों को मानकर |

2 .उनसे अपने मनपसंद की चीजों को खरीदने की जिद करके |

3 .उनके साथ खेल खेलकर |

4 .उनकी गोद या कंधे पर बैठकर |

5 .उनसे रूठकर |

6.अपने नन्हे-नन्हे हाथों से उन्हें खाना खिलाकर |

प्र.8 इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है ?
उ. इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया दर्शाई गई है वह हमारे बचपन से बिलकुल भिन्न है | भोलानाथ और उसके साथियों का विविध प्रकार के खेल खेलना,तरह-तरह की शरारतें करना, हम इन सबसे वंचित रहे हैं| समय के साथ बदलते माहौल ने हमारा बचपन घर तक ही सीमित कर दिया है | अपने कार्य में अत्यधिक व्यस्त रहने के पिताजी हमारे खेल में शामिल नहीं हुआ करते हैं | खेल से ज्यादा हमें पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित करना होता है| विद्यालय से घर पहुंचते ही ट्यूशन की तैयारी शुरू हो जाती है |

लघु उत्तरीय प्रश्न

आलोचनात्मक सोच और योग्यता आधारित प्रश्न

प्र.1 लेखक के पिता का बच्चों के साथ खेल में शामिल होना क्या दर्शाता है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए |

उ. लेखक और उसके साथी मिलकर कई सारे खेल खेला करते थे ;जैसे- हलवाई का खेल , हाट-बजार,घरोंदा बनाना, ज्योनार, शादी का खेल और खेती करना आदि | लेखक के पिता उनके द्वारा खेले जाने वाले सभी खेलों को देखते और जब खेल ख़त्म होने वाला होता तब जाकर उनके खेल में शामिल हो जाते| उनका इस तरह से हर खेल में सम्मिलित होना यह दर्शाता है कि वे अपने पुत्र से अथाह स्नेह किया करते थे तथा उनसे भावनात्मक रूप से जुड़े हुए थे |

प्र.2 आधुनिक जीवन शैली में हम भोलानाथ के समान प्रकृति का आनंद नहीं उठा पा रहे हैं | वर्तमान में आप किन उपायों द्वारा प्राकृतिक आनंद प्राप्त कर सकते हैं ?

उ. आधुनिक जीवन शैली में हम भोलानाथ के समान प्रकृति का आनंद नहीं उठा पा रहे हैं क्योंकि हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं | भोलानाथ का जीवन प्रकृति के अत्यंत निकट था | उनके खेल की सामग्री भी प्रकृति आधारित थी |

वर्तमान में यदि हम प्राकृतिक आनंद प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें प्रकृति के दोहन को रोककर उसके संरक्षण पर बल देना होगा | पेड़- पौधे लगाने होंगे | इसके साथ ही हमें ग्राम्य जीवन के सम्पर्क में भी रहना चाहिए क्योंकि ग्राम्य जीवन वास्तविक रूप से प्रकृति से ही जुड़ा हुआ होता है |

प्र.3 माता का अंचल पाठ के अनुसार भोलानाथ के पिता उसे पूजा-पाठ में शामिल करते,अपने साथ गंगा के तट पर ले जाते तथा लौटते हुए पेड़ की डाल पर झुलाते | उनका ऐसा करना किन-किन मानवीय मूल्यों को उभारने में सहायक है ?

उ. भोलानाथ के पिता उसे पूजा-पाठ में शामिल करते, अपने साथ गंगा के तट पर ले जाते तथा लौटते हुए पेड़ की डाली पर झुलाते| उनका ऐसा करना भोलानाथ में निम्नलिखित मानवीय मूल्यों को विकसित करेगी-

1 .पूजा-पाठ में शामिल होने से धार्मिक भावना विकसित होगी |

2 .मछलियों को आटे की गोलियाँ खिलाने से जीव-जंतुओं के प्रति दया की भावना का विकास होगा |

3 .नदियों के निकट जाने से उसे प्रदूषण मुक्त रखने की भावना का विकास होगा |

4 .पेड़ की डाली पर झुलाने से पेड़ों को संरक्षित रखने की भावना उत्पन्न होगी |

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1 लेखक बचपन में कौन से खेल खेलता था ?

उ. लेखक बचपन में हाट- बाज़ार का, भोज का , बारात का , खेती करने का आदि खेल खेलते थे |

प्र.2 लेखक के पिताजी उनके खेल का हिस्सा बन जाते थे| इससे क्या पता चलता है ?

उ. लेखक के पिताजी प्राय: उनके खेल का हिस्सा बन जाते थे इससे उनके बीच के मधुर संबंधों का पता चलता है |

प्र.3 सांप से भयभीत होकर लेखक किसके पास गए ?

उ. सांप से भयभीत होकर लेखक अपनी माँ के पास गए |

प्र.4.'माता का अंचल' पाठ में किसका चित्रण किया गया है ?

उ. इस पाठ में लेखक ने माता का स्नेह ,पिता का लाड़ -प्यार और तत्कालीन ग्राम्य जीवन का चित्रण किया है |

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1 लेखक का मूल नाम क्या था?

क. भोलानाथ ख. गोरखनाथ ग. तारकेश्वरनाथ घ. दीनानाथ

प्र.2 लेखक सबसे ज्यादा समय किसके साथ बिताया करते थे ?

क. माता के साथ ख. पिता के साथ ग. दादी के साथ घ. दादा के साथ

प्र.3 चिड़िया का झुण्ड किस खेत में चर रहा था ?

क. गेहूँ के खेत में ख. धान के खेत में ग. मकई के खेत में घ. बाजरे के खेत में

प्र.4 लेखक सांप से भयभीत होकर किसके पास गए ?

क.अध्यापक के पास ख. मित्रों के पास ग. माता के पास घ. पिता के पास

प्र.5 माता का अंचल पाठ में लेखक ने किसका चित्रण किया है ?

क. माता के प्रेम का ख. पिता के लाड़-प्यार का

ग. तत्कालीन ग्रामीण समाज की जीवन शैली का घ. उपर्युक्त सभी

उत्तर 1. तारकेश्वरनाथ उत्तर.2 पिता के साथ उत्तर.3 मकई के खेत में

उत्तर.4 माता के पास उत्तर.5 उपर्युक्त सभी

साना साना हाथ जोड़ि.....

पाठ के सार बिंदु

लेखिका मधु कांकरिया द्वारा लिखित एक यात्रा वृत्तांत है|

लेखिका अपनी सिक्किम की राजधानी गैंगटॉक और उसके आगे हिमालय की यात्रा का वर्णन किया है|

लेखिका गैंगटॉक को मेहनतकाश बादशाहों का शहर बताती हैं क्योंकि वहाँ के सभी लोग बड़े ही मेहनती हैं। वहाँ तारों से भरे आसमान में लेखिका को सम्मोहन महसूस होता है जिसमें वह खो जाती हैं।

अगले दिन मौसम अच्छा न होने के वजह लेखिका कंचनजंघा की चोटी नहीं देख सकी, लेकिन वह बहुत सारे फूल देखकर खुश हो जाती हैं। वह गैंगटॉक से 149 किलोमीटर दूर यूमथांग अपनी सहयात्री मणि और गाइड जितेन नार्गे के साथ जाती हैं। गैंगटॉक से यूमथांग को निकलते ही लेखिका को एक पंक्ति में लगी सफेद-सफेद बौद्ध पताकाएँ दिखाई देती हैं जो झंडे की तरह फहर रही थीं। ये शान्ति और अहिंसा की प्रतीक थीं और उन पताकाओं पर मंत्र लिखे हुए थे।

लेखिका के गाइड ने उन्हें बताया कि जब किसी बौद्ध मतावलम्बी की मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी भी पवित्र स्थान पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। इन्हें उतारा नहीं जाता है, ये खुद नष्ट हो जाती हैं। कई बार नए शुभ कार्य की शुरुआत में भी रंगीन पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। जितेन ने बताया कि कवी-लोंग स्टॉक नामक स्थान पर 'गाइड' फ़िल्म की शूटिंग हुई थी। लेखिका को एक कुटिया के भीतर घूमता हुआ चक्र दिखाई दिया जिसे धर्म चक्र या प्रेयर व्हील कहा जाता है। नार्गे ने बताया कि इसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।

लेखिका अपने सह यात्रियों के साथ सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल' पर जाती है। सभी लोग वहाँ की सुंदरता को कैमरे में कैद करने लग जाते हैं| झरने का पानी में लेखिका को ऐसा लग रहा था जैसे वह उनके अंदर की सारी बुराईयाँ और दुष्टता पानी के साथबह रही हो| रास्ते में प्राकृतिक दृश्य हरपल अपना रंग ऐसे बदल रहे थे जैसे कोई जादू हो रहा हो|

आगे जाने पर नीचे पूरे वेग से बह रही तिस्ता नदी थी, सामने कोहरा था, आसमान में बादल थे और धीरे-धीरे हवा चल रही थी, जो आस-पास के वातावरण में खिले फूलों की हँसी चारों ओर बिखेर रही थी। कुछ औरतों की पीठ पर बँधी टोकरियों में बच्चे थे। इतने सुंदर वातावरण में भूख, गरीबी और मौत के निर्मम दृश्य ने लेखिका को सहमा दिया। एक कर्मचारी ने बताया कि ये पहाडिनें पहाड़ी रास्ते को चौड़ा बना रही हैं। कई बार काम करते समय किसी-न-किसी व्यक्ति की मौत हो जाती है क्योंकि जब पहाड़ों को डायनामाइट से उड़ाया जाता है तो उनके टुकड़े इधर-उधर गिरते हैं। यदि उस समय सावधानी न बरती जाए, तो जानलेवा हादसा घट जाता है।

आगे चलने पर रास्ते में बहुत सारे पहाड़ी स्कूली बच्चे मिलते हैं। जितेन बताता है कि ये बच्चे तीन-साढ़े तीन किलोमीटर की पहाड़ी चढ़ाई चढ़कर स्कूल जाते हैं। ये बच्चे स्कूल से लौटकर अपनी माँ के साथ काम करते हैं। यहाँ का जीवन बहुत कठोर है।शाम के समय जीप चाय बागानों में से गुजर रही थी। बागानों में कुछ युवतियाँ सिक्किमी परिधान पहने चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थीं।

यूमथांग पहुंचने से पहले सभी लायुंग रुके। लायुंग में अधिकतर लोगों की जीविका का साधन पहाड़ी आलू, धान की खेती और शराब था। लेखिका को वहाँ बर्फ़ देखने की इच्छा थी परंतु वहाँ बर्फ कहीं भी नहीं थी|एक स्थानीय युवक के अनुसार प्रदूषण के कारण यहाँ स्नोफॉल कम हो गया था। 'कटाओ' में बर्फ़ देखने को मिल सकती है।

'कटाओ' को भारत का स्विट्जरलैंड कहा जाता है। मणि जिसने स्विट्ज़रलैंड घुमा था ने कहा कि यह स्विट्जरलैंड से भी सुंदर है। कटाओ को अभी तक टूरिस्ट स्पॉट नहीं बनाया गया था, इसलिए यह अब तक अपने प्राकृतिक स्वरूप में था। चारों ओर बर्फ से भरे पहाड़ थे। कटाओ पहुँचने पर हल्की -हल्की बर्फ पड़ने लगी थी। सभी सहयात्री वहाँ के वातावरण में फोटो खिंचवा रहे थे। लेखिका वहाँ के वातावरण को अपनी साँसों में समा लेना चाहती थी। वे कहती हैं कि - प्रकृति अपने ढंग से सर्दियों में हमारे लिए

पानी इकट्ठा करती है और गर्मियों में ये बर्फ पिघलकर जल बनकर हम लोगों की प्यास को शांत करती हैं। प्रकृति का यह जल संचय अद्भुत है। थोड़ा आगे जाने पर फ़ौजी छावनियाँ दिखाई दी चूँकि यह बॉर्डर एरिया था और थोड़ी ही दूर पर चीन की सीमा थी।

कटाओं से यूमथांग की ओर जाते हुए प्रियुता और रूडोडेंड्रो ने फूलों की घाटी को भी देखा। यूमथांग कटाओ जैसा सुंदर नहीं था। यूमथांग वापस आकर उन लोगों को वहाँ सब फीका-फीका लग रहा था। पहले सिक्किम स्वतंत्र राज्य था। अब वह भारत का एक हिस्सा बन गया है। इससे वहाँ के लोग बहुत खुश हैं। मणि ने बताया कि पहाड़ी कुत्ते केवल चाँदनी रातों में भौंकते हैं। यह सुनकर लेखिका हैरान रह गई। उसे लगा कि पहाड़ी कुत्तों पर भी ज्वारभाटे की तरह पूर्णिमा की चाँदनी का प्रभाव पड़ता है। गुरुनानक के पदचिह्नों वाला एक ऐसा पत्थर दिखाया, जहाँ कभी उनकी थाली से चावल छिटककर बाहर गिर गए थे। खेदुम नाम का एक किलोमीटर का ऐसा क्षेत्र भी दिखाया, जहाँ देवी-देवताओं का निवास माना जाता है।

नार्गे ने पहाड़ियों के पहाड़ों, नदियों, झरनों और वादियों के प्रति पूज्य भाव की भी जानकारी दी। भारतीय आर्मी के कप्तान शेखर दत्ता के सुझाव पर गैंगटॉक के पर्यटक स्थल बनने और नए रास्तों के साथ नए स्थानों को खोजने के प्रयासों के बारे में भी बताया|

प्रश्न उत्तर

1) वर्तमान में मानव प्रकृति के साथ किस प्रकार का दुर्व्यवहार कर रहा है? इसे आप किस प्रकार रोक सकते है?

उत्तर - वर्तमान में मानव प्रकृति के साथ निम्न प्रकार का दुर्व्यवहार कर रहा है

मानव पहाड़ों पर प्रकृति की शोभा को नष्ट कर रहा है। वह वृक्षों को काटकर भूमि को को नुकसान पहुँचा रहा है। शुद्ध, पवित्र नदियों को विविध प्रकार से प्रदूषित करने कर रहा है। नगरों का, फैक्टरियों का गंदा पानी पवित्र नदियों में छोड़ रहा है। सुख-सुविधा के नाम पर पॉलिथिन का अधिक प्रयोग और वाहनों के द्वारा प्रतिदिन छोडे जा रहे धुए से पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ रहा है। इस तरह प्रकृति का गुस्सा बढ़ रहा है, मौसम में परिवर्तन आ रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं।

हम इसे निम्न प्रकार रोक सकते है

1) वर्तमान में खड़े वृक्षों को न काटें और न काटने दें।

2) यथासंभव वृक्षारोपण करें और दूसरों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।

3)वाहनों का प्रयोग यथासंभव कम करें। सब्जी लाने और व्यर्थ सड़कों पर घूमने | में वाहनों का उपयोग न करें।

4)पॉलीथिन, अवशिष्ट पदार्थों तथा नालियों के गंदे पानी को नदियों में न जाने

2) गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा है?

उत्तर - मेहनतकश का अर्थ है कड़ी मेहनत करने वाले । लेखिका कहना चाहती है कि गांतोक के लोगों को अत्यंत कड़ी मेहनत करनी पड़ती है क्योंकि यह पहाड़ी क्षेत्र है। पहाड़ी स्थान होने के कारण यहाँ की परिस्थितियाँ भी अत्यांत कठिन है। उन्हें पहाड़ों को काटकर रास्ता बनाना पड़ता है। पत्थरों पर बैठकर औरतें कुदाल व हथौड़े से पत्थर तोड़ती हैं । लेखिका ने देखा कि कुछ औरतें की पीठ पर बंधी टोकरी में उनके बच्चे भी बंधे हैं । यहाँ के लोग अत्यंत कठिन परिस्थितियों में जीवन जीते हैं। वे चुनोतियों से डरते नहीं हैं ,इसलिए गांतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा गया है।

3) कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

उत्तर: श्वेत पताकाएं किसी बुद्धिस्ट के निधन पर फहरायी जाती हैं। ये मंत्र लिखी 108 पताकाएं फहरायी जाती हैं और इन्हें उतारा नहीं जाता। ये अपने आप नष्ट हो जाती हैं।

रंगीन पताकाएं किसी विशेष अवसर या शुभ कार्य पर फहरायी जाती हैं।

4) साना साना हाथ जोड़ी पाठ में लेखिका को कब और क्यों लगा की तमाम भौगोलिक विविधता और वैज्ञानिकप्रगति के बात भी भारत की आत्मा एकजैसी है?   (बोर्ड परीक्षा   2024)

उत्तर: लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो जितेन नार्गे ने बताया कि यह 'धर्म-चक्र' है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। जितेन की यह बात सुनकर लेखिका ने मन में सोचा कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है क्योंकि मैदानी क्षेत्रों में गंगा के विषय में भी ऐसी ही धारणा लोगों के मन में रहती है। इतनी ज्यादा तकनीकी आधुनिकता आ जाने के बावजूद भी समाज के लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, मान्यताएं और पाप-पुण्य की अवधारणाएँ एक समान हैं।

5) 'कटाओ' पर किसी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। इस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए।

उत्तर:- 'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है क्योंकि अभी यह पर्यटक स्थल नहीं बना। यदि कोई दुकान होती तो वहाँ सैलानियों का अधिक आगमन शुरू हो जाएगा। और वे जमा होकर खाते-पीते, गंदगी फैलाते, इससे गंदगी तथा वहाँ पर वाहनों के अधिक प्रयोग से वायु में प्रदूषण बढ़ जाएगा। लेखिका को केवल यही स्थान मिला जहाँ पर वह स्नोफॉल देख पाई। इसका कारण यही था कि वहाँ प्रदूषण नहीं था। अतः 'कटाओ 'पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए एक प्रकार से वरदान ही है।

6). प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है ?

उत्तर:- प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था नायाब ढंग से की है। प्रकृति सर्दियों में बर्फ के रूप में जल संग्रह कर लेती है और गर्मियों में पानी के लिए जब त्राहि-त्राहि मचती है, तो उस समय यही बर्फ शिलाएँ पिघलकर जलधारा बन के नदियों को भर देती है। नदियों के रूप में बहती यह जलधारा अपने किनारे बसे नगर तथा गावों में जल-संसाधन के रूप में तथा नहरों के द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में सिंचाई करती हैं और अंत में सागर में जाकर मिल जाती हैं। सागर से फिर से वाष्प के रूप में जल-चक्र की शुरुआत होती है। सचमुच प्रकृति ने जल संचय की कितनी अद्भुत व्यवस्था की है।

7) सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है, उल्लेख करें।

उत्तर:- सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव कराने में सबसे बड़ा हाथ एक कुशल गाइड का होता है। जो अपनी जानकारी व अनुभव से सैलानियों को प्रकृति व स्थान के दर्शन कराता है। कुशल गाइड इस बात का ध्यान रखता है कि भ्रमणकर्ता की रूचि पूरी यात्रा में बनी रहे ताकि भ्रमणकर्ता के भ्रमण करने का प्रयोजन सफल हो। अपने मित्रों व सहयात्रियों का साथ पाकर यात्रा और भी रोमांचकारी व आनन्दमयी बन जाती है। वहाँ के स्थानीय निवासियों व जन जीवन का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। उनके द्वारा ही इस छटा के सौंदर्य को बल मिलता है क्योंकि यदि ये ना हों तो वो स्थान नीरस व बेजान लगने लगते हैं। तथा सरकारी लोग जो व्यवस्था में संलग्न होते उनका महत्त्वपूर्ण योगदान होता हैं।

8) देश की सीमा पर तैनात सैनिकों के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है?

उत्तर:- सैनिक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ईमानदारी, समर्पण तथा अनुशासन से करते है। सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा के लिए तैयार रहते है। हमारे सैनिकों (फौजी) भाईयों को उन बर्फ से भरी ठंड में ठिठुरना पड़ता है। जहाँ पर तापमान शून्य से भी नीचे गिर जाता है। वहाँ नसों में खून को जमा देने वाली ठंड होती है। वह वहाँ सीमा की रक्षा के लिए तैनात रहते हैं और हम आराम से अपने घरों पर बैठे रहते हैं। ये जवान हर पल कठिनाइयों से जूझते हैं और अपनी जान हथेली पर रखकर जीते हैं। हमें सदा उनकी सलामती की दुआ करनी चाहिए। उनके परिवारवालों के साथ हमेशा सहानुभूति, प्यार व सम्मान के साथ पेश आना चाहिए|

9) प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कमी का जिक्र किया गया है। प्रदूषण के और कौन-कौन से दुष्परिणाम सामने आये हैं, लिखें।

उत्तर:- आज की पीढ़ी के द्वारा प्रकृति को प्रदूषित किया जा रहा है। प्रदूषण का मौसम पर असर साफ दिखाई देने लगा है। प्रदूषण के चलते जलवायु पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। कहीं पर बारिश अतिरिक्त हो जाती है तो किसी स्थान पर अप्रत्याशित रूप से सूखा पड़ रहा है। गर्मी के मौसम में गर्मी की अधिकता देखते बनती है। कई बार तो पारा अपने सारे रिकार्ड को तोड़ चुका होता है। सर्दियों के समय में या तो कम सर्दी पड़ती है या कभी सर्दी का पता ही नहीं चलता। ये सब प्रदूषण के कारण ही सम्भव हो रहा है।

प्रदूषण के कारण वायुमण्डल में कार्बनडाइआक्साइड की अधिकता बढ़ गई है जिसके कारण वायु प्रदूषित होती जा रही है। इससे साँस की अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न होने लगी है। प्रदूषण के कारण पहाड़ी स्थानों का तापमान बढ़ गया है, जिससे स्नोफॉल कम हो गया। ध्वनि प्रदूषण से शांति भंग होती है। ध्वनि-प्रदूषण मानसिक अस्थिरता, बहरेपन तथा अनिंद्रा जैसे रोगों का कारण बन रहा है। जलप्रदूषण के कारण स्वच्छ जल पीने को नहीं मिल पा रहा है और पेट सम्बन्धी अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

10) झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका को किस तरह सम्मोहित कर रहा था?

उत्तर:- रात्रि के समय आसमान ऐसा लग रहा था मानो सारे तारे बिखरकर नीचे टिमटिमा रहे थे। दूर ढलान लेती तराई पर सितारों के समूह रोशनियों की एक झालर-सी बना रहे थे।रात के अन्धकार में सितारों से झिलमिलाता गंतोक लेखिका को जादुई एहसास करा रहा था। उसे यह जादू ऐसा सम्मोहित कर रहा था कि मानो सब कुछ अर्थहीन सा था। उसकी चेतना शून्यता को प्राप्त कर रही थी। वह सुख की अतींद्रियता में डूबी हुई उस जादुई उजाले में नहा रही थी जो उसे आत्मिक सुख प्रदान कर रही थी।

छात्रों के अभ्यास हेतु प्रश्न

1) साना साना हाथ जोड़ीपाठ के आधार पर लिखिए कीप्राकृतिक जल संचय की व्यवस्था को कैसे सुधारा जा सकता है?इस दिशा में सरकार द्वारा उठाए गए कदमों पर टिप्पणी लिखिए |

....

....

....

....

....

2) प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसे अनुभूति हुई?

....

....

....

....

. 3) साना साना हाथ जोड़ी पाठ मेंप्रदूषण के कारण स्नोफॉल की कमी का जिक्र किया गया है, प्रदूषण के कारण और कौन-कौन से दुष्परिणाम सामने आए हैं? हमें इसकी रोकथाम के लिए क्या करना चाहिए?

....

....

....

....

'मैं क्यों लिखता हूँ'

पाठ का सार

'मैं क्यों लिखता हूँ' निबंध के माध्यम से लेखक अज्ञेय जी ने लेखन के कारणों को अभिव्यक्त किया है। लेखक कहते हैं कि लेखन कार्य जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ा हुआ होता है और सभी पहलुओं को उजागर करना संभव नहीं होता है। 'मैं क्यों लिखता हूँ' यह प्रश्न जितना सरल लगता है उतना ही कठिन है। लेखक स्वयं भी इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहता है। लेखक के अनुसार लेखन के अनेक कारण हो सकते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं -

- लेखक की भीतरी विवशता लिखने की प्रेरणा का स्रोत हो सकती है।
- संपादकों का आग्रह या निवेदन भी लिखने का कारण हो सकता है।
- लेखक की आर्थिक आवश्यकता भी उसे ऐसा करने के लिए विवश कर सकती है।
- लेखक की अनुभूति भी लिखने का कारण हो सकती है।
- लेखक स्वयं भी इस बात का उत्तर जानना चाहता है कि वह क्यों लिखता है और उसे लगता है कि बिना लिखे इस बात का उत्तर ढूंढना बड़ा मुश्किल है।

लेखक मानते हैं कि इन सब कारणों से लिखा गया लेखन ही वास्तव में लेखन है तथा केवल प्रसिद्धि पाने और पैसा कमाने के लिए लिखा गया लेखन सामान्य लेखन है।

पाठ पर आधारित वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के लेखक कौन हैं?

क) अज्ञेय ख) शिवपूजन सहाय ग) कमलेश्वर घ) मधु कांकरिया

उत्तर अ) अज्ञेय

2. 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के लेखक के अनुसार कोई लेखक लिखता क्यों है?

क) शौक के लिए ख) दिखावे के लिए ग) प्रसिद्धि के लिए घ) आंतरिक विवशता के कारणवश

उत्तर घ) आंतरिक विवशता के कारणवश

3. लेखक किस विषय का छात्र का था?

क) अंग्रेजी का ख) संस्कृत का ग)मानविकी का घ) विज्ञान का

उत्तर घ) विज्ञान का

4. कोई भी लेखक लिखने के पश्चात् क्या अनुभव करता है?

क) बंधन ख) मुक्ति ग) निराशा घ) भय

उत्तर ख) मुक्ति

5. हिरोशिमा शहर किस देश में स्थित है?

क) फ्रांस ख) जापान ग) जर्मनी घ) भारत

उत्तर- ख) जापान

6. जापान में क्या देखकर लेखक की अनुभूति को बल मिला था?

क) जापान की सड़कों को ख) जापान की घटना के वर्णन को

ग) जापान के लोगों को घ) पत्थर पर बनी छाया को

उत्तर- ग) पत्थर पर बनी छाया को

7.लेखक अपने भीतर की विवशता को कैसे पहचानता है?

क) लिखकर ख) पढ़कर ग) सीखकर घ) बोलकर

उत्तर- क) लिखकर

8. लेखक के अनुसार अनुभव और अनुभूति में क्या अंतर है ?

अ) अनुभव आवश्यक है, अनुभूति नहीं ख) दोनों में कोई समानता नहीं है

ग) अनुभव से अनुभूति गहरी चीज़ है घ) अनुभव अनुभूति से गहरा होता है

उत्तर- ग) अनुभव से अनुभूति गहरी चीज़ है

9. प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा कौन लेखन में मदद करता है ?

क) चित्रण ख) अनुभूति ग) मेहनत घ) जानकरियाँ

उत्तर- ग) अनुभूति

10. लेखकों के सामने कौन-विवशता रहती है ?

क) आर्थिक आवश्यकता ख) प्रकाशक के तगाजे ग) संपादकों का आग्रह घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर- घ) उपर्युक्त सभी

पाठ पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1- लेखक क्यों लिखता है?

उत्तर- लेखक को लगता है कि लिखकर ही वह अपने मन की स्थिति तथा विवशता को जान पाता है। अपनी मनःस्थिति को व्यक्त करने एवं विवशता से मुक्त होने का आसान रास्ता भी लिखना ही है।

प्रश्न 2- सभी लेखक कृतिकार क्यों नहीं होते?

उत्तर- सभी लेखक कृतिकार नहीं हो सकते। केवल अपनी भावनाओं को प्रकट करने से ही कोई अभिव्यक्ति कृति नहीं हो जाती। कृतिकार द्वारा सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने पर ही अभिव्यक्ति अथवा रचना कृति बन पाती है।

प्रश्न 3- अनुभूति के स्तर की विवशता की क्या विशेषता होती है?

उत्तर- अनुभूति के स्तर की विवशता तार्किकता पर निर्भर होती है। अनुभव तो घटित होता रहता है और अनुभूति, संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य से जुड़कर आत्मसात् कर लेती है। अनुभूति ही लेखक को लिखने के लिए प्रेरित भी करती है।

प्रश्न 4- अनुभूति को लेखक ने गहरा क्यों कहा है?

उत्तर- लेखक का मानना है कि अनुभव तो एक घटना है और अनुभूति मन के भीतर से उठने वाले विचार हैं। जो समाज के दायित्वों के निर्वहन में सहायक होते हैं।

प्रश्न 5- लेखक ने आलसी जीव किसे कहा है और क्यों?

उत्तर- लेखक ने उन लेखकों को आलसी जीव कहा है जो बाहरी दबाव के बिना नहीं लिख पाते। ऐसे लोग कुछ लिखना तो चाहते हैं लेकिन तब तक नहीं लिख पाते जब तक कि बाहर का कोई उन पर लिखने के लिए दबाव न डाले। जैसे आँख खुलने पर कोई-कोई अलार्म बजने की प्रतीक्षा में लेटा ही रहता है।

प्रश्न 6- लेखक ने हिरोशिमा कविता कब और कहाँ लिखी?

उत्तर- लेखन ने हिरोशिमा कविता उस समय लिखी जब उसके भीतर की आकुलता संवेदना में बदल गई। लेखक ने यह कविता भारत आने पर लिखी।

पाठ पर आधारित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

उत्तर-यद्यपि लेखक हिरोशिमा के बम विस्फोट के परिणामों के बारे में अखबारों में पढ़ चुका था। जापान जाकर उसने हिरोशिमा के अस्पतालों में प्रभावित लोगों को भी देखा था। अणु-बम के प्रभाव को प्रत्यक्ष देखा था, और देखकर भी अनुभूति न हुई इसलिए भोक्ता नहीं बन सका। फिर एक दिन वहीं सड़क पर घूमते हुए एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया देखी। उसे देखकर लेखक सोचने लगा कि विस्फोट के समय कोई वहाँ खड़ा रहा होगा और विस्फोट से बिखरे हुए रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणें उसमें

रुद्ध हो गई होंगी और जो आसपास से आगे बढ़ गईं पत्थर को झुलसा दिया, अवरुद्ध किरणों ने आदमी को भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। इस प्रकार समूची ट्रेजडी जैसे पत्थर पर लिखी गई है। इस प्रकार लेखक हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया।

2. हिरोशिमा के बम विस्फोट में हुई क्षति को देखकर लेखक को कौन-सी घटना याद आई?
उत्तर- हिरोशिमा में अणुबम विस्फोट से निकली रेडियोधर्मी तरंगों ने क्षणभर में ही असंख्य लोगों को काल का ग्रास बना दिया। लेखक ने उस विस्फोट का दुख भोगते हुए लोगों को देखा। यह देखकर भारत की पूर्वी सीमा की घटना याद आ गई कि कैसे सैनिक ब्रह्मपुत्र नदी में बम फेंककर हजारों मछलियाँ मार देते थे जबकि उनका काम थोड़ी-सी मछलियों से चल सकता था। इससे जीवों का व्यर्थ ही विनाश हुआ था।

3. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ किस तरह से हो रहा है?
उत्तर- आजकल विज्ञान का दुरुपयोग अनेक जानलेवा कामों के लिए किया जा रहा है। आज आतंकवादी संसार-भर में मनचाहे विस्फोट कर रहे हैं। कहीं अमरीकी टावरों को गिराया जा रहा है। कहीं मुंबई बम-विस्फोट किए जा रहे हैं। कहीं गाड़ियों में आग लगाई जा रही है। कहीं शक्तिशाली देश दूसरे देशों को दबाने के लिए उन पर आक्रमण कर रहे हैं। जैसे, अमरीका ने इराक पर आक्रमण किया तथा वहाँ के जनजीवन को तहस-नहस कर डाला।
विज्ञान के दुरुपयोग से चिकित्सक बच्चों का गर्भ में भ्रूण-परीक्षण कर रहे हैं। इससे जनसंख्या का संतुलन बिगड़ रहा है। विज्ञान के दुरुपयोग से किसान कीटनाशक और जहरीले रसायन छिड़ककर अपनी फसलों को बढ़ा रहे हैं। इससे लोगों को स्वास्थ्य खराब हो रहा है। विज्ञान के उपकरणों के कारण ही वातावरण में गर्मी बढ़ रही है, प्रदूषण बढ़ रहा है, बर्फ पिघलने को खतरा बढ़ रहा है तथा रोज-रोज भयंकर दुर्घटनाएँ हो रही हैं।
पाठ पर आधारित अतिरिक्त प्रश्न
1. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?
2. क्या बिना किसी दबाव के भी कोई कार्य किया जा सकता है?
3. समकालीन परिस्थितियों में विज्ञान का सर्वोतम दुरूपयोग और सदुपयोग क्या हो सकता है?

ई-मेल लेखन

ई-मेल क्या है ?
ई-मेल का मतलब होता है इलेक्ट्रॉनिक मेल। इंटरनेट के माध्यम से, हम कुछ ही मिनटों में जानकारी दे सकते हैं। आज की दुनिया में, ई-मेल संचार का सबसे सामान्य रूप है। आज शायद ही कोई कंप्यूटर यूजर होगा, जो ई-मेल का उपयोग न करता हो। ई-मेल लेखन हमें तुरंत समाधान पाने में मदद करता है। ई-मेल लेखन में इलेक्ट्रॉनिक संचार प्रणाली पर संदेश लिखना, भेजना, संग्रह करना और प्राप्त करना शामिल है।
ई-मेल के प्रकार - Types of Email
ई-मेल तीन प्रकार की होती है :
Semi-Formal email (अर्द्ध औपचारिक ई-मेल)
Formal email (औपचारिक ईमेल)
Informal email (अनौपचारिक ईमेल)

(1) Semi - Formal Email (अर्द्ध औपचारिक ई-मेल) : किसी सहपाठी या साथ में काम करने वाले, के लिए किसी विषय के अंतर्गत लिखा गया ई-मेल इस श्रेणी में आता है। उपयोग की जाने वाली भाषा सरल, मित्रवत और आकर्षण वाली होती है। शील और मर्यादा को बनाए रखना होता है।

(2) Formal Email (औपचारिक ई-मेल) : मान लीजिए कि हम किसी भी प्रकार के व्यापारिक वार्तालाप के लिए एक ई-मेल लिख रहे हैं या रचना कर रहे हैं। यह औपचारिक ई-मेल की श्रेणी में आएगा। औपचारिक ई-मेल लेखन कंपनियों, सरकारी विभागों, स्कूल प्राधिकरणों या किसी अन्य अधिकारियों को लिखा गया ई-मेल होगा।

(3) Informal Email (अनौपचारिक ई-मेल) : किसी भी रिश्तेदार , परिवार या दोस्तों को एक अनौपचारिक ई- मेल लिखा जाता है। अनौपचारिक ई-मेल लेखन के लिए कोई विशेष नियम नही हैं। एक व्यक्ति अपनी पसंद की किसी भी भाषा का उपयोग कर सकता है।

औपचारिक ई-मेल लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए

ई-मेल का विषय स्पष्ट होना चाहिए : - ई-मेल को लिखते समय उसका विषय स्पष्ट रखा जाना चाहिए क्योंकि जिस कार्य के लिए आप ई-मेल लिख रहे हैं या जो मेल में लिखा हुआ है , उसके बारे में विषय में ही पता लग जाए अथवा ई-मेल किस बारे में है , इसकी जानकारी विषय से ही हो जानी चाहिए। आपकी ई-मेल का विषय आकर्षक होगा तो मेल प्राप्त करने वाले व्यक्ति को आपके काम की गंभीरता के बारे में पता चलेगा।

ई-मेल लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है

(i) सबसे पहले मेल को लॉग-इन करते हैं,तो एक नया पेज़ खुलता है। उसमें कम्पोज़ (+) बाईं ओर ऊपर दिखाई देता है।

(ii) कम्पोज़ (+) पर क्लिक करने पर एक नया पेज़ दाईं तरफ खुलता है।

(iii) दाएँ पेज़ पर सबसे ऊपर फ्रॉम (from), फिर to उसके नीचे subject, उसके नीचे सन्देश लिखने का स्थान रहता है।

(iv) एक से अधिक लोगों को मेल भेजने के लिए अल्पविराम (,) देकर उसकी आई.डी. टाइप करके भेज सकते हैं।

(v) सब्जेक्ट में ई-मेल का विषय संक्षेप में लिखते हैं।

(vi) cc का अर्थ है कार्बन कॉपी। आप जितने लोगों को ई-मेल भेजोगे, उनको जब ई-मेल प्राप्त होगा, तब उनमें से किस-किस को वह मेल भेजा गया है उसकी सूची दिखाई देगी।

(vii) Bcc का अर्थ है ब्लाइंड कार्बन कॉपी। इसमें आप एक से अधिक लोगो को मेल भेज सकते हो, किन्तु Bcc किसे भेजी गई, उनकी लिस्ट नहीं दिखाई देगी।

(viii) मेल सेंड होने पर भेजने वाले को मैसेज सक्सेसफुली सेंड दिखाई देगा।

(ix) अगर आपको मैसज, पीडीऍफ़ फाइल, पावरपॉइंट एवं वीडियो को भेजना है तो उसके लिए अटेचमेंट फाइल पर क्लिक करके भेज सकते हैं।

ई-मेल लेखन का प्रारूप - Email Lekhan Format

प्रेषक (From) : मेल भेजने वाले का ई-मेल पता।

प्रेषिती (To) : मेल प्राप्त करने वाले का ई-मेल पता।

CC: कार्बन कॉपी

BCC: Blind Carbon Copy

विषय: यहाँ ई-मेल का विषय संक्षेप में लिखते हैं।

अभिवादन: जिसे ई-मेल लिखा जा रहा है उसके आदर स्वरूप शब्द लिखा जाता है। जैसे प्रिय, महोदय आदि।

मुख्य विषय वस्तु: विषय से संबंधित विस्तार से विषय लिखा जाता है।

समापन: कथन समाप्त करना

अटैचमेंट ज्वाइन करें : पीडीएफ, इमेज जैसी फाइल अटैच करना
हस्ताक्षर : प्रेषक का नाम, संकेत, आदि

अनौपचारिक ई-मेल

(1) अपने मित्र को अपनी जन्मदिन की पार्टी के लिए निमंत्रण देने हेतु लगभग 100 शब्दों में ई-मेल लिखिए।

प्रेषक (From) : xyz@abc.com
प्रेषिती (To) : def@gmail.com
CC : आवश्यकता अनुसार
BCC : आवश्यकता अनुसार
विषय : पार्टी का निमंत्रण
अभिवादन : प्रिय राकेश

मुख्य विषय वस्तु : मुझे लगता है कि आपको मेरा जन्मदिन याद होगा। इसलिए मुझे आपको यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि 10 जुलाई की तारीख स्टार हॉल में जन्मदिन की पार्टी है। जिसका समय रात में 10 से 12 बजे तक है।

समापन : आपको इस बर्थडे पार्टी में जरूर आना है।
अटैचमेंट ज्वाइन करें : आवश्यकतानुसार
हस्ताक्षर : मुकेश

औपचारिक ई मेल

1.**आपके शहर में सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों में मिलावट का धंधा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। अपने राज्य के खाद्य-मंत्री को dfpd@gov.in पर एक ईमेल लिखकर इस समस्या के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।**

प्रेषक(From): pawan@gmail.com
प्रेषिती(To): dfpd@gov.in
CC ...
BCC ...
विषय - खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या के सन्दर्भ में
महोदय,
आप भली-भांति जानते है कि त्योहारों का मौसम आ पहुँचा है जिसमें खाद्य पदार्थों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस समय बाजार में खाद्य पदार्थों की माँग बहुत बढ़ जाती है और उनकी पूर्ति करने के लिए मिलावट करने वालों का धंधा भी ज़ोर पकड़ने लगता है जिससे ग्राहक बहुत परेशान होते हैं। आप सम्बन्धित विभागीय कर्मचारियों को सचेत करें जिससे वे जगह-जगह छापामार कार्यवाही हो और दोषी लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए ताकि जनजीवन विभिन्न बीमारियों से सुरक्षित हो सके।
धन्यवाद्
पवन

2 .छात्रों के लिए अधिक खेल-सामग्री उपलब्ध कराने का अनुरोध करते हुए अपने प्रधानाचार्य महोदय को xyzschool@gmail.com पर एक ईमेल लिखिए।

प्रेषक(From): mohan@gmail.com
प्रेषिती(To): xyzschool@gmail.com
CC ...
BCC ...

विषय - अधिक खेल सामग्री उपलब्ध कराने का अनुरोध
महोदय,
जैसा कि आपको विदित है कि आगामी मास में जिले स्तर पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन होने वाला है जिसमें हमारा विद्यालय भी भाग ले रहा है। हालांकि उपलब्ध साधनों से हमने अभ्यास किया है किन्तु वह पर्याप्त नहीं है। यह अनुरोध हम आपसे कर रहे हैं कि कृपया खिलाड़ियों की खेल सुविधाओं एवं सामग्री में कोई कमी न की जाए तथा खेल गतिविधियों हेतु अधिक फंड निधि की व्यवस्था की जाए ताकि आने वाली प्रतियोगिता में हम बेहतर प्रदर्शन कर सकें और विद्यालय का नाम रौशन कर सकें।
आशा है आप हम खिलाड़ियों के इस अनुरोध को स्वीकार करने की कृपा करेंगे।
मोहन

स्ववृत लेखन

स्ववृत लेखन क्या है? (What is Biodata)

स्ववृत को किसी व्यक्ति और उसके करियर, काम और जीवन की उपलब्धियों के बारे में बुनियादी जानकारी के संग्रह के रूप में परिभाषित किया जाता है।

कई साक्षात्कार/भर्ती स्थितियों में, उम्मीदवारों को अपना परिचय देना होगा, अपना काम बताना होगा और यह बताना होगा कि वे नौकरी के लिए उपयुक्त क्यों हैं।

बायोडेटा उस प्रक्रिया का पहला चरण है, और यह आपके नौकरी आवेदन के साक्षात्कारकर्ताओं और संभावित नियोक्ताओं पर पड़ने वाले प्रभाव में बहुत बड़ी भूमिका निभाता है।

आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना अध्ययन पूरा कर लिया है और किसी प्रसिद्ध अखबार में पत्रकार पद के लिए आवेदन भेजना है। इसके लिए एक आवेवन-पत्र लिखिए।

सेवा में
संपादक
दैनिक भास्कर
पानीपत।
विषय : पत्रकार पद के लिए आवेदन।
महोदय,
आज दिनांक 20 मार्च .... को प्रकाशित दैनिक भास्कर से प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ है कि आपके कार्यालय को पत्रकार की आवश्यकता है। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा स्ववृत्त इस आवेदन-पत्र के साथ संलग्न है। इसका अवलोकन करने पर आपको विश्वास होगा कि मैं इस पद के लिए पूर्णतः उपयुक्त उम्मीदवार हूँ। मैं आपके विज्ञापन में वर्णित सभी योग्यताओं को पूरा करता हूँ। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-
नाम : नरेंद्र कुमार
पिता का नाम : रमेश चंद
जन्मतिथि : 13-03-.......
वर्तमान पता : 72, विकास नगर, करनाल
स्थायी पता : 100 , कर्ण पुरी, दिल्ली,
दूरध्वनि : 0184-2228180
चलध्वनि : 96184-82215
ई-मेल : 1980narendra@yahoo.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

परीक्षा	बोर्ड	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
दसवीं	हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड	हिंदी, अंग्रेज़ी, गणित, साइंस, संस्कृत	प्रथम	70%
बारहवीं	हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड	हिंदी, अंग्रेज़ी, इतिहास, संस्कृत, गणित	प्रथम	71%
स्नातक	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय	हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत, गणित	प्रथम	72%
पत्रकारिता	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय	पत्रकारिता	प्रथम	70%

इस योग्यता के साथ-साथ मैं कई वर्षों से स्वतंत्र लेखन से भी जुड़ा हुआ हूँ। मुझे पत्रकारिता में बेहद रुचि है। मैं आपको पूर्ण विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अपना कार्य सत्यनिष्ठ एवं पूर्ण कर्तव्यपरायता से करूँगा। आपसे अनुरोध है कि उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मेरे आवेदन-पत्र पर सकारात्मक विचार करते हुए मुझे पत्रकार पद पर नियुक्त करें। सधन्यवाद।

भवदीय,

(हस्ताक्षर)

नरंद्र कुमार

बोर्ड परीक्षा 2024

विषय-हिन्दी ;   कक्षा-10

समय- 3 घंटे **अधिकतम अंक -80**

सामान्य निर्देश-

1. प्रश्न पत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या **17** है और **सभी** प्रश्न **अनिवार्य** हैं |

2. इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं- **खण्ड 'अ'** और **खण्ड' ब'**।**खण्ड 'अ'**में बहुविकल्पी / वस्तुपरक और **खण्ड' ब'** में वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं।

4 . प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लिखिए |

5 . यथा संभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार ही लिखिए |

	खंड अ (बहुविकल्पीय एवं अतिलघुतरात्मक / लघुतरात्मक प्रश्न)	
प्रश्न 1.	निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए |(7) साहसी मनुष्य का जीवन ही सच्चा जीवन होता है।ऐसे जीवन की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिल्कुल निडर और साहसी होता है।किसी भी कार्य की सफलता के लिए ध्येय के प्रति उत्कृष्ट लगन, कार्य में अटूट श्रद्धा एवं अपनी शक्तियों में पर्याप्त विश्वास आवश्यक है।विश्वास, एकाग्रता, लगन, संतुलन, श्रद्धा आदि सभी साहस पर निर्भर है, क्योंकि मनुष्य का सबसे प्रथम गुण साहस है।साहस अन्य सभी गुणों का प्रतिनिधित्व करता है।यदि तन, मन तथा वाणी सशक्त हो तो उनके द्वारा प्राप्त कार्य शक्ति के आगे भाग्य स्वयं नत-मस्तक हो जाता है।साहसी की प्रतिभा के सामने शोक, भय, आदि टिक नहीं पाते हैं।साहसी को संसार भी रास्ता देता है।मनुष्य में सभी गुण हों , वह विद्वान् हो , धनवान हो, शक्तिशालीहो, पर यदि उसमें साहस न हो तो वह अपने सद् गुणों, अपनी योग्यताओं व अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं कर सकता।साहस मनुष्य के व्यक्तित्व का नायकहै|साहस व्यक्ति को निर्भय बनाता है और जहाँ निर्भयता है वहाँ सफलता निश्चित है ।निर्भयता से ही आत्मविश्वास जागृत होता है।आत्मविश्वास के अभाव में हम उस प्रत्येक कार्य को करते हुए डरेंगे जो हमने पहले कभी नहीं किया और जो हमारे लिए बिल्कुल नया है अर्थात जिनके संकल्प अधूरे होते हैं, जो संशय ग्रस्त होते हैं, वे कोई बड़ा काम नहीं कर पाते और यदि कुछ करते भी हैं तो उसमें असफल हो जाते हैं। (1)किसी भी कार्य की सफलता के लिए क्या आवश्यक है? नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए- 1. ध्येय के प्रति उत्कृष्ट होना 2. कार्य में अटूट श्रद्धा 3. अपनी शक्तियों में पर्याप्त विश्वास 4. कार्य के प्रति असंतुलन की प्रवृत्ति विकल्प (क) केवल 1 सही है (ख) 1, 2 और 3 सही हैं (ग) 1 और 2 सही हैं (घ) 3 और 4 सही हैं (2) मनुष्य का प्रथम गुण क्या बताया गया है?	1x3=3

	(क) विश्वास (ख) साहस (ग) भाग्य (घ) इनमें से कोई नहीं (3) भाग्य स्वयं किसके आगे नतमस्तक हो जाता है? (क) तन, मन व वाणी से प्राप्त होने वाली कार्यशक्ति के आगे (ख) श्रद्धा के आगे (ग) मनुष्य के उद्यम के आगे (घ) इनमें से कोई नहीं (4) प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?(2) (5) मनुष्य का सर्वप्रथम गुण कौन सा है? वह सभी गुणों का प्रतिनिधित्व कैसे करता है ?(2)	
प्रश्न 2.	निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए- (7) एकता में है ताकत मेरे साथियों, देश को जरूरत है मेरे साथियों। तोड़ो मजहब की जंजीर-और-दीवार को, एकता ही मिलाती है संसार को। एकता की है कीमत मेरे साथियों, देश को जरूरत है मेरे साथियों। जब सभी की रगों में लहू लाल है, जाति बंधन का फिर क्यूँ बिछा जाल है। एक है सभी की इज्जत मेरे साथियों, देश को जरूरत है मेरे साथियों। हम अपनी आजादी लुटने न देंगे, इधर उँगली दुश्मन की उठने न देंगे। जान अपनी है भारत साथियों, देश को जरूरत है मेरे साथियों। एकता में है ताकत मेरे साथियों, देश को जरूरत है मेरे साथियों। (1) प्रस्तुत काव्यांश में कवि किसे संबोधित कर रहा है? (क) भारतवासियों को (ख) मनुष्य को (ग) दुश्मनों को (घ) इनमें से कोई नहीं (2) काव्यांश में किसकी दीवार तोड़ने का आहवान किया गया है? (क) धर्म की दीवार (ख) कर्म की दीवार (ग) एकता की दीवार (घ) इनमें से कोई नहीं	1x3=3

	(3) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए - कथन (A) जब सभी की रगों में लाल लहू है। कारण (R) सभी समान हैं। (क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है। (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है। (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है। (4) कवि देशवासियों से क्या आह्वान कर रहा है ?(2) (5) देश में एकता की भावना कब मजबूत हो सकती हैं ?(2)	
प्रश्न 3.	**(व्यावहारिक व्याकरण)** निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (1) 'पिता जी ने माँ से कहा कि वह भी दिल्ली चले।इसका सरल वाक्य होगा- (2) 'आप दरवाजे पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करें। इसका संयुक्त वाक्य होगा - (3) 'मनोज बीमार होने के कारण यहाँ नहीं आया।' इसका मिश्र वाक्य होगा- (4) अच्छे लड़के मेहनती होते है | इस वाक्य को मिश्र वाक्य में बदलिए | (5)यद्यपि मैं अच्छा खेला ,फिर भी हार गया |इस वाक्य को संयुक्त वाक्य में परिवर्तित कीजिये |	1x4=4
प्रश्न 4.	निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (I)कॉलम 1 को कॉलम 2 के साथ सुमेलित कीजिए -(1*3=3)	1x4=4

कॉलम 1	कॉलम 2
(1) हमसे सुंदर चित्र देखे गए।	(i) कर्तृवाच्य
(2) मेरा मित्र उस समस्या पर विचार कर रहा है।	(ii) कर्मवाच्य
(3) यहाँ तो खड़ा भी नहीं हुआ जाता।	(iii) भाववाच्य

	(4)पक्षियों द्वारा आकाश में उड़ा जाता हैं | यह किस वाच्य का उदहारण है? (5)जब क्रिया का प्रयोग कर्ता के लिंग वचन और करक के अनुसार होता है ,तब कौन सा वाच्य होता है ?	
प्रश्न 5.	निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (1)" <u>यह</u> पुस्तक मैंने तब खरीदी, जब मैं पंद्रह वर्ष का था।" इस वाक्य में रेखांकित पद का पद परिचय होगा- (2)" <u>माधवी</u> चाहती है कि तुम दिल्ली जाओ|"- वाक्य में रेखांकित पद का परिचय होगा | (3) रानी मेरी सबसे प्यारी सहेली है | निम्नलिखित पद-परिचय वाक्य के किस पद का है - व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक	1x4=4

	(4) 'मैं अपनी <u>मातृभूमि</u> पर मर मिटूँगा।' इस वाक्य में रेखांकित पद का पद परिचय होगा| (5) '<u>आजतक</u> मैं उससे उबर नहीं पाई हूँ।' इस वाक्य में रेखांकित पद का पद परिचय होगा|	
प्रश्न 6.	निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच प्रश्नों * में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए | (1) "सागर के उर पर नाच-नाच करती हैं लहरें मधुरगान।" उपरोक्त पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार कौन सा है ? (2) "सन्देसनि मधुबन-कूप भरे" मेंकौन-सा अलंकार है? (3) 'सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी' में अलंकार है- (4) '<u>प्रीति-नदी</u> में पाँउ न बोरयो' रेखांकित में अलंकार है - (5) 'मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोई।जातन की झाईं परै स्याम हरित दुति होइ।।' इन काव्य पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है-	1x4=4
प्रश्न 7.	**पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक** निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए| कार्तिक आया नहीं कि बाल गोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरू हुईं, जो फागुन तक चला करतीं।इन दिनों वह सवेरे ही उठते।न जाने किस वक़्त जगकर वह नदी-स्नान को जाते-गाँव से दो मील दूर।वहाँ से नहा-धोकर लौटते और गाँव के बाहर ही, पोखरे के ऊँचे भिंडे पर, अपनी खंजड़ी लेकर जा बैठते और अपने गाने रटने लगते ।मैं शुरू से ही देर तक सोने वाला हूँ, किंतु एक दिन, माघ की उस दाँत किटकिटाने वाली भोर में भी, उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था, अभी आसमान के तारों के दीपक बुझे नहीं थे ।हाँ, पूरब में लोही लग गई थी, जिसकी लालिमा को शुक्रतारा और बढ़ा रहा था। खेत, बगीचा, घर सब पर कुहासा छा रहा था। सारा वातावरण अजीब रहस्य से आवृत मालूम पड़ता था। उस रहस्यमय वातावरण में एक कुश की चटाई पर पूरब मुँह, काली कमली ओढ़े, बालगोबिन भगत अपनी खंजड़ी लिए बैठे थे। उनके मुँह से शब्दों का ताँता लगा था। उनकी अँगुलियाँ खंजड़ी पर लगातार चल रही थीं।गाते-गाते इतने मस्त हो जाते, इतने सुरूर में आते, उत्तेजित हो उठते कि मालूम होता, अब खड़े हो जाएँगे।कमली तो बार-बार सिर से नीचे सरक जाती। मैं जाड़े से कँपकँपा रहा था, किंतु तारों की छाँव में भी उनके मस्तक के श्रम बिंदु, जब-तब चमक ही पड़ते। 1) प्रभातियाँ किस समय गाया जाने वाला गीत है? (क) भोर (ख) मध्याह्न (ग) संध्या (घ) अपराह्न (2) 'उनके मुँह से शब्दों का ताँता लगा था।'- का आशय है- (क) यह एक के बाद एक गीत गाए जा रहे थे। (ख) वह लगातार प्रवचन दिए जा रहे थे। (ग) वह लगातार लोगों को आशीर्वचन दे रहे थे। (घ) वह किसी से लगातार बातें किए जा रहे थे। (3) गद्यांश में किस ऋतु का उल्लेख है? क) वसंत ऋतु (ख) शीत ऋतु (ग) ग्रीष्म ऋतु (घ) वर्षा ऋतु	5

	(4) बालगोबिन की प्रभातियाँ कब तक चला करती थीं? (क) फाल्गुन से कार्तिक तक (ख) कार्तिक से फाल्गुन तक (ग) फाल्गुन से आषाढ़ तक (घ) कार्तिक से चैत्र तक (5) भगत गाँव के बाहर पोखरे के ऊँचे भिंडे पर क्यों गाया करते थे? अनुपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए (क)शांत और प्राकृतिक वातावरण के कारण। (ख)ताकि गाँव वालों को परेशानी न हो। (ग)गाँव में अधिक शोर की मनाही थी। (घ)उन्हें उस स्थान पर रोज गाने की आदत थी।	
प्रश्न 8	निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए - मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती वह आवाज़ सुंदर कमज़ोर काँपती हुई थी वह मुख्य गायक का छोटा भाई है या उसका शिष्य या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार (1) मुख्य गायक की आवाज कैसी होती है? (क) कर्कश (ख) कमजोर (ग) पाषाण के समान कठोर (घ) चट्टान जैसी भारी (2) मुख्य गायक के स्वर से स्वर मिलाती आवाज किसकी होती है? (क) मुख्य गायक के शिष्य की (ख) मुख्य गायक के अनुज की (ग) संगीत सीखने वाले कोई रिश्तेदार की (घ) उपर्युक्त सभी (3)चट्टान जैसे भारी स्वर से क्या अभिप्राय है? (क) कर्कश और कठोर स्वर (ख) गंभीर और दमदार स्वर (ग) तीखा और मृदु स्वर (घ) कमजोर और पतला स्वर (4) निम्नलिखित में से क्या मुख्य गायक का साथ देने वाले गायक के स्वर की विशेषता नहीं है ? (क) दमदार (ख) कमजोर (ग) कम्पन युक्त (घ) सुन्दर (5) कथन (अ) संगतकार की आवाज में एक हिचक सुनाई देती है। कथन (ब) संगतकार में आत्मविश्वास की कमी होती है। दिए गए कथनों के लिए सही विकल्प पहचानिए- (क) कथन (अ) सही है और कथन (ब) उसका गलत कारण है। (ख) कथन (अ) सही है और कथन (ब) उसका सही कारण है। (ग) कथन (अ) गलत और कथन (ब) सही है। (घ) कथन (अ) और कथन (ब) दोनों आंशिक रूप से सही है।	5
	खण्ड-ब वर्णनात्मक प्रश्न	
प्रश्न 10.	गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए | (क) "लखनवी अंदाज" पाठ नवाब साहब के बहाने नवाबी-परंपरा पर व्यंग्य है।स्पष्ट कीजिए। ख) आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे ? "बालगोबिन भगत" पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए |	3X2=6

	(ग) पानवाला एक हँसोड़ स्वभाव का व्यक्ति है परंतु उसके हृदय में संवेदना भी है।इस कथन को स्पष्ट कीजिए। (घ) संसार में ज्ञान का प्रथम आविष्कारक किसे कहा जा सकता है और क्यों? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
प्रश्न 11 .	पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए | (क) प्रेम और योग ज्ञान के संघर्ष में, गोपियों और उद्धव के संघर्ष में कौन प्रभावी, रहता है? स्पष्ट कीजिए | (ख) "वज्र छिपा नूतन कविता फिर भर दो बादल गरजो" 'उत्साह' कविता की इन पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहता है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए | (ग) कवि ने शिशु की मुसकान को दंतुरित मुसकान क्यों कहा है? कवि के मन पर उस मुसकान का क्या प्रभाव पड़ा? (घ) 'संगतकार' कविता के आधार पर लिखिए कि मुख्य गायक के साथ संगतकार की भूमिका किन रूपों में होती है?	3X2=6
प्रश्न 12 .	पूरक पाठ्य पुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। (क) परिवेश एवं संगति किस प्रकार बच्चों के चारित्रिक विकास में बाधक एवं साधक हैं? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (ख) यात्राएँ विभिन्न संस्कृतियों से परिचित होने का अच्छा माध्यम है' 'साना-साना हाथ जोड़ि' यात्रा-वृत्तांत के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए। (ग) लेखक का हिरोशिमा में हुए बम विस्फोट से प्रभावित व्यक्तियों से साक्षात्कार किस प्रकार हुआ, उसे यह सब देखकर कैसा महसूस हुआ?	4x2=8
प्रश्न 13 .	**रचनात्मक लेखन** निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में सारगर्भित अनुच्छेद लिखिए | (क) सामाजिक संजाल (सोशल नेटवर्किंग) वरदान या अभिशाप संकेत बिंदु • भूमिका • सोशल नेटवर्किंग के लाभ • हानि • उपसंहार (ख) लोकतंत्र और चुनाव संकेत बिंदु • भूमिका • लोकतंत्र में चुनाव की प्रक्रिया • टिकट पाने की होड़ • अमर्यादित रूप से चुनाव का प्रचार-प्रसार	6

	• उपसंहार (ग) ई-कचरा संकेत बिंदु • ई-कचरा से तात्पर्य • चिंता का कारण • निपटान के उपाय • उपसंहार	
प्रश्न 14	किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र के संपादक को मोना की ओर से एक पत्र लिखिए, जिसमें सड़क परिवहन के नियमों की उपेक्षा करने वालों के प्रति पुलिस के ढीले-ढाले रवैये पर चिंता व्यक्त की गई हो| अथवा फैशन में समय और धन का अपव्यय करने वाली छोटी बहन को बड़ी बहन सुषमा की ओर से एक प्रेरणाप्रद-पत्र लिखिए।	5
प्रश्न 15	आप विनय हैं।आपको अपने मित्र से पता चला है कि स्थानीय नवोदय विद्यालय में सहायक प्राथमिक शिक्षक का पद रिक्त है।आप इस पद के लिए योग्य उम्मीदवार हैं और अपनी सेवा देने के इच्छुक भी हैं।उक्त पद के लिए नवोदय विद्यालय के प्रमुख को आवेदन भेजने हेतु लगभग 80 शब्दों में अपना एक संक्षिप्त स्ववृत्त लिखिए| अथवा विद्यालय में आप पहली बार 'अंतरराज्यीय हिंदी दिवस प्रतियोगिता का आयोजन करना चाहते हैं।इस संबंध में लगभग 80 शब्दों में प्रधानाचार्या को ई-मेल लिखिए।	5
प्रश्न 16	देश की जनता को 'मतदान अधिकार' के प्रति जागरूक करने के लिए मुख्य निर्वाचन आयुक्त कार्यालय की ओर से एक विज्ञापन तैयार कीजिए। अथवा अपनी मित्र सुधा को बैडमिंटन में राजकीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए बधाई संदेश 30-40 शब्दों में लिखिए।	4

उत्तरमाला व अंक योजना

समय:3 घंटे	बोर्डपरीक्षा 2024 कक्षा -दसवीं विषय- हिंदी	अधिकतम अंक -80
	खंड-अ (बहुविकल्पीय एवं अतिलघु / लघुतरात्मक प्रश्न)	
प्रश्न 1.	1.(ख) 1, 2 और 3 सही है 2. (ख) साहस 3. क) तन, मन व वाणी से प्राप्त होने वाली कार्यशक्ति के आगे 4. मनुष्य के भीतर साहस व आत्मविश्वास की भावना का विस्तार होना चाहिए| 5. साहस मनुष्य का प्रथम गुण है यह मनुष्य के बाकि सब गुणों का प्रतिनिधितव करता है क्योंकि यदि मनुष्य में सभी गुण विद्यमान पर यदि उसमे साहस न हो तो वह अपने सद्गुणों अपनी योग्यताओ व अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं कर सकता|	7
प्रश्न 2.	(1) (क) भारतवासियोंको (2) (क) धर्मकीदीवार| (3) (घ) कथन (A) औरकारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है। (4) कवि देशवासियों से यह आह्वान कर रहा है की वे भारत में एकता स्थापित करके सुख शांति से जीवन बिताएँ| (5) देश में एकता की सच्ची भावना तब मजबूत हो सकती है जब हर देशवासी जाती धर्म ,भाषा प्रान्त आदि के बारे में अविवेक से सोचना बंद करे और सच्चे मन से दूसरों से मेल करे |	7
प्रश्न 3.	1. (क) पिताजी ने माँ से दिल्ली चलने के लिए कहा 2 (ख) आप दरवाजे पर बैठें और उसकी प्रतीक्षा करें। 3. (ग) मनोज यहाँ इसलिए नहीं आया क्योंकि वह बीमार था। 4. जो लड़के मेहनती होते हैं ,वे अच्छे होते है | 5 .मैं अच्छा खेला, किन्तु हार गया|	4
प्रश्न 4.	1. 1-ii, 2 2-i, 3 3-iii 4 भाववाच्य 5 कर्तृवाच्य	4
प्रश्न 5.	1. सार्वनामिक विशेषण, विशेष्य -पुस्तक 2. व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक 3. रानी 4. जातिवाचकसंज्ञा ,स्त्रीलिंग, एकवचन अधिकरण कारक 5. कालवाचक क्रियाविशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन	4
प्रश्न 6.	1.(क) मानवीकरणअलंकार 2.(घ) अतिशयोक्ति 3.(क) उत्प्रेक्षा 4.(ख) रूपक 5. (ग) श्लेष	4

प्रश्न 7.	1.(क) भोर 2.(क) यह एक के बाद एक गीत गाए जा रहे थे। 3.(ख) शीत ऋतु 4.(ख) कार्तिक से फाल्गुन तक 5.(ग) गाँव में अधिक शोर की मनाही थी।	5
प्रश्न 8 .	1. (घ) चट्टान जैसी भारी 2. (घ) उपर्युक्त सभी 3. (ख) गंभीर और दमदार स्वर 4. (क) दमदार 5. (क) कथन (अ) सही है और कथन (ब) उसका गलत कारण है।	5
प्रश्न 9 .	(क)-यह सत्य है कि भूखे व्यक्ति के सामने अच्छे-अच्छे भोजन की प्रशंसा करने मात्र से या कल्पना मात्र से पेट नहीं भरता।नवाब साहब का पेट सूँघने मात्र से भर जाता होगा-यह तथ्य लेखक की समझ से परे है।नवाबी ठसक तो नहीं रही, यह तो सेकंड क्लास में यात्रा करने से पता चल गया, जो किफायत की दृष्टि से सेकंड क्लास में यात्रा की जा रही थी।फिर न जाने क्यों नवाब लोग नवाबी ठसक चले जाने पर भी झूठी शान दिखाते हैं, जिसका कोई महत्त्व नहीं है। (ख)मेरी दृष्टि में बालगोबिन भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के निम्नलिखित कारण रहे होंगे- (i) भगत को कबीर दास की सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने वाली बातें बहुत पसंद आई होंगी। (ii) भगत कबीरदास के जाति-पाँति का विरोध करने वाले विचारों से बहुत प्रभावित हुए होंगे। (iii) भगत को कबीरदास के सत्य का आचरण, झूठ से घृणा, सादा जीवन, उच्च विचार और मितव्ययिता की बातों ने भी बहुत प्रभावित किया होगा, इसलिए उन्होंने स्वयं भी सादा जीवन अपनाया। (ग) पान वाला हँसोड़है, बात कहने से पहले हँसता है। माहौल को हँसमुख बनाने का प्रयास करता है।इस प्रकार वह खुश मिज़ाज व्यक्ति है। खुशमिज़ाज होते हुए भी उसके हृदय में संवेदना है। कैप्टन के प्रति कठोर टिप्पणी करने वाला पान वाला कैप्टन की मृत्यु पर हृदय से कराह उठता है।हालदार साहब के पूछने पर बड़े भारी मन से आँखें डबडबाते हुए वह कहता है कि कैप्टन मर गया। (घ) 'संस्कृति' पाठ के आधार पर संसार में ज्ञान का प्रथम आविष्कारक उसे कहा जा सकता है, जिसने किसी तथ्य अथवा वस्तु की खोज अपने अंदर की सहज प्रवृत्ति और संस्कृति के कारण की है, न कि भौतिक प्रेरणा तथा कारकों के प्रभाव के कारण। उसके कार्यों के पीछे कोई भौतिक प्रलोभन, स्वार्थ तथा अकल्याणकारी भावना नहीं होती।उदाहरणार्थ पेट भरा हुआ और अपने तन पर वस्त्र धारण किया हुआ वह व्यक्ति, जो तारों भरे आकाश के नीचे इस चिंता में न सो पाया हो कि आखिर यह मोती भरा थाल है क्या? तो वह ज्ञान का प्रथम आविष्कारक है।	6
प्रश्न10 .	उत्तर(क) -जहाँ एक ओर प्रेम की पराकाष्ठा गोपियाँ हैं तो दूसरी ओर योग ज्ञान के महारथी उद्धव हैं।उद्धव के तरकश में गिने-चुने तीर हैं पर तीखे हैं।उद्धव को उनको चलाने का अभ्यास नहीं हैं।बहुत देर तक साधते हैं फिर छोड़ते हैं | उद्धव अकेले हैं| दूसरी ओर गोपियों के तरकश में अगणित तीर हैं।उनके तीरों में प्रवाह है, गति है,	6

	अभ्यास है| गोपियाँ उद्धव के बाणों से घायल तो होती हैंपरंतु विचलित नहीं होतीं, धैर्य बनाए रखती हैं, तीर पर तीर छोड़ती हैं।इससे अवाक हुए उद्धव गोपियों के संघर्ष कौशल को देखते ही रह जाते हैं।खाली हुए ज्ञान-योग के तरकश को देख विवश से चुप हो जाते हैं, शांत हो जाते हैं।इस तरह इस संघर्ष में गोपियाँ ही हावी दिखाई देती हैं। (ख) "वज्र छिपा नूतन कविता फिर भर दो बादल गरजो" 'उत्साह' कविता की इन पंक्तियों से आशय है कि जिस प्रकार बादलों में वज्र छिपा है, उसी प्रकार कवि भी अपनी नई कविता में अथवा भावनाओं में वज्र छिपा कर नवीन सृष्टि का निर्माण करके पूरे संसार को जोश से भर देना चाहते हैं ||बादल प्यासे-पीड़ित जन की प्यास बुझाते हैं तथा नई कल्पना करने वाले भी होते हैं। (ग) कवि ने शिशु की मुसकान को दंतुरित मुसकान इसलिए कहा है क्योंकि कवि को बच्चे के नए-नए निकले दाँतों की मनमोहक मुसकान में जीवन का संदेश दिखाई देता है। वह शिशु की मधुर मुसकान पर मोहित हो जाता है। उसकी यह मुसकान कवि के मन पर गहरा प्रभाव डालती है, उसे लगता है कि यह मुसकान एक मृत व्यक्ति में प्राण डाल देगी अर्थात् इस मुसकान को देखकर तो जिंदगी से निराश और उदासीन लोगों के हृदय भी प्रसन्नता से खिल उठेंगे। (घ) मुख्य गायक के साथ संगतकार की भूमिका कई रूपों में होती है- • मुख्य गायक के गंभीर व दमदार स्वर के साथ अथवा उसके पीछे- पीछे सुमधुर हल्के स्वर लगाकर | • उनके द्वारा प्रस्तुत की गई अंतरे की जटिल तानों के उलझाव में अपनी गूँज मिलाकर | • उनके द्वारा सरगम को लांघकर अनहद नाद के अलौकिक संसार में खो जाने की स्थिति में उनको संभाल कर | • मुख्य गायक को साथ होने का आभास दिलाने के लिए ताकि वे स्वयं को अकेला न समझें। • संगतकार ही मुख्य गायक की थकान भरी आवाज को सहारा देते हैं, जिससे गायन की प्रस्तुति में आद्योपांत स्थायी का स्वरूप कायम रहता है और मुख्य गायक सुर से भटक नहीं पाता। • संगतकार के अभाव में मुख्य गायक की सफलता का मार्ग अवरुद्ध हो सकता है।	
प्रश्न 11 .	(क) बाल मन बहुत कच्चा तथा कोमल होता है।बच्चे जिस परिवेश में रहते हैं, उसी में ढल जाते हैं । सही परिवेश और सही संगति चरित्र को उज्ज्वल बनाते हैं। दूसरी और गलत परिवेश एवं गलत संगति अच्छे बालक को भी बुरा बना देते हैं। प्रस्तुत पाठ में भोलानाथ जैसा भोला-भाला तथा मासूम बच्चा भी अपने उद्दंड (जिसे दंड का भय न हो) मित्रों की संगत में कभी शिक्षकों को चिढ़ाता है, तो कभी जीव-जंतुओं को सताता है। इसी प्रकार वह गलत संगति में पड़कर दुर्गुणों का शिकार हो जाता है।अतः परिवेश और संगति बच्चों के चारित्रिक विकास में बाधक भी है और सहायक भी। (ख) उपरोक्त कथन पूर्णतः सत्य है। लेखिका जब सिक्किम राज्य की राजधानी गंतोक से होते हुए विभिन्न पर्वतीय प्रदेशों की यात्रा करती है, तो वह केवल वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य से ही परिचित नहीं होती. बल्कि वहाँ भाषा, रीति-रिवाज़, परंपराएँ, मान्यताओं व वहाँ के जीवन की विषमताओं से भी परिचित होती है। अपनी यात्रा के दौरान ही	8

	लेखिका को यूमथांग में एक स्थान पर कतार में लगी हुई बौद्ध पताकाओं के महत्त्व से परिचित होती है, जो किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी पवित्र स्थान पर फहराई जाती थी। इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर लेखिका को वहाँ के लोगों की इस मान्यता का भी पता चलता है कि खेदुम नामक देवी-देवताओं के निवास स्थान पर गंदगी फैलाने से गंदगी फैलाने वाले की मृत्यु हो जाती है। अतः कहा जा सकता है कि यात्राएँ विभिन्न संस्कृतियों से परिचित होने का एक अच्छा माध्यम भी है। (ग) एक बार लेखक ने जापान जाने पर हिरोशिमा के उस अस्पताल को भी देखा, जहाँ रेडियोधर्मी पदार्थ से आहत लोग वर्षों से कष्ट पा रहे थे। इस प्रकार उसे इसका प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। उसे लगा कि कृतिकार के लिए अनुभव से अनुभूति गहरी चीज है।यही कारण है कि हिरोशिमा में सब देखकर भी उसने तत्काल कुछ नहीं लिखा। फिर एक दिन उसने वहीं सड़क पर घूमते हुए देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक मानव की लंबी उजली छाया है।उसकी समझ में आया कि विस्फोट के समय कोई वहाँ खड़ा रहा होगा और विस्फोट से बिखरे हुए रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणों ने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा।यह देखकर उसे लगा कि समूची ट्रेजडी जैसे पत्थर पर लिखी गई है।उसी क्षण अणु विस्फोट जैसे उसकी अनुभूति में आ गया और उसे लगा जैसे वह संपूर्ण घटना का दर्शक बन गया है।	
प्रश्न 12 .	**<u>सामाजिक संजाल (सोशल नेटवर्किंग) : वरदान या अभिशाप</u>** **<u>भूमिका-</u>** सामाजिक नेटवर्किंग वेबसाइट्स इंटरनेट पर उपलब्ध वहऑनलाइनसेवा, प्लेट या स्थान है, जो लोगों के बीच सामाजिक नेटवर्क या संबंध स्थापित करने में विशेष माध्यम की भूमिका निभाते हैं।वर्ष 1969 में इंटरनेट का आविष्कार सूचनाओं को सुरक्षित रूप से साझा करने के उद्देश्य को लेकर किया गया था।समय और आवश्यकता के अनुसार तकनीकी प्रगति के साथ-साथ अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए और बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में विश्वव्यापी संजाल (world wide web) पर ऑनलाइन सामाजिक नेटवर्किंग की संकल्पना साकार हुई।ये वेबसाइट्स अपने रजिस्टर्ड प्रयोगकर्ता(users) को उनके नेटवर्क के माध्यम से उनके विचार, गतिविधियों एवं रुचियों को साझा करने जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं | आज फेसबुक, माई स्पेस, ट्विटर, ऑरकुट इत्यादि कुछ प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय सामाजिक नेटवर्किंग साइट्स हैं , जो लोगों के बीच दोस्ती और भाईचारा बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। **<u>सोशल नेटवर्किंग के लाभ -</u>** शुरूआत में 'द ग्लोब डॉट कॉम' , जिओ साइट्स और ट्राइपॉड डॉट कॉम जैसी सामाजिक नेटवर्किंग वेबसाइट्स ने सूचनाओं और विचारों को मुफ्त में सरलता से साझा करने की सुविधा जुटाई। जो अब इतनी प्रगति कर गई है कि प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक नेटवर्किंग का लाभ उठाकर विकास की राह पर चल निकला है। सामाजिक नेटवर्किंग के निम्नलिखित लाभ हैं - सामाजिक नेटवर्क के माध्यम से प्रयोगकर्ता सामाजिक सरोकारों, देश-विदेश की राजनैतिक उथल-पुथल, आर्थिक उतार-चढ़ाव, सांस्कृतिक जानकारियों और देश व्यापी घटनाओं से मात्र एक क्लिक से जुड़ जाता है।पलक झपकते ही दूर बैठे वह अपने परिवार, मित्रों की स्थिति की जानकारी पा जाता है। इसके अतिरिक्त प्रयोगकर्ता	6

अपनी पसंद के आधार पर विभिन्न समुदायों और समूहों के सदस्य बन सकते हैं या स्वयं नवीन समूह-समुदाय का निर्माण कर सकते हैं तथा विभिन्न भौगोलिक स्थितियों की जानकारी पा सकते हैं।विभिन्न खेलों को ऑनलाइन खेल सकते हैं।ब्लाग, ट्विटर आदि से जुड़कर अपनी अभिव्यक्ति आसानी से दूसरों तक पहुँचा सकते हैं और दूसरों की अभिव्यक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

<u>हानि</u>

सामाजिक संजाल द्वारा जहाँ व्यक्ति की पहचान का दायरा बढ़ा है, वहीं इसके खतरे भी कम नहीं हैं।यह संजाल सबको अपनी पकड़ में ऐसा जकड़ता है कि खाते-पीते, उठते-बैठते, लिखते-पढ़ते, सोते-जागते या यूँ कहिए कि हर समय प्रयोगकर्ता इसी में उलझा रहता है और अन्य सामाजिक सरोकारों से कट जाता है।दूसरे, कई लोगों की ऑनलाइन पहचान को है करों द्वारा चुरा लिया जाता है और उसका दुरुपयोग किया जाता है, जाल-साजी द्वारा प्रतिष्ठित व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा को तार-तार किया जाता है।आर्थिक लेन-देन के क्षेत्र में भी प्रयोगकर्ता कई ई-मेल पते को नियंत्रण में लेकर उसके क्रेडिट कार्ड और अकाउंट का गलत इस्तेमाल कर लिया जाता है।अतः इन सबका प्रयोग करते समय आवश्यक सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

<u>उपसंहार</u>

सामाजिक संजाल व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ने का एक अच्छा माध्यम है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाए, उतनी कम है परन्तु इसे प्रयोग करते समय आवश्यक सावधानी का प्रयोग करें वरना सुविधा को असुविधा में बदलते देर नहीं लगती।अपने यूजर नेम, पासवर्ड आदि का उचित प्रयोग आपको असुविधा से बचा सकता है।इसका प्रयोग आवश्यकतानुसार करें और इसके अच्छे पहलुओं पर ध्यान दें, तो कहा जा सकता है कि सामाजिक संजाल समाज में भाईचारा और सौहार्द्र के साथ ज्ञानवर्द्धन का भी अच्छा माध्यम बनकर हमारे विकास में योगदान करता रहेगा।

<u>लोकतंत्र और चुनाव</u>

<u>भूमिका</u>

अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र को परिभाषित करते हुए कहा था- "लोकतंत्र जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता का शासन है।" लोकतंत्र सर्वोत्तम शासन प्रणालीहै, जिसमें जनता की इच्छाओं को साकार करने के लिए जनता के प्रतिनिधि ही शासन संचालित करते हैं।

<u>लोकतंत्र में चुनाव की प्रक्रिया</u>-

भारतीय लोकतंत्र में जनता प्रत्येक चुनाव से अपने प्रतिनिधियों को प्रत्यक्ष मतदान द्वारा चुनती है।भारत में प्रत्येक 5 वर्ष के अंतराल पर चुनाव आयोजित किए जाते हैं।यह चुनाव का समय ही होता है, जब आसमान में उड़ने वाले सभी नेता वापस धरती पर आ जाते हैं।

<u>टिकट पाने की होड़-</u>

आजकल लोकतंत्र की वास्तविकता केवल सिद्धांतों तक सीमित रह गई है, उसका व्यावहारिक पक्ष अत्यंत घृणित एवं खराब हो गया है।सभी अपने-अपने महत्त्व को दिखाने के लिए अपने नेता, अपने गुट एवं दल के सदस्य को चुनाव में खड़ा करते हैं। राष्ट्रीय दलों के प्रत्याशी के रूप में टिकट पाने के लिए अनेक लोगों के बीच प्रतिस्पर्द्धा शुरू हो जाती है।अंततः टिकट पाने में सफलता प्राप्त करने वाले प्रत्याशी

का उत्साह सातवें आसमान पर चढ़ जाता है। चुनाव प्रचार का अराजकता भरा वातावरण शुरू हो जाता है।संपूर्ण परिवेश रंगीनझंडों, बैनरों, नारों, पोस्टरों, चीखते लाउडस्पीकरों, प्रचार करती गाड़ियों आदि से सराबोर हो जाता है।

अमर्यादित रूप से चुनाव का प्रचार-प्रसार- आजकल चुनाव प्रचार के समय राजनीतिक दलों द्वारा न्यूनतम मर्यादाओं का भी पालन नहीं किया जाता है।सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए नैतिकता समाप्त होती जा रही है।इसके कारण पूरा वातावरण अत्यंत दूषित हो जाता है।

उपसंहार-

अनेक सुधारों के पश्चात भी लोकतंत्र में चुनाव-प्रणाली की जितनी सार्थक भूमिका होनी चाहिए, वह अभी भी नहीं दिखती है। आज भी जाति एवं धर्म के आधार पर मतदान होता है, आज भी बाहुबली जेलों में रहते हुए चुनाव जीत जाते हैं।

ई कचरा

ई कचरा से तात्पर्य

"ई-कचरा" शब्द आमतौर पर उपभोक्ता और व्यावसायिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर लागू होता है, जिनकी अब आवश्यकता नहीं है, लेकिन जिनमें ऐसी सामग्री होती है जो लैंडफिल में डालने पर उन्हें खतरनाक बना देती है।लेकिन हम जानते हैं कि हर साल, ई-कचरे की वस्तुओं की सूची लंबी होती जा रही है|

ई-कचरा कोई भी विद्युत या इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है जिसे फेंक दिया गया है। इसमें काम करने वाले और टूटे हुए सामान शामिल हैं जिन्हें कचरे में फेंक दिया जाता है या गुडविल जैसे चैरिटी रीसेलर को दान कर दिया जाता है।अक्सर, अगर कोई सामान स्टोर में नहीं बिकता है, तो उसे फेंक दिया जाएगा।ई-कचरा विशेष रूप से खतरनाक होता है क्योंकि इसमें जहरीले रसायन होते हैं जो दफनाने पर अंदर की धातुओं से स्वाभाविक रूप से निकलते हैं।

ई-कचरा आधुनिक समय की एक गंभीर समस्या है।वर्तमान समय में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफ़ी काम हो रहा है।इसके फलस्वरूप, आज नित नए-नए उन्नत तकनीक वाले इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों का उत्पादन हो रहा है। जैसे ही बाज़ार में उन्नत तकनीक वाला उत्पाद आता है, वैसे ही पुराने यंत्र बेकार पड़ जाते हैं।इसी का नतीजा है कि आज कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइलफोन, टीवी, रेडियो, प्रिंटर, आई-पोड्स आदि के रूप में ई-कचरा बढ़ता जा रहा है।एक अनुमान के अनुसार एक वर्ष में पूरे विश्व में लगभग 50 मिलियन टन ई-कचरा उत्पन्न होता है।

चिंता का कारण

यह अत्यंत चिंता का विषय है कि ई-कचरे का निपटान उस दर से नहीं हो पा रहा है, जितनी तेज़ी से यह पैदा हो रहा है।ई-कचरे को डालने या खुले में जलाने से पर्यावरण के लिए गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं, क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों में आर्सेनिक, कोबाल्ट, मरकरी, बेरियम, लिथियम, कॉपर, क्रोम, लेड आदि हानिकारक अवयव होते हैं।इनसे कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा कई गुना बढ़ गया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, ई-कचरे से निकलने वाले विषैले पदार्थों के सीधे संपर्क में आने से स्वास्थ्य जोखिम हो सकता है।इनमें सीसा, कैडमियम, क्रोमियम, ब्रोमिनेटेड फ्लेम रिटार्डेंट्स या पॉलीक्लोरीनेटेड बाइफिनाइल्स (PCBs) जैसे खनिज शामिल हैं।जहरीले धुएं के साँस के साथ-साथ मिट्टी, पानी और भोजन में

	रसायनों के जमा होने से भी खतरा हो सकता है। इससे न केवल लोगों को बल्कि ज़मीन और समुद्री जानवरों को भी ख़तरा है।विकासशील देशों में, जोखिम असाधारण रूप से अधिक है क्योंकि कुछ विकसित देश अपना ई-कचरा वहाँ भेजते हैं।अध्ययनों से पता चला है कि इस वैश्विक ई-कचरे का उन लोगों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है जो ई-कचरे के साथ काम करते हैं, लेकिन इसके आस पास रहने वाले लोगों पर भी इसका हानिकारक प्रभाव पड़ता है। <u>निपटान के उपाय</u> अब समय आ गया है कि ई-कचरे के उचित निपटान और पुनः चक्रण पर ध्यान दिया जाए अन्यथा पूरी दुनिया शीघ्र ही ई-कचरे का ढेर बन जाएगी।इसके लिए विकसित देशों को आगे आना होगा और विकासशील देशों के साथ अपनी तकनीकों को साझा करना होगा, क्योंकि विकसित देशों में ही ई-कचरे का उत्पादन अधिक होता है और वे जब-तब चोरी-छिपे विकासशील देशों में उसे भेजते रहते हैं।इस समस्या से निपटने के लिए पूरी दुनिया को एक होना होगा। <u>उपसंहार</u> हमारी और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए एक उचित पुनर्चक्रण प्रक्रिया लागू करने की आवश्यकता है।चूंकि हम जानते हैं किउपभोक्ता नए उपकरण खरीदते रहेंगे, इसलिए यह संदेश देना महत्वपूर्ण है कि हमें पुराने मॉडलों का पुनः उपयोग करनाहै, उन्हें फेंकना नहीं है |	
प्रश्न 13 .	सेवा में, संपादक महोदय, दैनिक हिंदुस्तान, गाजियाबाद। दिनांक 30-06-2024 विषय- यातायात पुलिस के ढीले रवैये के संबंध में महोदय, मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान यातायात पुलिस के ढीले रवैये की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। आजकल लोगों द्वारा यातायात के नियमों का खुले आम उल्लंघन हो रहा है और यातायात पुलिस या तो उपस्थित ही नहीं रहती या फिर वह मूकदर्शक बनी रहती है। यातायात पुलिस यातायात संबंधी व्यवस्था को उचित तरीके से संचालित करने की जगह कई वाहनों को रोककर पैसा उगाही में लगी रहती है। इसका परिणाम यह होता है कि चारों ओर से वाहन एक साथ आने-जाने लगते हैं और तुरंत जाम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जाम लगने के कारण समय का बहुत अधिक अपव्यय होता है और कई आवश्यक कार्य छूट जाते हैं| अतःआपके माध्यम से मैं यातायात पुलिस के उच्च अधिकारियों तक इस अव्यवस्था का संदेश देना चाहती हूँ ताकि समस्या का उचित ढंग से निवारण संभव हो सके।यातायात सुव्यवस्थित होने से दुर्घटनाओं की संभावनाएँ भी कम हो जाती हैं। धन्यवाद। भवदीया मोना **अथवा**	5

	682, शास्त्रीनगर सेक्टर 50, नोएडा गौतम बुद्ध नगर, उ.प्र. दिनांक -30/06/2024 प्रिय अनुजा माधवी मधुर स्नेह अनेक आकांक्षाओं को संजोए आशा करती हूँ कि छात्रावास में रहते हुए सभी चिंताओं से मुक्त होकर सानंद और अध्ययनरत होगी। प्रियमाधवी! लगता है नगरीय चकाचौंध में तुम्हारी आखें चौंधिया गई हैं।उसी चकाचौंध के अनुकूल स्वयं को चकाचौंध करने वाले प्रसाधनों के उपयोग से वैसी ही बनती जा रही हो ।नगरीय जीवन का तुम्हें अनुभव नहीं हैं। व्यक्तित्व की परख बाह्य चीज़ों से नहीं होती है अपितु शालीनता से होती है। यह समय शरीर की सजावट का नहीं वरन जीवन के असली सौन्दर्य को निखारने का है।शारीरिक शृंगार के लिए तो सारा जीवन पड़ा है।सौन्दर्य की प्रतिस्पर्धा तो आगे चलकर अभिनेत्रियों से भी कर सकती हो। उनसे तुम किसी प्रकार कम नहीं हो। इस समय तुम अच्छी शिक्षा प्राप्त कर जीवन को सँवार लो। वैसे तो तुम स्वयं समझदार हो, फिर भी आशा है कि मेरी बातों पर विशेष ध्यान दोगी।इन्हीं अपेक्षाओं के साथ पत्र की प्रतीक्षा में- तुम्हारी बड़ी बहन सुषमा	
प्रश्न 14 .	सेवामें, प्राचार्य नवोदय विद्यालय, अ.ब.स. नगर, अहमदाबाद। विषय- सहायक प्राथमिक शिक्षक पद के आवेदन हेतु पत्र। महोदय, आज दिनांक 25 अप्रैल, 20XX के दैनिक समाचार पत्र 'नवभारत टाइम्स' से ज्ञात हुआ कि आपके विद्यालय में सहायक प्राथमिक शिक्षक के पद रिक्त हैं।उन रिक्त पदों के लिए आवेदन-पत्र आमंत्रित किए गए हैं।महोदय मैं भी स्वयं को इस पद के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूँ। मैं आपके द्वारा जारी की गई सभी योग्यताओं को भी पूरा करता हूँ।मेरा आपसे अनुरोध है कि आप मेरी योग्यताओं को ध्यान में रखते हुए मुझे अपने विद्यालय में उक्त पद के लिए सेवा का अवसर प्रदान करें। मैं आपके विद्यालय की उन्नति व विकास के लिए सदैव तत्पर रहूँगा। आशा है आप मेरे आवेदन को स्वीकार करेंगे। मेरे प्रमाण-पत्र व स्ववृत्त इस आवेदन-पत्र के साथ संलग्न हैं। सधन्यवाद। भवदीय विनय संलग्न प्रमाण पत्र 1.दसवीं की अंकतालिका	5

2. बारहवीं की अंकतालिका
3. बी. ए. अंग्रेजी विशेष की अंकतालिका व प्रमाण-पत्र
4. एम.ए. अंग्रेजी विशेष की अंकतालिका व प्रमाण-पत्र
5. प्राथमिक टीचरकोर्स की अंकतालिका व प्रमाण-पत्र

स्ववृत

नाम विनय शर्मा

पिता का नाम रमेश शर्मा

माता का नाम रजनी शर्मा

जन्मतिथि 19-08-1991

वर्तमान पता अ.ब.स. नगर, बनारस

स्थायी पता उपर्युक्त

दूरभाष नंबर 011-12 45XXXX

मोबाइल नंबर 9425XXXXXX

ई-मेलvinay@gmail.

शैक्षणिकयोग्यताएँ

क्र.सं.	परीक्षा/ डिग्री	वर्ष	विद्यालय (बोर्ड)	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं	2005	अरिहंत पब्लिकस्कूल ,बनारस , सी.बी.एस.ई.	अंग्रेजी, हिंदी, विज्ञान, सामाजक विज्ञान, संस्कृत	प्रथम	94
2.	बारहवीं	2007	अरिहंत पब्लिकस्कूल ,बनारस, सी.बी.एस.ई	अंग्रेजी, हिंदी, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, गणित	प्रथम	90
3.	बी.ए.	2010	बनारस विश्व विद्यालय	अंग्रेजी, हिन्दी, अर्थशास्त्र	प्रथम	91
4.	अध्यापक पात्रता परीक्षा	2011	टी.ई.टी, दिल्ली	-	प्रथम	91
5.	एम.ए..	2014	दिल्ली विश्वविद्यालय	अंग्रेजी	प्रथम	80

अन्य सम्बंधित योग्यताएँ

* कंप्यूटर का ज्ञान
* जर्मन, फ्रेंच भाषा का ज्ञान
* स्मार्ट बोर्ड कक्षाओं का ज्ञान

उपलब्धियाँ

* सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता वर्ष 2023 में प्रथम पुरस्कार
* अंग्रेजी क्विज (राज्यस्तर) प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान

कार्येत्तर गतिविधियाँ तथा अभिरुचियाँ

	* डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बनारस में 4 वर्ष तक कार्य अनुभव * नव जीवन पब्लिक स्कूल, बनारस में 2 वर्ष का शिक्षण अनुभव * अंग्रेजी पत्रिकाओं का नियमित पठन व लेखन **संदर्भित व्यक्तियों का विवरण** * श्री राहुल बाजपेयी, प्रिंसिपल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, दिल्ली। * विनीता धीमान ,प्रिंसिपल, संस्कार पब्लिक स्कूल, दिल्ली। **उद्घोषणा** मैं पुष्टि करता हूँ कि मेरे द्वारा उपर्युक्त दी गई जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है। दिनांक -30 जून , 20XX स्थान- बनारस हस्ताक्षर- विनय अथवा From : sonu15@gmail.com To : ragini9@gmail.com CC : ababab@gmail.com BCC : विषय- विद्यालय में 'अंतरराज्यीय हिंदी दिवस प्रतियोगिता' के आयोजन हेतु। मान्यवर, जैसा कि हम सभी को भली-भाँति ज्ञात है कि भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है।महोदय मेरा आपसे यह सुझाव है कि इस दिन हम अपने विद्यालय में भी अंतरराज्यीय हिंदी दिवस प्रतियोगिता का आयोजन कर सकते हैं, जिससे छात्रों का हिंदी और कला क्षेत्र के प्रति रुझान बढ़ेगा। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप मेरे सुझाव पर संज्ञान लेते हुए विद्यालय परिसर में अंतरराज्यीय हिंदी दिवस प्रतियोगिता आयोजित करने की अनुमति प्रदान करने की कृपा करें। धन्यवाद। आपका आज्ञाकारी शिष्य क.ख. ग.	
प्रश्न 15		4

	अथवा <u>संदेशलेखन</u> दिनांक -1 जुलाई , 20XX समय -प्रातः 10:00 बजे प्रियसुधा, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर बहुत-बहुत बधाई ! मेरी कामना है कि तुम अपनी मेहनत, कौशल और व्यवहार के बल पर ऊँचे-से-ऊँचे पद पर पहुँचो।अपना, अपनेमाता-पिता और अपने देश का नाम रोशन करो। मेरी शुभकामनाएँ सदा तुम्हारे साथ हैं। इस अद्भुत प्रदर्शन के लिए एक बार पुनःबधाई। तुम्हारी मित्र सुमन	

आदर्श प्रश्न पत्र 1 (2024-25)

कक्षा-10

निर्धारित समय- 3 घंटे **विषय -हिंदी पाठ्यक्रम -'अ' (कोड002)** **पूर्णांक - 80**

<u>सामान्य निर्देश -</u>

(I) इस प्रश्न पत्र के चार खंड है. क, ख, ग, घ.

(II)खंड 'क' में बहुविकल्पीय/ अतिलघुरात्मक एवं लघुरात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।

(III) खंड 'ख' में अतिलघुरात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।

(IV) खंड 'ग' में बहुविकल्पीय / वर्णात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।

(V) खंड 'घ' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।

(VI) प्रश्न पत्र के चारों खंडों में प्रश्नों की कुल संख्या 15 है और सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(VII) खंड 'घ' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं, आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं।

	खंड- क (अपठित बोध)	
प्रश्न1	निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।	7
	तुम्हें क्या करना चाहिए, इसका ठीक-ठीक उत्तर तुम्हीं को देना होगा, दूसरा कोई नहीं दे सकता। कैसा भी विश्वास-पात्र मित्र हो, तुम्हारे इस काम को वह अपने ऊपर नहीं ले सकता। हम अनुभवी लोगों की बातों को आदर के साथ सुनें, बुद्धिमानों की सलाह को कृतज्ञतापूर्वक मानें, पर इस बात को निश्चित समझकर कि हमारे कामों से ही हमारी रक्षा व हमारा पतन होगा, हमें अपने विचार और निर्णय की स्वतंत्रता को दृढ़ता पूर्वक बनाए रखना चाहिए। जिस पुरुष की दृष्टि सदा नीची रहती है, उसका सिर कभी ऊपर न होगा। नीची दृष्टि रखने से यद्यपि रास्ते पर रहेंगे, पर इस बात को न देखेंगे कि यह रास्ता कहाँ ले जाता है। चित्त की स्वतंत्रता का मतलब चेष्टा की कठोरता या प्रकृति की उग्रता नहीं है। अपने व्यवहार में कोमल रहो और अपने उद्देश्यों को उच्च रखो, इस प्रकार नम्र और उच्चाशय दोनों बनो। अपने मन को कभी मरा हुआ न रखो। जो मनुष्य अपना लक्ष्य जितना ही ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है। संसार में ऐसे-ऐसे दृढ़चित मनुष्य हुए हैं जिन्होंने मरते दम तक सत्य की टेक नहीं छोड़ी अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया राजा हरिश्चंद्र के ऊपर इतनी विपत्तियां आई पर उन्होंने अपना सत्य नहीं छोड़ा। मैं निश्चयपूर्वक कहता हूं कि जो युवा पुरुष सब बातों में दूसरों का सहारा चाहते हैं ,जो सदा एक न एक नया अगुआ ढूंढा करते हैं और उनके अनुयायी बना करते हैं ,वह आत्म संस्कार के कार्य में उन्नति नहीं कर सकते। उन्हें स्वयं विचार करना ,अपनी सम्मति आप स्थिर करना ,दूसरों के उचित बातों का मूल्य समझते हुए भी उनका अंध भक्त ना होना सीखना चाहिए।	
(I)	मन को मरा हुआ रखने का अर्थ है-	1
	(क) मन को प्रसन्नचित्त रखना (ख) मन मुताबिक काम न करना (ग) मन को उत्साहहीन ,निराश और उदास बनाए रखना (घ) मन की बातों को मन में ही रखना	
(II)	'दृष्टि' शब्द का पर्यायवाची चुनकर लिखिए : (क) द्रुम (ख) द्रविड़ (ग) अंबुज (घ) दृग	1
(III)	कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपर्युक्त विकल्प चुनिए	1

	कथन (A) तुम्हें क्या करना चाहिए इसका ठीक-ठीक उत्तर तुम्हीं को देना होगा कारण (R) क्योंकि इसका उत्तर दूसरा कोई नहीं दे सकता । (क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत है (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है	
(IV)	नीची दृष्टि रखने के क्या लाभ है?	2
(V)	किसका तीर ऊपर जाता है और क्यों?	2
2	निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। बहुत ऊँचे पहाड़ पर, पेड़ नहीं उगते, पौधे नहीं लगते, न घास ही जमती है। जमती है सिर्फ़ बर्फ़ जो, कफ़न की तरह सफ़ेद और मौत की तरह ठंडी होती है। खेलती, खिल-खिलाती नदी, जिसका रूप धारण कर, अपने भाग्य पर बूंद-बूंद रोती है। ऐसी ऊँचाई, जिसका परस पानी को पत्थर कर दे, ऐसी ऊँचाई, जिसका दरस हीन भाव भर दे, अभिनंदन की अधिकारी है, आरोहियों के लिए आमंत्रण है। उस पर झंडे गाड़े जा सकते हैं, किंतु कोई गौरैया, वहाँ नीड़ नहीं बना सकती, न कोई थका-माँदा बटोही, उसकी छाँव में पलभर पलक ही झपका सकता है। सच्चाई यह है कि केवल ऊँचाई ही काफ़ी नहीं होती, सबसे अलग-थलग, परिवेश से पृथक्, अपनों से कटा-बँटा, शून्य में अकेला खड़ा होना, पहाड़ की महानता नहीं, मजबूरी है। ऊँचाई और गहराई में आकाश-पाताल की दूरी है।	7
(I)	पहाड़ की क्या मजबूरी है ? (क) शून्य में अकेले खड़ा होना (ख) सबसेअलग-थलगरहना (ग)परिवेश से पृथक रहना (घ) उपरोक्त सभी	1
(II)	'खेलती- खिलखिलाती नदी में'-प्रयुक्त अलंकार चुनकर लिखिए ।	1
	(क)यमक अलंकार	
	(ख)उत्प्रेक्षा अलंकार	
	(ग)अनुप्रास अलंकार	
	(घ) रूपक अलंकार	
(III)	केवल ऊंचाई ही काफी नहीं होती कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए	1

	1 सबसे अलग होकर सफल होना ही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि नहीं होती	
	2 सफल होना सबसे बड़ी उपलब्धि है	
	3 सबसे अलग -थलग होना विशिष्टता का प्रमाण है	
	4 ऊंचाई हीनता का बोध कराती है	
	कूट	
	(क) केवल 1 सही है	
	(ख) 1 और 2 सही हैं	
	(ग) 2 और 4 सही हैं	
	(घ) 1, 2 और 3 सही हैं	
(IV)	ऐसी ऊंचाई हीन भाव कैसे भरतीहै?	2
(V)	बहुत ऊंचे पहाड़ पर जीवन संभव क्यों नहीं है?	2
	खंड - ख (व्यावहारिक व्याकरण)	
प्रश्न 3	निम्नलिखित प्रश्नों में से निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए -	1x4
(I)	. शीला ने एक पुस्तक मांगी और वह उसे मिल गई। (मिश्रवाक्य में बदलिए)	1
(II)	. यह वही स्थान है जहां पर <u>कल रात कोहरे के कारण दुर्घटना हुई थी।</u> (रेखांकित उपवाक्य का उपभेद बताइए)	1
(III)	फिर रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। (योजक शब्द छांटकर लिखिए)	1
(IV)	जिस वाक्य में एक स्वतंत्र वाक्य होता है तथा अन्य उपवाक्य उस पर आश्रित होते हैं, उसे क्या कहते हैं?	1
(V)	कार्तिक आया नहीं कि बालगोबिन भगत की प्रभातियां शुरू हुई। (आश्रित उपवाक्य छांटकर लिखिये)	
प्रश्न4	निम्नलिखित प्रश्नों में से निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-	1x4
(I)	भाववाच्य में क्रिया सदैव किस प्रकार की होती है?	1
(II)	राष्ट्रपति कल भाषण देंगे। (वाच्य का भेद बताइए)	1
(III)	सारा संसार निस्तब्धता में सोया है। (भाव वाच्य में बदलिए)	1
(Iv)	तुम फूल तोड़ोगे (कर्मवाच्य में बदलिए)	1
(V)	आओ सोया जाए (वाच्य का भेद बताइए)	1
प्रश्न5	निम्नलिखित रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए-	1x4
(I)	स्वाद के आनंद में पलके <u>मुंद गई।</u>	1
(II)	मैं उस <u>पवित्र</u> ज्योति की याद में श्रद्धानत हूं।	1
(III)	<u>नेताजी की</u> बगैर चश्मे वाली मूर्ति बुरी लगती है।	1
(IV)	<u>मैं</u> तुमसे कुछ पूछूंगा।	1
(V)	विशेषण का पद परिचय देते समय किन-किन बिंदुओं का समावेश किया जाना चाहिए।	1

प्रश्न6	निर्देशानुसार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-	1x4
(I)	जहां उपमेय में उपमान की संभावना की जाए वहां कौन सा अलंकार होता है?	1
(II)	"आगे-आगे नाचती गाती बयार चली" इस काव्य पंक्ति में कौन सा अलंकार है?	1
(III)	अतिशयोक्ति अलंकार का एक उदाहरण लिखिए।	1
(IV)	"माया महाठगिनी हम जानी। तिरगुन फांस लिए कर डोले,बोलै मधुरबानी।"	1 1
(V)	इस काव्य पंक्ति में कौन सा अलंकार है? किसी की प्रशंसा में लोक सीमा का उल्लंघन किस अलंकार में होता है?	
	खंड ग (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)	
प्रश्न7	निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए-	1X5
	सचमुच हैरान करती है काशी-पक्का महाल से जैसे मलाई बरफ गया, संगीत, साहित्य और अदब की बहुत सारी परंपराएँ लुप्त हो गई।एक सच्चे सुरसाधक और सामाजिक की भाँति बिस्मिल्ला खाँ साहब को इन सबकी कमी खलती है।काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्लाखाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं, उसी तरह मुहर्रम-ताजिया और होली-अबीर,गुलाल की गंगा-जमुनी संस्कृति भी एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही बहुत कुछ इतिहास बन चुका है।अभी आगे बहुत कुछ इतिहास बन जाएगा।फिर भी कुछ बचा है जो सिर्फ काशी में हैं।काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है।काशी आनंद कानन है।सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।	
(I)	गंगा- जमुना संस्कृति से लेखक का क्या अभिप्राय है? (क) गंगा और यमुना नदी का संगम (ख)गंगा- यमुना नदी के तट पर बसने वाले शहर (ग) सभी धर्मों और संप्रदायों का मिलजुल कर रहना (घ)गंगा -यमुना नदी से मिलने वाली अन्य नदियां	1
(II)	गद्यांश में 'नायाब हीरा' किसे कहा गया है? (क) काशी को (ख)बाबा विश्वनाथ को (ग) बिस्मिल्लाख़ां को (घ) साहित्य और अदब की परंपरा को	1
(III)	लेखक ने दो कौमों की बात किसके लिए कही है? (क) काशी में रहने वाले लोग (ख) हिंदू और मुसलमान (ग) बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्लाख़ां (घ)मुहर्रम -ताजिया	1
(IV)	कानन शब्द का पर्यायवाची शब्द है - (क) कान (ख) नदी (ग) जंगल (घ) आकाश	1

(V)	गद्यांश के आधार पर बताइए कि लेखक को कौन सी बातें हैरान करती हैं? (क) गंगा जमुना संस्कृति (ख) काशी का आनंदकानन होना (ग) काशी का संगीत के स्वर पर जगना और सोना (घ) काशी से संगीत ,साहित्य और अदब की बहुत सारी परंपराओं का लुप्त होना	1
प्रश्न8 (I) (II) (III) (IV)	गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए: धैर्य और त्याग एक श्रेष्ठ मानवीय गुण हैं।लेखिका मन्नू भंडारी की मां के अंदर ये दोनों ही गुण उच्चतम रूप में समाहित थे, फिर भी लेखिका के लिए उनकी मां उनका आदर्श नहीं बन सकी। क्यों? स्पष्ट कीजिए। बालगोबिन भगत अपने इकलौते पुत्र को बहुत प्रेम करते थे, फिर उसकी मृत्यु हो जाने पर उन्होंने दुख व्यक्त क्यों नहीं किया? स्पष्ट कीजिए। 'संस्कृति' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि भौतिक प्रेरणा और ज्ञानेप्सा के अलावा अन्य तत्व भी मानव संस्कृति के माता-पिता हैं। क्या आपको लगता है कि हालदार साहब एक सहृदय, संवेदनशील और देश प्रेमी व्यक्ति हैं?तर्क सहितउत्तर दीजिए।	2X3= 6 2 2 2 2
प्रश्न9	निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए -	1X5= 5
	नाथ संभुधनु भंज निहारा।होइ केउ एक दास तुम्हारा।। आयेसु काह कहिअ किन मोही।सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।। सेवकु सो जो करै सेवकाई।अरि करनी करि करिअ लराई।। सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा।सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।। सो बिलगाउ बिहाइ समाजा।न त मारे जैहहिं सब राजा।। सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने।बोले परसु धरहि अवमाने।। बहुधनुही तोरी लरिकाई।कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।। येहि धनु पर ममता केहि हेतू।सुनि रिसाइ कह भृगुकुल केतू।। रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार। धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।	
(I)	शिव-धनुष टूटने पर परशुराम क्रोधित क्यों हुए? (क) परशुराम शिव-भक्त थे और उन्हें शिव-धनुष प्रिय था (ख) उन्हें सीता स्वयंवर में आमंत्रित नहीं किया गया था (ग) वे क्षत्रिय कुल के विद्रोही थे (घ) परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे	1
(II)	'भृगुकुलकेतू' किसे कहा गया है? (क) लक्ष्मण को (ख) राजा जनक को (ग) परशुराम को (घ) विश्वामित्र को	1
(III)	उपरोक्त पद्यांश में सेवक की क्या विशेषताएं बताई गई हैं?	1
	(क) जो स्वामी की हर बात मानता है	
	(ख) जो स्वामी का सारा काम करता है	
	(ग) जो सेवा का कार्य करता है	
	(घ) जो स्वामी के साथ-साथ चलता है	

(IV)	प्रस्तुत पद्यांश से राजा शब्द का पर्यायवाची चुनकर लिखिए-	1
	(क) रिपु (ख) नृप (ग) अरिकरनी (घ) गोसाईं	
(V)	शिव धनुष तोड़ने वाले की तुलना परशुराम ने अपने किस शत्रु से की है?	1
	(क) भीष्म (ख) कर्ण (ग) सहस्त्रबाहु (घ) दुर्योधन	
प्रश्न 10	पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए:	2X3= 6
(I)	'आत्मकथ्य' कविता के आधार पर कवि के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार लिखिए।	2
(II)	कवि ने क्रांति के सूचक के रूप में बादल को ही क्यों चुना होगा? तर्क सहित उत्तर लिखिए।	2
(III)	'फसल' कविता किस प्रकार हमें प्रकृति और कृषि संस्कृति के निकट लेकर जाती है ?स्पष्ट कीजिए।	2
(IV)	संगतकार की आवाज में झलकने वाली हिचकिचाहट उसके बारे में क्या प्रदर्शित करती है?	2
प्रश्न 11	पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए -	4X2= 8
(I)	यात्राएं मनुष्य के जीवन में उत्साह, ऊर्जा और आनंद का संचार करती हैं"- 'साना -साना हाथ जोड़ी' पाठ के आधार पर इस कथन के पक्ष या विपक्ष में अपना मत दीजिए।	4
(II)	लेखक के पिता का बच्चों के खेल में शामिल होना क्या दर्शाता है? क्या आपके पिता भी आपके खेलों में शामिल होते हैं ?अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।	4
(III)	हिरोशिमा जाकर, पत्थर पर मानव छाया देखकर लेखक को एक थप्पड़ सा लगा क्यों? यदि लेखक की जगह आप होते तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होती ?अपने शब्दों में लिखिए।	4
प्रश्न12	निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर 120 शब्दों मेंएक अनुच्छेद लिखिए :	6X1=6
(I)	जल संरक्षण	6
	भूमिका,जल प्राणियों के जीवन का आधार, घटता भू-जल स्तर,संरक्षण की आवश्यकता क्यों? ,सुझाव	
(II)	पुस्तकें पढ़ने की आदत	6
	भूमिका,पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र,पढ़ने की घटती प्रवृत्ति के कारण, पढ़ने की आदत से लाभ	
(III)	जहां सुमति तहं सम्पत्ति नाना	6
	भूमिका,सत्संगति के आवश्यकता,कुसंगति का प्रभाव,सत्संगति के लाभ	
प्रश्न13	चुनाव के दिनों में राजनीतिक कार्यकर्ता घरों, विद्यालयों, मार्गदर्शक चित्रों आदि पर पोस्टर लगा देते हैं ।इससे लोगों को होने वाली असुविधा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र के संपादक को 100 शब्दों में पत्र लिखिए।	5X1= 5
	अथवा	
(i)	'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में भाग लेने हेतु अपने मित्र को 100 शब्दों में एक पत्र लिखिए।	
प्रश्न14	आप रूपेश भंडारी /रूपाली भंडारी हैं। आप एमकॉम कर चुके हैं। आपको भारतीय स्टेट बैंक में प्रोबेशनरी अधिकारी के पद हेतु आवेदन करना है। इसके लिए आप अपना एक संक्षिप्त स्ववृत (बायोडाटा) लगभग 80 शब्दों में तैयार कीजिए।	5X1= 5
	अथवा	
	आप मानव / मनस्वी हैं। विद्युत विभाग द्वारा आपके विद्युत के बिल में अत्यधिक चार्ज लगाया गया है। ई-मेल द्वारा विद्युत विभाग को इस संबंध में लगभग 80 शब्दों में ई-मेल	

	लिखिए।	
प्रश्न15	सोलर पैनल बनाने वाली कंपनी 'दिवाकर' के लिए लगभग 40 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।	4X1=4
	अथवा	
	आप श्लोक/ श्लोका हैं। आपका मित्र उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु विदेश जा रहा है। इस अवसर पर उसे लगभग 40 शब्दों में शुभकामना एवं बधाई संदेश लिखिए।	

उत्तरमाला -आदर्श प्रश्न पत्र 1 (2024-25)

कक्षा-10

निर्धारित समय :3 घंटे **विषय -हिंदी पाठ्यक्रम -'अ' (002)** **पूर्णांक - 80**

प्रश्न संख्या		अंक विभाजन
	खंड-क (अपठित बोध)	7
प्रश्न 1	अपठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न	
(I)	(ग) मन को उत्साहहीन ,निराश और उदास बनाए रखना	1
(II)	(घ) दृग	1
(III)	(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है	1
(IV)	नीची दृष्टि का लाभ यह है किइससे मनुष्य सदा सही रास्ते पर चलता रहता है ।	2
(V)	जिसका लक्ष्य जितना ऊँचा होता है,उसका तीर उतना ही ऊपर जाता है ।लक्ष्य ऊँचा रखने से ऊपर बढ़ने के अवसर प्राप्त होते हैं।	2
प्रश्न 2	अपठित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न	7
(I)	(घ) उपरोक्त सभी	1
(II)	(ग) अनुप्रास अलंकार	1
(III)	(क) केवल 1 सही है	1
(IV)	क्योंकि पहाड़ की ऊँचाई के सामने सभी प्राकृतिक उपादान छोटे प्रतीत होते हैं।	2
(V)	क्योंकि वहां केवल बर्फ ही बर्फ होती है । बर्फ के कारण वहां पेड़ -पौधे ,घास आदि नहीं उग पाते अर्थात बर्फ के कारण वहां किसी भी प्रकार का जीवन संभव नहीं है ।	2
	खंड - ख (व्यावहारिक व्याकरण)	
प्रश्न 3	रचना के आधार पर वाक्य भेद पर आधारित पांच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए -	1X4
(I)	शीलाने जो पुस्तक मांगी वह उसे मिल गई।	1
(II)	विशेषण उपवाक्य	1
(III)	तो	1
(IV)	मिश्र वाक्य	1
(V)	संज्ञा उपवाक्य	1

प्रश्न 4	वाच्य पर आधारित पांच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-	1X4
(I)	अकर्मक क्रिया	1
(II)	कर्तृ वाच्य	1
(III)	सारे संसार द्वारा निस्तब्धता में सोया जा रहा है।	1
(IV)	तुम्हारे द्वारा फूल तोडा जायेगा ।	1
(V)	भाव वाच्य	1
प्रश्न 5	निम्नलिखित रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए-	1X4
(I)	मुंदगईं- सकर्मक क्रिया ,बहुवचन,भूतकाल,कर्म वाच्य	1
(II)	पवित्र- गुणवाचक विशेषण,पुल्लिंग ,एकवचन ,'ज्योति' विशेष्य का विशेषण	1
(III)	नेताजी- जातिवाचक संज्ञा ,पुल्लिंग ,एकवचन ,संबंध कारक	1
(IV)	मैं- पुरुषवाचक सर्वनाम (उत्तम पुरुष),एकवचन ,पुल्लिंग ,कर्ता कारक	1
(V)	विशेषण के भेद,अवस्था,लिंग,वचन और विशेष्य	1
प्रश्न 6	अलंकार पर आधारित पांच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-	1X4
(I)	उत्प्रेक्षा अलंकार	1
(II)	मानवीकरण अलंकार	1
(III)	हनुमान की पूंछ में, लगन न पाई आग लंका सिगरी जल गई, गए निशाचर भाग (अन्य कोई उपयुक्त उदाहरण भी मान्य होगा)	
(IV)	श्लेष अलंकार	1
(V)	अतिश्योक्ति अलंकार	1
	खंड ग (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)	
प्रश्न 7	पठितगद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए -	1X5
(I)	(ग) सभी धर्मों और संप्रदायों का मिलजुल कर रहना	1
(Ii)	(ग) बिस्मिल्ला ख़ां को	1
(III)	(ख) हिंदू और मुसलमान	1
(Iv)	(ग) जंगल	1
(V)	(घ) काशी से संगीत ,साहित्य और अदब की बहुत सारी परंपराओं का लुप्त होना	1
प्रश्न 8	गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए:	2X3=6
(I)	लेखिका के लिए उनकी मां उनका आदर्श नहीं बन सकी क्योंकि लेखिका अपनी माँ को असहाय और मजबूरी का प्रतीक मानती थी ।लेखिका की दृष्टि में ऐसा त्याग नारी के कमज़ोर व्यक्तित्व का परिचायक है।	2
(II)	बालगोबिन भगत कबीर के अनुयायी थे। उनका मानना था की आत्मा - परमात्मा से जा मिली है ,इसलिए दुःख नहीं उत्सव मनाना चाहिए।	2
(III)	माँ का अपने बीमार बच्चे को रात भर गोद में लिए बैठना,कार्लमार्क्स का मजदूरों के प्रति निस्वार्थ प्रेम भाव,लेनिन का स्वयं भूखा रहकर दूसरों को खिलाना,और सिद्धार्थ द्वारा लोक कल्याण हेतु गृह त्याग जैसे तत्व भी मानव संस्कृति के माता- पिता हैं ।	2

(IV)	हालदार साहब एक सहृदय, संवेदनशील और देश-प्रेमी व्यक्ति हैं क्यूंकि नेताजी की अधूरी मूर्ति देख वे दुखी होते हैं,कैप्टन की मृत्यु उन्हें द्रवित कर देती है ,किसी देशप्रेमी का उपहास करना उन्हें अच्छा नहीं लगता।	2
प्रश्न 9	पठितपद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए -	1X5
(I)	(क) परशुराम शिव-भक्त थे और उन्हें शिव-धनुष प्रिय था।	1
(II)	(ग)परशुराम को	1
(III)	(क)जो सेवा का कार्य करता है।	1
(IV)	(ख) नृप	1
(V)	(ग) सहस्त्रबाहु	1
प्रश्न 10	पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए:	2X3=6
(I)	कवि भावुक, निष्कपट और सरल व्यक्ति हैं जो न तो अपने जीवन के निजी पलों को उजागर कर हंसी का पात्र बननाचाहते हैं और न ही दूसरों के के छल -कपट आचरण को उजागर कर उन्हें निंदा का पात्र बनाना चाहते हैं ।	2
(II)	कवि को बादल की गर्जना क्रांति के आहवान के समान लगती है ।बादल क्रांति को संभव करने वाला और लोगों को बरसकर नवजीवन देने वाला भी है। बदल की गर्जना प्राणियों के अंदर एक विशेष उत्साह का संचार करती है।	2
(III)	कवि ने कविता में फसल को किसान की अथक मेहनत,नदियों के जल ,हवा ,सूर्य की रोशनी और मिट्टी के गुण धर्म का परिणाम बताया है।आज की उपभोक्तावादी जीवन शैली के दौर में यह कविता किसानों की मेहनत की महत्ता व प्रकृति की सहयोगिता को सामने लाने के कारण ही ये हमें कृषि -संस्कृति और प्रकृति के निकट ले जाती है ।	2
(IV)	प्रतिभावान होते हुए भी संगतकार खुल कर नहीं गाता ,मुख्य गायक का सम्मान करते हुए वह ऐसा करता है। वह हर हाल में मुख्य गायक का सहयोग करना ही अपना कर्तव्य समझता है ।संगतकार का दबा स्वर ,उसकी हिचकिचाहट उसकी मानवता का प्रतीक है ।	2
प्रश्न 11	पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए -	4X2=8
(I)	वर्तमान समय में शहरी जीवन की भाग-दौड़ और मनुष्य का अपनी भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए निरंतर प्रयास करने की प्रक्रिया ने उसे एकाकी बना दिया है। आज उसका जीवन केवल स्वयं एवं अपने परिवार तक ही सिमट गया है। ऐसी नीरस होती जीवन शैली से मुक्ति दिलाने में यात्राएँ बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पाठ में लेखिका का प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत होकर अर्थात् हिमालय पर गिरी बर्फ, सतत प्रवाहमान झरनेइत्यादि प्राकृतिक सौंदर्य से आसक्त होकर यह सोचना कि 'जीवन का आनंद यही चलायमान सौंदर्य है, यह स्पष्ट करता है कि यात्राएँ मनुष्य के जीवन में उत्साह,ऊर्जा और आनंद का संचार करती हैं।	4

(II)	लेखक अपने मित्रों के साथ अपनी रुचि और अपने ग्रामीण परिवेश के अनुसार खेल खेला करता था। वे कभी हलवाई का खेल खेलते, तो कभी वे रसोई बनाते, तो कभी खेत-खलिहान में खेती करने का। लेखक के पिता अपने बेटे को बहुत प्यार करते थे। उसकी एक-एक गतिविधि को वे बड़े गौर से देखा करते थे। कुछ देर तक वे बच्चों के संग खेलते, उनके खेल की सराहना करते, बच्चों की प्रशंसा करते और इस तरह अपना भी मनोरंजन करते थे। वास्तव में, बच्चों के खेल में हिस्सेदारी करके वे उनका मनोबल बढ़ाते, उनका आत्मविश्वास बढ़ाते तथा उनके मनोरंजन को और बढ़ाने की कोशिश करते थे।	4
(III)	पत्थर पर मानव छाया देखकर लेखक को एक थप्पड़-सा इसलिए लगा, क्योंकि उस मानव आकृति को देखकर उसके समक्ष द्वितीय विश्वयुद्ध की वह घटना जीवंत हो गई थी, जब हिरोशिमा व नागासाकी में परमाणु बम विस्फोट हुआ था। उस समय लेखक उस घटना का भोक्ता बन गया था ,साथ ही लेखक को मनुष्य द्वारा विज्ञान का दुरपयोग करने के कारण आत्मग्लानि का-सा भाव महसूस हो रहा था। क्योंकि जिस विज्ञान का उपयोग मनुष्य की प्रगति एवं विकास के लिए किया जाना चाहिए उसी का प्रयोग मानवीयता के विरोधी रूप में किया जा रहा था ।	4
प्रश्न 12	किसी एक विषय पर संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों मेंएक अनुच्छेद लिखिए :	6x1= 6
	विषयवस्तु - 3 अंक भाषा - 1 अंक प्रस्तुति - 2 अंक	
प्रश्न 13	किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए।	5x1 =5
	आरम्भ व अंत की औपचारिकतायें -1 अंक विषयवस्तु -2 अंक भाषा - 1 अंक प्रस्तुति - 1 अंक	
प्रश्न 14	किसी एक विषय पर लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त /ई -मेल लिखिए:	5
	आरम्भ व अंत की औपचारिकतायें -1 अंक विषयवस्तु -2 अंक भाषा - 1 अंक प्रस्तुति - 1 अंक	
प्रश्न 15	किसी एक विषय पर लगभग 40शब्दों में विज्ञापन अथवा सन्देश लेखन	4X1=4
	विषयवस्तु - 2 अंक भाषा - 1 अंक प्रस्तुति - 1 अंक	4

<u>आदर्श प्रश्न पत्र 2 (2024-25)</u>

कक्षा-10

निर्धारित समय- 3घंटे **विषय- हिंदी पाठ्यक्रम- 'अ' (कोड 002)** **पूर्णांक - 80**

सामान्यनिर्देश:-

1. इस प्रश्न पत्र में दो खंड है -खंड 'अ 'और खंड' ब '।खंड अ में वस्तुपरक / बहुविकल्पी और खंड ब में वस्तुनिष्ठ / वर्णनात्मक प्रश्न दिए गएहैं।
2. प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या 17 है और दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्यहै।
3. यथा संभव सभी प्रश्नों का उत्तर क्रमानुसार लिखिए।
4. खंड अ में कुल 10 प्रश्न है जिनमें उप प्रश्नों की संख्या 44 है।दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए 40 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
5. खंड ब में कुल 7 प्रश्न है , सभी प्रश्नों के साथ उनके आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं।निर्देशानुसार विकल्प का ध्यान रखते हुए सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड - अ (बहुविकल्पीय /वस्तुपरक प्रश्न)

प्र.1) गद्याश को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तरदीजिए :(1*3=3,2*2=4)

"सफलता चाहने वाले मनुष्य का प्रथम कर्तव्य यह देखना है कि उसकी रुचि किन कार्यों की ओर अधिक है।यह बात गलत है कि हर कोई मनुष्य हर एक काम कर सकता है।लॉर्ड वेस्टर फील्ड स्वाभाविक प्रवृत्तियों के काम को अनावश्यक समझते थे और केवल परिश्रम को सफलता का आधार मानते थे।इसी सिद्धान्त के अनुसार उन्होंने अपने बेटे स्टेनहाप को, जो सुस्त, ढीला ढाला, असावधान था।उसे सत्पुरुष बनाने का प्रयास किया।वर्षों परिश्रम करने के बाद भी लड़का ज्यों का त्यों रहा और जीवन - भर योग्य न बन सका।स्वाभाविक प्रवृत्तियों को जानना कठिन भी नहीं है, बचपन के कामों को देखकर बताया जा सकता है कि बच्चा किस प्रकार का मनुष्य होगा।प्रायःयह संभावना प्रबल होती है कि छोटी आयु में कविता करने वाला कवि, सेना बनाकर चलने वाला सेनापति, भुट्टे चुराने वाला चोर - डाकू, पुरजे कसने वाला मैकेनिक और विज्ञान में रुचि रखने वाला वैज्ञानिक बनेगा।जब यह विदित हो जाए कि लड़के की रुचि किस काम की ओर है तब यह करना चाहिए कि उसे उसी विषय में ऊँची शिक्षा दिलाई जाए।ऊँची शिक्षा प्राप्त करके मनुष्य अपने काम - धन्धे में कम परिश्रम से अधिक सफल हो सकता है, जिनके काम- धन्धे का पूर्ण प्रतिबिम्ब बचपन में नहीं दिखता, वे अपवाद ही है।प्रत्येक मनुष्य में एक विशेष कार्य को अच्छी प्रकार करने की शक्ति होती है।वह बड़ी दृढ़ और उत्कृष्ट होती है।वह देर तक नहीं छिपती।उसी के अनुकूल व्यवसाय चुनने से ही सफलता मिलती है।जीवन में यदि आपने सही कार्य क्षेत्र चुन लिया तो समझ लीजिए कि बहुत बड़ा काम कर लिया।

क) लॉर्डवेस्टर फील्ड का क्या सिद्धान्त था? 1

अ) इनमें से कोई नहीं

ब) परिश्रम न करना

स) बचपन की रुचियों की तरफ ध्यान न देना

द) स्वाभाविक प्रवृत्तियों की अपेक्षा परिश्रम को ही सफलता

ख) इसे उसने सर्वप्रथम किस पर आजमाया? 1

अ) इनमें से कोई नहीं
स) अपने मित्रों पर
ब) अपने बेटे स्टेनहाप पर
द) विद्यार्थियों पर

ग) बालक आगे चलकर कैसा मनुष्य बनेगा, इसका अनुमान कैसे लगाया जा सकता है? 2

घ) सही कार्य क्षेत्र चुनने के क्या लाभ हैं? **2**

ड.) उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

अ) सफलता का मूलमंत्र
स) प्रवृत्ति और परिश्रम
ब) दिशाहीन परिश्रम
द) बचपन की प्रवृत्तियां

प्रश्न 2- नीचे दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(1*3=3,2*2=4)

कोयल सुना रही है तराने वसंत को,
भँवरे भी आ गए हैं रिझाने वसंत को।
बुलबुल चमन में देखकर तुरंत आ गया,
वसंत आ गया अहा! वसंत आ गया।
सोलह सिंगार करके खड़ी है वधू - धरा,
लेकर सुरंग हार खड़ी है वसुंधरा।
सौंदर्य गर्विता वधू का कंत आ गया।
ज्यों भूमि जा के पास उनके राम आ गए
वृष भानुजा के पास ज्यों कि श्याम आ गए
शकुंतला के पास ज्यों दुष्यंत आ गया,
वसंत आ गया अहा! वसंत आ गया।।
सर - सर हवा पुकारती वसंत आ गया,
तितली उतारे आरती वसंत आ गया।
सरसों के सर सिहर उठे वसंत आ गया,
चिड़ियों के घर सँवर उठे वसंत आ गया।
नदियों ने छलछला कहा, वसंत आ गया।
झरनों ने गीत गा कहा, वसंत आ गया।
गुलशन में देख - देख गुल अनंत आ गया
वसंत आ गया अहा! वसंत आ गया।

क) बसंत को रिझाने के लिए कौन आ गया है? 1

अ) भँवरे
स) बुलबुल
ब) कोयल
द)चिड़ियाँ

ख) प्रस्तुत काव्यांश का केंद्रीय भाव क्या है? 1

अ) बसंत का चित्रण
स) बसंत के आने पर प्रकृति का मोहक चित्रण
ब) प्रकृति का चित्रण
द) इतिहास का चित्रण

ग) बसंत के आगमन पर कौन उल्लासित हो रहा है? **1**

अ) वनस्पति
स) पशु - पक्षी
ब) मानव
द)सभी

घ) गुलशन में देख - देख गुल अनंत आ गया पंक्ति से क्या तात्पर्य है? 2

ड.) तितली बसंत का स्वागत कैसे कर रही है?

प्रश्न 3.रचना के आधार पर वाक्य भेद पर आधारित किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए (1x4=4)

क) रोहन गाना गाता है रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए

ख)मैं भाई साहब की सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। - रचना की दृष्टि से कौन सा वाक्य है:

ग)वह अपनी पारंपरिक पोशाक के साथ कमर में सदैव एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता था।इस वाक्य को मिश्र वाक्य में रूपांतरित करिए ?

घ) उसने कहा।वह कल जयपुर जाएगा। - वाक्य का उचित मिश्र वाक्य क्या होगा -

ड.)स्तंभ I और स्तंभ II को सुमेलित करके सही उत्तर लिखिए -

	स्तंभ I		स्तंभ II
I	सरल वाक्य	अ	जो कमाएगा वही खाएगा ।
II	मिश्र वाक्य	ब	वह कमाएगा और खाएगा
III	सयुक्त वाक्य	स	कमाने वाला ही खाएगा

प्रश्न 4. 'वाच्य' पर आधारित किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । (1x4=4)

क) महात्मा गाँधी द्वारा राष्ट्र को अहिंसा और शांति का सन्देश दिया गया ।वाक्य में कौन सा वाच्य

ख) अब पढ़े ? वाक्य का भाववाच्य में रूपांतरण करिए -

ग) अमन पढ़ नहीं सकता'-इसे भाववाच्य में बदलिए

घ) अब तो चला जाए - वाक्य के लिए उचित कर्तृवाच्य लिखिए |

ड.) भाववाच्य में कौन सी क्रिया सदैव रहती है?

प्रश्न 5. 'पद - परिचय' पर आधारित किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । (1x4=4)

क) समझदार लड़के नहीं लड़ते।इस वाक्य में **लड़के** का पद परिचय दीजिए।

ख) मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।वाक्य में रेखांकित पद का पद - परिचय लिखिए

ग)गाय फल खा रही है।इस वाक्य के **गाय** का पद परिचय दीजिए।

घ) मधुर गाने तो **सदा ही** सुनने को मिलते। रेखांकित पद का परिचय लिखिए-

ड.) वह खिड़की से **ऊपर की ओर** देख रही थी। - रेखांकित अंश का पद-परिचय लिखिए |

प्रश्न 6. 'अलंकार' पर आधारित किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । (1x4=4)

क) देख लो साकेत नगरी है यही।स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।-इसमें कौन -सा अलंकार है?

ख)"मेघमय आसमान से उतर रही है, वह संध्या-सुंदरी परी सी, धीरे-धीरे।"पंक्ति में कौन -सा अलंकारहै?

ग) निम्नलिखित पंक्ति में अलंकार बताइए -

जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगे, बढ़े अँधेरो होय॥

घ) सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलौने गात मनो नीलमणि सैल पर आतप परयों प्रभात।।---इस दोहे में प्रयुक्त अलंकार कौन सा है -

ड) धनुष उठाया ज्यों ही उसने और चढ़ाया उस पर बाण,धरा - सिंधु नभ काँपे सहसा, विकल हुए जीवों के प्राण - प्रस्तुत पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार लिखिए |

प्रश्न7 पठित गद्यांश परआधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए। 5

नमक - मिर्च छिड़क दिए जाने से खीरे की पनियाती फाँकें देखकर मुँह में पानी जरूर आ रहा था, लेकिन इंकार कर चुके थे।आत्म -सम्मान निभाना ही उचित समझा।उत्तर दिया, शुक्रिया, इस वक्त तलब महसूस नहीं हो रही है, मेदा भी जरा कमजोर है, किबला शौक फरमाएँ।नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक - मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा।खिड़की के बाहर देखकर दीर्घ निःश्वास लिया।खीरे की एक फाँक उठाकर होठों तक ले गये।फाँक को सूँघा।स्वाद के आनन्द में पलकें मूँद गई।मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया।तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया।नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर, वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए।

क) नवाब साहब ने खीरे का रसास्वादन कैसे किया?

अ) लेखक को खिलाकर　　स) खाकर
ब) सूँघकर　　द) उपर्युक्त सभी

ख) लेखक ने नवाब साहब को खीरे के लिए ना क्यों कहा?

अ) मेदा कमजोर होने के कारण　　स) आत्म सम्मान बचाने के लिए
ब) मनाही के कारण　　द) उन्हें खीरा पसंद नहीं था

ग) नवाब साहब की पलकें क्यूँ मूँद गईं?

अ) खीरे की सुगंध से　　स) मुँह में पानी आने से
ब) खीरे की चमक से　　द) स्वाद के आनंद में

घ) तलब शब्द का क्या अर्थ है?

अ) पानी　　स) जरूरत
ब) सुगंध　　द) संयम

ड) लेखक के मुँह में पानी क्यों आ रहा था?

अ) खीरे को देखकर　　स) नवाब साहब को देखकर
ब) भूख के कारण　　द) उन्हें बीमारी थी

प्रश्न8 पठित पद्यांश परआधारित प्रश्नों के उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए। (1x5=5)

बिहँसि लखनु बोले मृदु बानी।अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि -पुनि मोहि देखाव कुठारु।चहत उड़ावन फैंक पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतियाँ कोउ नाहीं।जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
देखि कुठारु सरासन बाना।मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी।जो कुछ कहहु सह रिस रोकी।।

सुर महिसुर हरिजन अरुगाई।हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।।
बधे पापु अपकीरति हारे।मार तहू पाप रिअ तुम्हारे।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।व्यर्थ धरहु धनु बानकुठारा।।

क) कुम्हड़ बतिया का प्रयोग किसने किया है?

अ) राम ने
स) परशुराम ने
ब) लक्ष्मण ने
द) कौशिक ने

ख) लक्ष्मण के हँसने का क्या कारण है?

अ) परशुराम की गर्वभरी बात सुनकर
स) धनुष टूटने से
ब) बिना किसी कारण के
द) परशुराम को देखकर

ग) लक्ष्मण ने किन -किन पर वार करने से मना किया था?

अ) देवता,ब्राहमण,भक्त और शेर
स) देवता,ब्राहमण, भक्त और बकरी
ब) देवता,ब्राहमण, भक्त और गाय
द) देवता,क्षत्रिय, भक्त और गाय

घ) लक्ष्मण परशुराम पर वार क्यों नहीं कर रहे हैं?

अ) क्रोधित होने के कारण
स) ब्राहमण होने के कारण
ब) शक्तिशाली होने के कारण
द) अस्त्र - शस्त्र होने के कारण

ड.) बार-बार कौन किसको क्या दिखा रहा था ?

अ) परशुराम लक्ष्मण को फरसा दिखा रहे थे
ब) लक्ष्मण परशुराम को धनुष दिखा रहे थे
स) राम परशुराम को तलवार दिखा रहे थे
द) उपर्युक्त कोई भी नहीं

खंड 'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न) 40

प्रश्न 9. गद्य पाठों के आधार पर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए।(2x3=6)

क) नेताजी का चश्मा' पाठ में वर्णित कैप्टन के चरित्र पर प्रकाश डालिए तथा बताइए कि उसके व्यक्तित्व की किस विशेषता ने आपको प्रभावित किया है?

ख) एक कहानी यह भी की लेखिका मन्नू भंडारी के पिता ने रसोई को भटियार खाना कहकर क्यों संबोधित किया है? यह उनकी किस सोच का परिचायक है?

ग) एक संगीतज्ञ के रूप में खाँ साहब का जीवन हमें विद्यार्थी जीवन के लिए किन मूल्यों की शिक्षा देता है ?

घ) संस्कृति पाठ के अनुसार लेखक ने किस संस्कृति को संस्कृति नहीं माना है और क्यों?

प्रश्न10. कविताओं के आधार पर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए। (2x3=6)

क) गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान (बड़भागी) कहने के पीछे क्या व्यंग्य निहित है?

ख) आत्मकथ्य कविता अनुसार कवि की विडंबना क्या है, जिसे स्पष्ट करने में वह संकोच करतारहा है?

ग) फसल को हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

घ) भटके स्वर को संगतकार कब सँभालता है और मुख्य गायक पर इसका क्या प्रभाव पड़ताहै?

प्रश्न 11 पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित किन्हीं दो के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए (4x2=8)

क) बच्चे रोना -धोना छोड़ ,आपसी झगड़े ज्यादा देर तक अपने साथ नहीं रख सकते हैं । 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट करें ।

ख) साना - साना हाथ जोड़ि पाठ में कहा गया है कि कटाओ पर किसी दुकान का न होना वरदान है,ऐसा क्यों? भारत के अन्य प्राकृतिक संस्थानों को वरदान बनाने में नवयुवकों की क्या भूमिका हो सकती है ? स्पष्ट कीजिए ।

ग) मैं क्यों लिखता हूँ? निबंध के आधार पर लिखिए कि वैचारिक मतभेदों को भुलाकर दो समुदायों में एक-दूसरे के प्रति आदर की भावना कैसे बढ़ाई जा सकती है ?

प्रश्न12 दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर किसी एक विषय पर 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए। (6x1=6)

क) वृक्षारोपण का महत्त्व

- वृक्षारोपण का अर्थ
- वृक्षारोपण क्यों
- हमारा दायित्व

ख) अपनी मातृभाषा

- मातृभाषा का अर्थ
- मातृभाषा की विशेषताएँ
- मातृभाषा का महत्त्व

ग) जीवन संघर्ष का दूसरा नाम

- जीवन और संघर्ष क्या है
- संघर्ष : सफलता का मूल मंत्र
- असफलता से उत्पन्न निराशा और उत्कट जिजीविषा
- जीवन का मूल मंत्र

प्रश्न 13 यातायात के नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करने तथा दो अन्य सुझाव देते हुए यातायात पुलिस आयुक्त को पत्र लिखिए। **(5x1=5)**

अथवा

आपका नाम मुदित/मुदिता है।प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रवेश हेतु प्रदेश सरकार द्वारा आर्थिक दृष्टि से कमजोर, प्रतिभाशाली छात्रों के लिए निःशुल्क शिक्षण की जो व्यवस्था की गई है, उसकी सराहना करते हुए किसी दैनिक हिन्दी समाचार - पत्र के संपादक को लगभग **100** शब्दों में एक पत्र लिखिए।

प्रश्न 14 दिल्ली नगर निगम सिविल लाइंस क्षेत्र, दिल्ली के आयुक्त को प्राथमिक अध्यापकों की आवश्यकता है।इस पद के लिए स्ववृत सहित आवेदन - पत्र लिखिए।आप विपिन कुमार सी 2/72 ,राजीव इंक्लेव, सेक्टर - 15, रोहिणी, दिल्ली के निवासी हैं। **(5x1=5)**

अथवा

अपने क्षेत्र में जल - भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए स्वास्थ्य -अधिकारी कोhealthofficer@mcdonline.gov.in पर एक ई-मेल लिखिए।

प्रश्न 15 . कोई कंपनी **लेखनी** नाम का नया पेन बाज़ार में लाना चाहती है।उसके लिए लगभग 25 - 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। **(4x1=4)**

अथवा

अपनी कक्षा के प्रतिनिधि के रूप में सभी सहपाठियों को आगामी बोर्ड की परीक्षा के लिए शुभकामना संदेश लगभग 40 शब्दों में दीजिए। ।*****

<u>आदर्श प्रश्न पत्र 2 (2024-25)</u>

<u>उत्तर कुंजी</u> (कोड 002)

कक्षा-10

निर्धारित समय- 3घंटे **विषय- हिंदी पाठ्यक्रम- 'अ'** **पूर्णांक - 80**

प्रश्न 1. **अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर** (1*3=3) (2*2=4)

क) द. स्वाभाविक प्रवृत्तियों की अपेक्षा परिश्रम को ही सफलता

ख) ब .स्टेनहाप पर अपने बेटे

ग) बचपन में ही उसकी रुचि एवं कार्यों को देखकर

घ) मनुष्य कम परिश्रम से कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है

ड.) स . प्रवृत्ति और परिश्रम

प्रश्न 2 अपठित **पद्यांश** पर आधारित प्रश्नों के उत्तर (1*3=3) (2*2=4)

क . भँवरे

ख . बसंत के आने पर प्रकृति का मोहक चित्रण

ग . सभी

घ . अनगिनत फूल बसंत को देखने के साथ-साथ एक दूसरे को देख-देख कर भी खिल उठे हैं |

ङ . आरती उतारकर

प्रश्न 3. रचना के आधार पर वाक्य भेद पर पांच प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर । (1x4=4)

क वाक्य सरल

ख सरल वाक्य

ग यद्यपि वह अपनी पारंपरिक पोशाक में रहता था फिर भी कमर में लकड़ी की एक तलवार हमेशा बाँधे रहता था।

घ उसने कहा कि वह कल जयपुर जाएगा।

ड. स (i),ब(iii),अ (ii)

प्रश्न 4. वाच्य पर आधारित प्रश्नों के उत्तर (1x4=4)

क . कर्मवाच्य

ख . पढ़ा जाए अब?

ग . अमन से नहीं पढ़ा जाता

घ . अब तो चले।

ङ . अकर्मक क्रिया

प्रश्न 5 .'पद परिचय पर आधारित प्रश्नों के उत्तर 1x4=4

क . जातिवाचक संज्ञा,पुल्लिंग,बहुवचन ,कर्ताकारक,लड़के क्रिया का कर्ता

ख .सर्वनाम,उत्तमपुरुष पुल्लिंग ,एकवचन

ग .जातिवाचक संज्ञा,एकवचन, स्त्रीलिंग,कर्ता कारक,खा रही है क्रिया का कर्ता

घ .क्रियाविशेषण,कालवाचक,मिलते क्रिया का विशेषण

ङ .स्थानवाचक क्रिया-विशेषण ,विशेष्य क्रिया-देखना

प्रश्न 6. अलंकार पर आधारित प्रश्नों के उत्तर 1x4=4

क . अतिश्योक्ति अलंकार

ख . मानवीकरण अलंकार

ग . श्लेष अलंकार

घ . उत्प्रेक्षा अलंकार

ङ . अतिश्योक्ति अलंकार

प्रश्न 7. पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प अपेक्षित | (1x5=5)

क . सूंघकर

ख . आत्मसम्मान बचने के लिए

ग . स्वाद के आनंद में

घ . जरुरत

ङ . खीरे को देखकर

प्रश्न 8. पठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प अपेक्षित | (1x5=5)

क . लक्ष्मण ने

ख . परशुराम की गर्व भरी बात सुनकर |

ग . देवता, भक्त,गाय और ब्राह्मण

घ . ब्राह्मण होने के कारण

ङ . परशुराम लक्ष्मण को फरसा दिखा रहे थे |

प्रश्न संख्या 9 से 11 परीक्षक पाठ्य पुस्तक के विषय वस्तु को ध्यान में रखकर प्रश्न का मूल्यांकन स्वविवेक से करें।

प्रश्न 12- अनुच्छेद लेखन (6)

विषय वस्तु - 4 अंक

भाषा- 1 अंक

प्रस्तुति- 1 अंक

प्रश्न 13- पत्र लेखन (5)

आरंभ और अंत की औपचारिकता- 1 अंक

विषय वस्तु - 2 अंक

भाषा - 1अंक

प्रस्तुति - 1 अंक

प्रश्न 14- स्ववृत /औपचारिक ई-मेल लेखन (5)

प्रारूप - 2अंक

विषय वस्तु- 2 अंक

भाषा - 1 अंक

प्रश्न 15 विज्ञापन /संदेश लेखन (4)

विषय वस्तु- 2 अंक

भाषा- 1 अंक

प्रस्तुति - 1 अंक

****